स्मृतिक धोखरल रंग

रामलोचन ठाकुर

Ram Lochan Thakur
Chirag Apartment, Ph-2
4, Italgacha Road,
Kolkata - 700 028

अरुणोदय प्रकाशन
कोलकाता/बाबूपाली

प्रकाशिका :
सीता ठाकुर
के. सी. - 88
साल्ट लेक, कोलकाता - 700 098

प्रथम प्रकाश : महालया, 1411
(अक्टूबर, 2004)

मूल्य : एक सए पन्द्रह टका

मुद्रक :
शान्ती ग्राफिक्स
32बी, बृन्दावन बसाक स्ट्रीट
कोलकाता - 700 005

SMRITIK DHOKHARAL RANG
By Ram Lochan Thakur

Price : Rs. 115/- Only

आखर लेख

मैथिली आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे लिखित विभिन्न समय, विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित आलेखक संकलन थिक ई पोथी । स्वाभाविक छैक, प्रसंगवश एक आलेखक विषय-बात दोसरो आलेख मे आबि जाय । कलकत्ता परिप्रेक्ष्यक रचना मे ई बात विशेष कें देखल-पाओल जा सकैछ ।

दीर्घ साधना-संघर्षक पश्चात् विगत वर्ष मैथिली के संवैधानिक स्वीकृति प्राप्त भेलैक । 22 दिसम्बर, 2003 कें लोकसभा सर्वसम्मति सं विधेयक पारित कएलक आ संविधानक शततम संशोधन द्वारा मैथिली के आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित कएल गेल । आवश्यक छल, एहि उपलक्ष मे हमरा लोकनि मैथिली आन्दोलनक विगत साधक सेनानीक श्रद्धा-स्मरण, वर्तमानक सम्मान आ भविष्यक आह्वान करी । मुदा भेल किछु विपरीते । मन पड़ैछ दुष्यन्त कुमारक पांति -

दुकानदार तो मेले मे लुट गये यारो
तमाशवीन दुकाने लगा के बैठ गये ।

मैथिली आन्दोलन मे प्रत्यक्ष सहभागिताक कारणे, मैथिलीक संवैधानिक स्वीकृतिक उपलक्ष मे प्रकाशित हमरा ई छोट-छीन पोथी, मैथिली आन्दोलनक समस्त साधक-सेनानीक नाम सम्पूर्ण श्रद्धा ओ सम्मानक संग समर्पित अछि ।

निज भू-भाषा हित मरय
मरय ने, अमर बनैत अछि
तकरे गाथा विश्व ई
गाओत, सदा गबैत अछि ।

विषय-क्रम

मैथिली आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे साहित्यकारक भूमिका

साहित्यकारक काज थिक साहित्य सिरजन केनाइ आ ई काज स्वयं मे एगो आन्दोलन थिक । जहांधरि मैथिली आन्दोलनक प्रश्न अछि, हमरा जनैत एकर शुभारंभ ओही दिन, ओही क्षण भेल जहिया मैथिली मे पहिले पहिल साहित्य लिखल गेल छल ।

मैथिली भाषा जे आधुनिक भारतीय भाषा समूहक प्राचीनतम भाषा मे सं एक अछि तकर पुष्टि त प्रायः समस्त भाषाशास्त्री क चुकल छथि । एकर प्राचीनताक प्रमाण मे किछु विद्वान वाल्मीकि रामायणक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि - **अवश्यमेव वक्तयं मानुषी वाक्यमर्थवत** ! सीता कें विश्वास दिएबाक लेल जे ओ हुनक अपन लोक छथिन, मानुषी भाषा मे गप करबाक विचार हनुमाने सन विद्वान-बुद्धिमानक भ सकैछ । एहि ठाम प्रश्न उठि सकैछ जे ई मानुषी भाषा त अवधी अर्थात् अयोध्याक सेहो भ सकैछ ? परञ्च स्मरण रखबाक थिक जे सीताक आयोध्या-निवास बड़ अल्पकालिक छल आ तें ओहिठामक भाषा सं ओ पूर्ण भिज्ञ नहिओ भ सकैत छली । दोसर, नैहर प्रत्येक महिला के प्रिय होइत छैक । कहबी छैक जे नहिराक कौओ कुकूर देखि महिलागण प्रसन्न होइत छथि । तेसर बात ई जे सासुरक लोकक समक्ष बात केनाइ त कात जाओ ठाढ़ो हेबा मे ओ लोकनि धखाइ छथि आ सीता त नव कनिञे छली । परञ्च नहिराक महिला - पुरुष, बुढ़-बच्चा सभक संग तेहन आत्मीय सम्पर्क रहैत छैक जे धाखक प्रश्ने नहि । आ तें जाइ भाषा मे हनुमान जी सीता सँ बजवाक विचार कएलनि से निर्विवाद मिथिलाक भाषा छल । थोड़े कालक लेल जं एहि बात के मानिओ लेल जाय तैयो ई नहि कहल जा सकैछ जे तत्कालीन मिथिला भाषाक स्वरूप आजुक मैथिलीसन छल आ तकर नाम मैथिलीए छल । भाषा विज्ञानक अनुसार कोनो भाषाक स्वरूप एते दिनधरि अपरिवर्तित रहिओ ने सकैछ । जहांधरि ''मैथिली'' नामक प्रश्न अछि, कहल जाइछ 1801 मे सर्वप्रथम **एच0टी0 कोलव्रुक** मिथिलाक भाषाक लेल एहि नामक प्रयोग कएलनि । स्वयं **कविपति विद्यापति** अपन भाषा के 'देसिल बयना' कहने छथि । मैथिली नामकरण भेल रहने निश्चिते ओ **'देसिल वयना'** क स्थान पर **'मैथिली'** नामक उल्लेख कएने रहितथि । ओनहुना रामायण कालीन मिथिला त एक नगर मात्र छल, देशक नाम त छल तीरभुक्ति । परंच एहि सँ एक बात त स्पष्ट अछि जे स्वयं आदिकवि सेहो लोकभाषाक — जकरा ओ मानुषी भाषा कहै छथि — महत्ता उपयोगिता के स्वीकारैत छथि ।

मैथिलीक आदि उपलब्ध ग्रंथ थिक **वुद्धगान** आ **दोहा** किंवा **चर्यापद**, जकर रचना **आठम शताव्दी** मे भेल छल । ओना भाषाचार्य **डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी** एकर रचनाकाल दशम सँ बारहम शताब्दीक बीच मानै छथि । तत्पश्चात् तेरहम शताब्दीक रचना **कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर'** पाओल जाइछ, जकरा सुनीति बाबू **'एनसाइक्लोपीडिया'** कहने छथि । वस्तुतः **कवि शेखराचार्यक** ई कृति एहि बात कें प्रमाणित करैछ जे तहिया मैथिली भाषा साहित्य पर्याप्त समृद्ध छल । **चौदहम शताव्दी** मे आविर्भूत होइत छथि समस्ताब्दीक श्रेष्ठ कवि कविपति विद्यापति आ घोषणा करैत छथि :–

बालचन्द बिज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चई नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सब जन-मिट्ठा
तें तइसन जम्पओ अवहट्ठा

विद्यापतिक ई घोषणा एहि तथ्य के प्रमाणित करैत अछि जे मिथिलाक विद्वत समाज मैथिली मे साहित्य सर्जना के सहज रूप मे नहि स्वीकारने छल । सम्पूर्ण आयावर्तक संग मिथिलो मे साहित्य-सर्जनाक सर्वमान्य भाषा संस्कृते छल । तें कविपतिक आविर्भाव ने मात्र मिथिला अपितु सम्पूर्ण उत्तर पूर्वांचलक लेल एक युगान्तकारी घटना छल । विद्यापतिक व्यक्तित्व, हुनक प्रतिभा तेहन विराट ओ विलक्षण छल जे जीवन कालहि मे हुनका प्रवाद पुरुष बना देलक । हुनक पदावलीक सदानीरा मिथिला सँ बंगालाधरि, उत्कल सँ आसामधरि कल-कल, छल-छल करैत प्रवाहित होमय लागल । ई हुनके प्रतिभाक चमत्कारक प्रभाव छल जे बंगाल सँ आसामधरिक साहित्यकार मैथिली भाषा के अपन रचनाक माध्यम बनओलनि आ पदावली परंपराक शेष कड़ी **रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'भानुसिंहेर पदावली'** एहि बातक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक । स्वभावत: **'देसिल वयना'** क शंखनाद कएनिहार **कविपति विद्यापति** निर्विवाद भाषा-चेतनाक जनक छथि, भाषा आन्दोलनक प्रथम पुरुष छथि ।

आन्दोलन शब्द ताइदिन कते आ कोन रूपें परिचित छल, नहि कहल जा सकैछ । ओना आइ कालि जे किछु शब्द सर्वाधिक परिचित आ प्रचलित अछि ताइ मे निर्विवाद एकटा आन्दोलनो अछि । सन्दन, कम्पन, झुलब, हिलब-डोलब आदि कोशगत अर्थ सं थोड़-बहुत भिन्न अन्यायक विरुद्ध स्वर मुखरित करब, अपन अधिकारक हेतु संघर्ष करब, सभा-समावेश, नारा जुलूस, तोड़-फोड़, हिंसा आदि आइ आन्दोलन नामे जानल-मानल जाइछ । स्वभावत: हम जखन मैथिली आन्दोलनक बात करैत छी त तकर अर्थ होइछ मैथिलीक सम्मान, ओकर अस्मिताक रक्षार्थ, ओकर न्यायोचित अधिकार प्राप्तिक लेल कएल गेल प्रयास । प्रश्न उठि सकैछ जे एते प्राचीन भाषा जकरा चौदहमे शताब्दी मे कविपति विद्यापति सन प्रतिभा प्राप्त भेल छलैक आ जे असगरे एहि भाषा के समस्त पूर्वांचल मे देवभाषाक स्थान पर साहित्यिक भाषाक रूप मे प्रतिष्ठापित क देलनि आइ ताही भाषाक अस्तित्व रक्षार्थ आन्दोलनक प्रयोजन किएक आ केना भेल ? स्मरण रखबाक थिक जे लोकभाषा मे लोकक आशा आकांक्षा, ओकर कथा-व्यथा लिखि विद्यापति लोकक कंठहार त बनि गेला परञ्च पंडित वर्गक प्रियपात्र कहियो नहि बनि सकला । कहबाक प्रयोजन नहि जे शिक्षाक माध्यम संस्कृते बनल रहलैक आ एकर प्रचार-प्रसार विशेष वर्ग धरि सीमित छलैक । विद्यापतिक प्रतिभा आ हुनक सम्मानक समक्ष ई वर्ग चुप्पी लधने रहल, परञ्च हुनक परोक्ष होइतहिं फेर संस्कृतक प्रभाव विस्तार पाबए लागल । ध्यान देबाक बात थिक जे विद्यापतिक पश्चात् मैथिली मे रचना कएनिहारो एहि भाषा के जनमानस सं क्रमश: दूर आ संस्कृतक लग करैत चल गेलाह । तें यद्यपि मैथिली साहित्य सरिता सुखायल त नहि परञ्च लोक सँ फराक अबस्से भ गेल आ संस्कृते

जकां वर्ग विशेषक वस्तु भ क रहि गेल । पश्चात् चलि कें मैथिलीक अस्तित्व पर जे सबस पैघ आघात लागल से अपना के मिथिलेश कहनिहार दड़िभंगाक जमिंदार दिस सं । महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह ने मात्र अपन जमींदारी सं मैथिली के वितारित कएलनि अपितु ताइ स्थानपर विजातीय भाषा हिन्दी के प्रतिष्ठापित सेहो कएलनि । **14 जुलाई 1880** के मैथिलीक स्थान पर समस्त काज हिन्दी मे करबाक आदेश देल गेलै । समस्त सरकारी अमला के हिन्दी सिखबा लेल तीन मासक समय देल गेलै । हिन्दी मे विज्ञान, कविता, उपन्यास लेखनक लेल क्रमश: 200, 150, 150 क पुरस्कारक घोषणा कएल गेल । स्मरणीय थिक जे देश मे पाश्चात्य शिक्षाक माध्यमे जे पुनर्जागरण आयल तकर आधार छल **'भर्नाकुलर स्कूल'** । परञ्च मिथिला मे महाराज एवं हुनक अमला लोकनिक कारणे नाममात्रेक स्कूल स्थापित भ सकल आ जेहो भेल ताइ मे मैथिली नहि हिन्दीएक पढ़ाइ होमय लगलैक । लोक मे प्रचार कएल गेलै जे अंग्रेज एहि स्कूलक माध्यमे अपन भाषा धर्मक प्रचार करत आ लोक के अजाति बनाओत । अंग्रेजी विदेशी इसाईक भाषा थिक तकरा मोकाबिला मे हिन्दी स्वदेशी भाषाक दलाली आ ओकालति कएल गेलै । 1871 मे तत्कालीन **लेफ्टिनेंट गर्वनर जी कैम्पबेल** लिखै छथि -

I was astonished on lately visiting Bihar to find this bastard language not only flourishing in its fullest course in official proceedings but that we are perpetuating it by teaching in our schools. I found that in all our so called vernacular schools this monstrous langauage, if it can be called a language, is being taught by moulavis instead of the vernacular.

मैथिली पर दोसर अघात छलै मैथिल महासभाक रूप मे । ओना त एहि सभाक मंच सं मैथिली मे काव्य पाठादिक आयोजन होइत छल परञ्च एकर सदस्यता केवल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ धरि सीमित रहबाक कारणें अन्य जाति मे विरूप प्रतिक्रिया भेलैक । शिक्षाक अभावक कारणे ओ लोकनि नकारात्मक आचरण करय लगलाह । मिथिला मे रहितो, मैथिली बाजितो ओलोकनि अपना के अमैथिल अमैथिली भाषी मानि लेलनि । मैथिली विरोधी आ हिन्दी हिन्दुस्तानीक समर्थक लोकनि एहि स्थितिक पूर्ण लाभ उठओलनि । कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि महासभाक कर्णधार स्वयं दड़िभंगा महाराज छलाह ।

मिथिला मे राजनैतिक चेतनाक अभाव कोनो नव बात नहि, परंच जातीय चेतना ओ भाषा चेतनाक एहन अभाव सरिपहुं अचरजक विषय । शिक्षित पंडित वर्गक लेल भाषा-भूमि नहि राजभक्तिए सर्वोपरि रहल, अन्यथा **चन्दा झा** सन व्यक्ति कतौ 'पुरुष परीक्षा' क भूमिका हिन्दी मे लिखथि । तें आश्चर्य नहि जे **'मैथिल हित साधन' (1905)** जयपुर सँ आ **'मिथिला मोद' (1906)** काशी सं बहार भेल । एकरा विडम्बना नहि त आर की कहल जाय जे **'मिथिला मोद'** देखि कवीश्वर अपन उद्‌गार एना व्यक्त करै छथि -

मिथिला मोद गोद लय बैसलि
काशी भेलि नमस्या
मुरलीधर जीवन शुभचिन्तक
पत्रक परम तपस्या

जे कोनो नियमक अपवाद होइ छइ । जे कोनो वस्तुक सीमा होइ छइ । एहि मे संदेह नहि

जे महाराज अपन मोसाहेबक सहयोगें मिथिलाक **जातीय एकता (National Untiy)** कें तोड़बा मे तथा मातृभाषा मैथिलीक विकासक बाट रोकि मिथिलांगन धरि हिन्दी के अरियाति अनबा मे सफल भेलाह, परंच समस्त मिथिलावासी जे एहि घृणित कार्य सं सहमत छल, किंवा समस्त शिक्षित बुद्धिजीवी सहमत छल से नहि कहल जा सकैछ । बहुतोक मन मे मातृभाषाक प्रति प्रेम आ विजातीय भाषाक प्रति आक्रोश अंकुरित भ रहल छलैक । दोसर दिस हिन्दी कें राष्ट्रभाषाक आसन पर आसीन करबाक परिकल्पना मे ओकर दलाल एवं राजनेता लोकनिक अशुभ संधि एहि उफांटू भाषा के जमीन सँ जोड़बाक आ क्षेत्र बढ़ेबाक प्रयास मे दिन-राति लागल छल । हिन्दीक पोसा सबहक दुष्टता आ धृष्टता एतेधरि बढ़ि गेलैक जे ओ लोकनि मैथिलीक विरुद्ध जतय ततय विषवमन करय लागल । स्वाधीनताक पश्चात् बिहार कें हिन्दी भाषी राज्य घोषित क देल गेल । सर्वाधिक विस्फोटक कार्य भलैक 1951 क जनगणना रिपोर्ट जाइ मे मैथिलीभाषीक संख्या मात्र 97,685 देखाओल गेल छल । स्मरणीय जे 1931 क जनगणना मे मैथिलीभाषीक संख्या 1,42,75,000 छल । एहिठाम उल्लेखनीय जे 1939 मे शिक्षा-निर्माण कमिटी, जाइ मे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद आ डॉ0 अमरनाथ झा छलाह, अपन पूर्ण अधिवेशन मे सर्वसम्मति सँ मैथिलीभाषी नेनाक लेल मैथिली माध्यमे सातम कक्षा धरि शिक्षाक निर्णय लेने छल, परंच जानि ने 1940 मे तकरा केना बदलि मैथिलीक स्थान पर हिन्दी क देल गेलै । 1971 मे भारतीय हिन्दी परिषद ग्वालियर अधिवेशन मे जकर अध्यक्षता डॉ0 देवेन्द्रनाथ शर्मा क रहल छलाह आ जाइ मे तत्कालीन उपराष्ट्रपति गोपाल स्वरुप पाठक उपस्थित छलाह , सर्वसम्मति सँ प्रस्ताव पारित कएल गेल जे मैथिली कें साहित्य अकादेमी सं बहिष्कृत क देल जाय, कारण ओ कोनो भाषा नहि, हिन्दीक बोली मात्र थिक । 1972 मे कलकत्ता विश्व विद्यालय मे जखन इलारनी सिंह अपन शोधपत्र जमा केने छली, हिन्दी विभागाध्यक्ष कल्याणमल लोढ़ा अड़गा लगओने छलाह जे मैथिली स्वतंत्र भाषा नहि, जखन कि 1919 सं विश्वविद्यालय मे मैथिलीक मान्यता छलैक । अन्तत: निर्णय मतदानक आधार पर भेल आ हिन्दीक पक्ष मे मात्र हिन्दीक अध्यापकेटा मत देलनि । मैथिली विराट मत सं अपन आसन अक्षुण्ण रखलक । मैथिली आन्दोलनक चरित्र जनबाक लेल ओकरा उचित दिशा मे संचालित करबाक लेल एहि सब बातक जानकारी, हिन्दी मैथिली सम्पर्कक विशद बोध आवश्यक । जे केओ कहै छथि जे हिन्दी मैथिली मे कोनो द्वेष नहि ओ वास्तव मे अबोध छथि किंवा मैथिली विरोधी । स्मरण रखबाक थिक जे 1951 मे जे मैथिली भाषीक संख्या कमाओल गेल से केवल हिन्दी भाषीक संख्या बढ़ेवाक उद्देश्य सं । ओना हिन्दीक संगहि अंगिका, बज्जिका, जोलही, कैथी, ओझी आदि नव-नव उपभाषा मे मैथिली के अबस्से बांटि देल गेल । हिन्दीबलाक षड़यंत्रक कारणे मिथिलाक जे कोनो गाम मे एक नहि अनेको भाषा-भाषी सरकारी खाता पर सहजहि देखल-पाओल जा सकैछ । स्वाभाविक छैक जे भारतीय संविधानक आठम अनुच्छेद मे मैथिली के समाहित नहि कएल गेल । इएह पृष्ठभूमि थिक मैथिली आन्दोलनक ।

मैथिली आन्दोलन भाषा-आन्दोलन थिक । भाषा कें विचारक वाहन कहल गेल छैक । मार्क्स एकरा **immediate reality of thought** कहलनि-हें । स्पष्ट अछि जे भाषा साधन थिक साध्य नहि, साध्य थिक समाजक कल्याण । **स्टालिन कहै छथि - 'भाषा समाजक लेल**

वनाओल गेलए, एकर निर्माण लोकक बीच विचारक आदान-प्रदानक माध्यमक रूप मे भेलए जे समाजक सब सदस्यक लेल एकेटा होइए आ सबहक एके रंग सेवा करैए ।' तें जं कही जे भाषाक आविष्कार मानव विकासक प्रथम आ प्रधान पदक्षेप थिक तँ अनर्गल नहि हैत । विकासक आधार थिक शिक्षा आ शिक्षाक माध्यमक रूप मे मातृभाषाक महत्ता के विश्वक समस्त भाषा शास्त्री एक स्वरे स्वीकार करैत छथि । कहल जाइछ जे शरीरक विकास लेल जहिना मातृदुग्ध, मस्तिष्कक विकास लेल तहिना मातृभाषा । दुर्भाग्यवश मिथिलाक संतान अपन एहि मौलिक अधिकार सँ बंचित राखल गेल अछि । ओकरा पर बलजोड़ी हिन्दी लादि देल गेल छैक । मिथिला मैथिल मैथिलीक विरुद्ध जें एहन षड़यंत्र तें आन्दोलनक प्रयोजन ।

कोनो जातिक **(Nation)** निर्माण - उत्थान मे, ओकर सर्वांगीण विकास मे भाषाक भूमिका के प्रथम आ प्रधान पद पर प्रतिष्ठापित करैत छथि राजनीति विज्ञानी लोकनि । **रामसे मूरक** अनुसार *There is nothing that will give unity to divergent races as the use of a comnon tongue and in very many cases unity of language and community of ideas which it brings, have proved the main binding force in nation.* बंगला देशक निर्माण एहि मान्यता कें सत्य प्रमाणित क चुकल अछि । अपनहि देश में भाषाधार प्रान्तक निर्माण एकरे प्रमाण थिक । खेदक बात जे मिथिला राज्य आन्दोलन के छल-बल सं दबा देल गेल । पत्रिकर कमीसनक समक्ष जे प्रबोध बाबू, बाबू साहेब चौधरी लोकनि स्मार पत्र देने छलाह तकर उल्लेखोधरि नहि कएल गेल । 1971 मे जखन मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि तत्कालीन प्रधानमंत्री सं भेंट केने छलाह त श्रीमती गांधी स्पष्ट कहने छलथिन जे जं राज्यक मांग नहि कएल जाय त भाषाक मादे विचारल जायत । परिणाम ई भेल जे इन्दिरा गांधीएक आदेशानुसार जनगणना मे मैथिली भाषीक संख्या घोषणा पर रोक लागि गेल । जाहि सरकारक कथनी आ करनी मे कोनो तालमेल नहि, जे अपन स्वार्थसिद्धि लेल नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश आ आब ताइ संग झाड़खंड, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ बना सकैछ तकरा मिथिलाक नामे सुनि झड़कबाहि लगैत छैक । जें एके देश मे दू रंग व्यवस्था द्वारा मैथिल के अपन भू-भाषा-संस्कृतिक रक्षा, ओकर विकासक सं बंचित राखल गेल छैक, ओकरा संग दोसर स्तरक नागरिक सन व्यवहार कैल जाइत छैक, तें आन्दोलनक प्रयोजन ।

विज्ञानक प्रगतिक संगहि भाषाक उपयोगिताक आयाम आर विस्तार लाभ केलकए । आइ जखन खान-पान-परिधान मे पार्थक्य परिलक्षित होएब असंभव सन भेल जाइछ तखन एकमात्र भाषाए कोनो जातिक परिचिति रहि जाइछ । आइ भाषा जीविकोपार्जनक साधनक रूप मे कार्य करैत अछि । भाषाक महत्ता के स्टालिन एहि रूप मे व्याख्यायित करै छथि - **'भाषा मनुक्खक उत्पादक क्रिया सं प्रत्यक्षरूपे जुड़ल अछि, ओकर जिनगीक सभ क्षेत्रक समस्त क्रिया उत्पादन स ल क निर्माणक चरम पर्याय धरि !'** स्वभावत: एहन महत ओ महत्वपूर्ण मातृभाषाक अपमान, ओकरा विरुद्ध षड़यंत्र कोनो जीवित जाति सहन नहि क सकैछ आ तें मैथिली आन्दोलनक प्रयोजन ।

खगताक बोध मनुक्ख के खोज-दिस उन्मुख करैछ । कहबाक प्रयोजन नहि जे इएह बोध समस्त विकासक आधार थिक । मैथिली आन्दोलनक खगता वा प्रयोजनीयताक मादे हम पहिनहि

कहि आएल छी । स्वाभाविक छैक जे एकर बोध सर्वप्रथम साहित्यकारे लोकनि कें भेलनि आ ओ लोकनि आन्दोलनक भूमिका निर्माण मे दत्त-चित्त भए लागि गेलाह । जेना कि पहिनहि कहि आएल छी, साहित्य सिरजन अपने आप मे एगो आन्दोलन थिक । एहि तरहे मैथिली मे लिखि, ओकर साहित्यक-भंडार कें समृद्ध कएनिहार समस्त साहित्यकारेक भूमिका महत्वपूर्ण थिक । बिसरबाक नहि थिक जे हिनके लोकनिक बलपर हम नगारा पर चोट दय मैथिली साहित्य के अन्यान्य भाषा-साहित्यक समकक्ष होएबाक दावी करैत छी । कोनो भाषा कें भाषाक मर्यादित पद पर प्रतिष्ठापित करबा लेल ओहि मे साहित्य सिरजनक परिपाटीक होएब नितान्त आवश्यक थिक । केवल बोल-चालक माध्यमधरि रहब पर्याप्त नहि । **कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ कविपति विद्यापति** जाइ परिपाटी - परंपराक जन्म देलनि से जं टूटि गेल रहैत त निश्चिते आइ हम एते जोर सं, एहन विश्वासक संग नहि बाजि पबितहुं आ ने आने तकर मोजर दीत ।

उपरोक्त मत के ध्यान मे रखैत एहिठाम हम ओहि सभ साहित्यकारक चर्चा करए चाहब जे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपें मैथिली आन्दोलन सं जुड़ल रहलाह अछि । प्रत्यक्ष सँ हमर तात्पर्य भेल शारीरिक सभा-समावेश, जुलूस-धरना आदि आन्दोलनात्मक कार्य कलापक सहभागिता । एहि श्रेणी मे बड़ बेसी नाम नहि अछि । **मैथिली दधीचि बाबू भोलालाल दास, श्रद्धेय काञ्चीनाथ झा 'किरण', वीर कवि राघवाचार्य, प्रो0 प्रवोध ना0 सिंह, प्रदीप मैथिली पुत्र, रामलोचन ठाकुर** आदि । नि0 भा0 मैथिली भाषी छात्र-संघक संग **विभूति आनन्द** वेश सक्रिय छलाह । मैथिलीक प्रतिष्ठा लेल अपन सर्वस्व स्वाहा क देनिहार बाबू **भोलालाल दास** हमर गौरव गाथा छथि, इतिहास छथि जनिक कलम मात्र साहित्य सिरजने नहि मैथिली विरोधीक मुंह बन्द करबा लेल कतओक काज करैत छल । एहिठाम उल्लेख करब आवश्यक जे **कलकत्ता विश्व विद्यालय मे** 1919 मे मैथिलीक पढ़ाइ आरंभ भेल, परंच **पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक मान्यता भेटल 1945 ई0** मे आ सेहो धन भोला बाबू । हिनक अभाव मे मैथिलीक स्थिति बिहार मे केहन रहैत तकर कल्पना मात्रहि सँ देह सिहरि उठैछ । अपन झड़पटही साइकिल मे पटिया बन्हने गामे-गाम घुमि विद्यापति -स्मृति पर्वक माध्यमे मैथिलीक अलख जगओनिहार किरण जीक त तुलने नहि । राष्ट्रभाषाक व्यामोह मे पड़ि अनेको रथी-महारथी जखन सुपनेखाक स्तुति-रचना मे मति गेलाह, मात्र किरणजी अपन माटि नहि छोड़लनि । एकमात्र मैथिली । **उएह धर्म उएह कर्म** । मिथिला-मैथिलीक लेल अपन-जीवन-जीविका के होम क देनिहार वीर कवि राघवाचार्यक कथे की । मैथिली आन्दोलन सँ प्रत्यक्षरूप मे जुड़ल रहबाक कारणे थोड़ कष्ट नहि उठाबए पड़ल छनि प्रदीप मैथिलीपुत्र कें । मैथिली विरोधी गति-विधि देखि आकाशवाणी दड़िभंगाक कार्यक्रमक बहिष्कार करबा में कनिको हिचकिचाहट कहां भेलनि । रामलोचन ठाकुर कलकत्ता आएल छलाह जीविकाक खोज मे परंच ताइ सँ पहिने जुड़ि गेलाह मैथिली आन्दोलन आ रंगमंचक संग ! 9 दिसम्बर 1980 के मैथिली मुक्तिमोर्चा, कलकत्ताक नेतृत्व मे कलकत्ताक शताधिक लोक पटनाक राजपथ पर उतरल छल । सहयोगी छलैक पटनाक निखिल भारत मैथिली भाषी छात्रसंघ । अपन मातृभाषाक मान्यताक नारा बुलन्द करैत, जन समूह राजपथ के दलमलित करैत आगां बढ़ि रहल छल कि मैथिली विरोधी डॉ0 जगन्नाथ मिश्रक बर्बर पुलिस बाहिनी ओकरा सभपर टूटि

पड़लैक । कतेको लोक आहत भेल । मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे पहिल बेर पटनाक राजपथ मैथिल संतानक शोणित सँ भासल छल । **मैथिलीपुत्र नथुनी झा** क ओ त्यागमय छवि बिसरबा जोग नहि । आ एहि मैथिली मुक्तिमोर्चाक आहवान केने छलाह रामलोचन ठाकुर । एही जुलूस मे कलकत्ताक **सुशील** जी पर पचीसो लाठी पड़ल छल । **'घराड़ी'** आ **'गामवाली'** उपन्यास तथा **'भामती'** नाटकक लेखक थिकाह इएह सुशील । कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक कर्मी आ विख्यात रंगमंचक कलाकार, **'निष्कलंक'** आ **'अभिनेत्री'** नाटकक लेखक **जनार्दन झाक** नाम केना बिसरल जा सकैछ जे मात्र एही जुलूस नहि एहि तरहक कतेको जुलूस आ 'मोर्चा' क कार्यक्रमक सहभागी रहल छथि । कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक संग जनिक नाम ओत-प्रोत भावें जुड़ल अछि आ एहि जुलूसक अगिला पांती मे छलाह, से स्वनामधन्य **बाबू साहब चौधरी 'कुहेस'** सन विलक्षण नाटकक लेखक आ **'चन्द्रगुप्त'** (चाणक्य नामे प्रकाशित) नाटकक अनुवादक संगहि **मिथिला दर्शन, मैथिली दर्शनक** संपादक छलाह । ई भिन्न कथा जें हिनक आन्दोलनी छविक समक्ष साहित्यिक छवि देखार-चिन्हार नहि भ पाओल, परंच साहित्यिक त ओ छलाहे । एहिठाम एगो आर नामक उल्लेख हम करए चाहब, जे मैथिली साहित्यक इतिहास द्वारा हमर पाया सक्कत करबाक संगहि साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेशक हेतु अथक प्रयास कएलनि आ आइयो थाकल नहि छथि । ई थिकाह **डॉ0 श्री जयकान्त मिश्र** ।

आब हम ओहेन साहित्यकार लोकनिक चर्चा करए चाहब जिनका लोकनि कें हम अपन सुविधाक लेल दोसर श्रेणी मे राखलए । ओना त साहित्यकारक काजे थिक साहित्य सिरजन आ एहि माध्यमे आन्दोलनक वातावरण बनाएब, लोक मे अपन मातृभाषाक प्रति प्रेम-भाव-जागाएब, ओकर प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु प्रेरित प्रोत्साहित करब आ ई काज वस्तुतः प्रत्यक्षे योगदान थिक । से जे हो, एहि श्रेणी मे उपर चर्चित साहित्यकारक अतिरिक्तो बहुत रास नाम श्रद्धाक संग स्मरण कएल जा सकैछ । आन्दोलनक खगता, स्थितिक भयावहता आ मैथिली विरोधी तत्वक तत्परताक मादे हम पहिनहि कहि आएल छी । एहि सभ बात के ध्यान मे राखिए क विषय के नीक जकां बुझल-गमल जा सकैछ ।

साहित्यिक गतिविधिक लेखा-जोखा लेल पत्र-पत्रिकाक पृष्ठभूमि मे जाएब आवश्यक । मैथिलीक पहिल पत्रिका **'मैथिल हितसाधन' विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा ओ प्रो0 चन्द्रदत्त झाक** प्रयासे **1905 ई0** मे जयपुर सं बहार भेल । **1906 मे म0 म0 मुरलीधर झाक** संपादकत्व मे **काशी** सं बहार भेल **'मिथिला मोद'** । **1908 मे दड़िभंगा सं 'मिथिला मिहिर'** बहराएल मोदक प्रतिक्रिया मे आ ताहू मे सिंहभाग हिन्दी दफानने रहैत छल । ओना **'मोद'** मे सेहो हिन्दीक स्थान रहैत छलैक, परंच हिन्दीवलाक बदमासी देखि **'मोद'** सं ओकरा हटा देल गेल एवं **'मिहिर'** सँ ओकर निष्कासन हेतु म0म0 आन्दोलन चलाओल । एहि सं एतबा त स्पष्टे अछि जे भूमिपर भनहि भाषा-चेतना रहल हो, दड़िभंगा महाराजक मैथिली विरोधी नीतिक कारणे प्रस्फुटित नहि भ पाओल आ से भेल प्रवास मे । ओना पश्चात् महाराजक सहयोग सं मैथिलीक कतिपय कार्य अबस्से भेल, परंच जे क्षति ई वंश मिथिला-मैथिलीक क गेल अछि तकर मार्जना असंभव । मन पड़ैत अछि श्रद्धेय **मणिपद्म** जीक पांती - **'सौ-सौ गंगाजल सँ धोने, छूटै नहि इतिहासक दाग । एक बेर भूलुंठित भेने फेर चढ़ै नहि माथा पाग'** अस्तु । आगां बढ़ै सँ पहिने किछु

आर मैथिली पत्र-पत्रिकाक चर्च आवश्यक जाइ सं विषय भाव स्पष्ट भय पाबए । **1920 मे अजमेर सं प्रकाशित भेल 'मैथिल प्रभा' आ 1929 मे अलीगढ़ सं 'मैथिल प्रभाकर' । 'श्री मैथिली' दड़िभंगा सं 1925 मे आ 1931 मे वनैली सं 'मिथिला मित्र' । पत्रकारिताक क्षेत्र मे कलकत्ताक प्रवेश होइछ 1953 मे 'मिथिला सेवक' आ 'मिथिला दर्शन' क संग । तत्पश्चात् आखर, अग्निपत्र, मैथिली प्रकाश, मैथिली कविता, शिखा, सुल्फा, देसकोस, देसिल बयना, रंगमंच, लोकमंच, मैथिली मिनि 'मि' कर्णमृत, प्रवासक भेंट, मिथिला समाद, अनुवार्ता, मिथिला चेतना, मिथिला चैमवरक सनेस** आदिक नाम अबैछ । एहिठाम पत्रकारिताक इतिहास लेखन हमर उद्देश्य नहि । ई त मात्र भूमिपर आ प्रवासक भाषा-चेतनाक प्रमाण स्वरूप आवश्यक बुझि उल्लेख कएल अछि । संगहि मन रखबाक थिक जे प्रत्येक पत्रिकाक प्रकाशनक पाछा कोनो ने कोनो साहित्यिक भूमिका रहिते आएल अछि । । मिथिला संघक मुखपत्रक रूप मे प्रकाशित 'मिथिला दर्शन' क विशेषता एही बात सँ स्पष्ट अछि जे ओकर प्रत्येक अंक मे उद्बोधन रूपें **कविवर सीताराम झाक 'अछि सलाइ मे आगि , वरत की बिना रगड़ने । पायव निज अधिकार, कतहु की बिना झगड़ने'** छपैत छल । तहिना मैथिली मुक्ति मोर्चाक मुखपत्र **'देसिल वयना'** मे रामलोचन ठाकुरक **'संविधान बिनु मैथिलीक आ मानचित्र बिनु मिथिला धाम । डाहि-जारि सुड्डाह करव हम, विद्रोही मिथिलाक जुआन'** छपैत छल ।

भाषा आन्दोलन लेल आवश्यक थिक लोक मे भाषा-चेतनाक होएब । अपन भाषाक प्रति प्रेम ओकर महिमा-महत्ता-गुणवत्ता-उपयोगिताक परिचितिक अभाव मे आन्दोलन संभव नहि । स्वाभाविक कारणें **साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास** लिखैत छथि -

मधु सँ मधुर अमृत सन स्वाद
अनुपम एकर गुणक मर्याद
मातृवचन सन किछु की आन
करिय विचार राखि चित्त ध्यान ।

मातृभाषाक महिमाक बखान करैत **पं0 यदुनाथ झा 'यदुवर'** लिखैत छथि -

जन्मभूमि, जननी तथा मातृगिरा-ई तीन
सार सकल संसार मे, छथि कहि गेल प्रवीन
जें नहि उन्नत मैथिलीलिपि भाषा अछि आज
तें ई अवनति खाधि मे अछि मिथिलाक समाज ।

ओना त जतेक बेसी भाषा पढ़ी, जानी से नीक बात थिक, परंच तकर अर्थ ई कथमपि नहि जे अपने भाषाक अवज्ञा-अवहेलना करी, बिसरा दी । आनहुं भाषाक सहज शीघ्र ज्ञानार्जन मे मातृभाषा सर्वाधिक सहयोगी-उपयोगी-प्रमाणित भेल अछि । **कविवर सीताराम झा** कतेक सटीक आ सहज सरल भावें एहि भाव के अपन कविता मे दर्शओलनिहें से देखल जा सकैछ -

रटि आर0ए0टी0 रैट रैट माने पढ़ि चूहा
चूहा कोन पदार्थ थिक मन मे ई ऊहा

जहि भाषाक बलें बूझी चूहा थिक मुसरी
भै परभाषाभिज्ञ अहां तकरा जुनि बिसरी ।

मातृभाषाक महत्ता **रामलोचन ठाकुर** एहि तरहे वर्णन करैत छथि -

जेहि भाषा मे प्रथम कहल 'मा' माइक भाषा
सीखल बावू, बावा, मैञा, नानी, नाना
घुघुआमन्ना, अटकन-मटकन चट्टा-पट्टा
मानव - जीवन व्यर्थ, ताहि जं लागय बट्टा ।

कवि भीमनाथ झा अपन भाव के ***'कार्तिक धवल त्रयोदशी'*** शीर्षक कविता मे विद्यापतिक माध्यमे एहि तरहें व्यक्त करैत छथि -

जाहि भाषा वलें भेलहुँ धन्य हम / मान-धन पौलहुँ प्रचुर एहि लोक मे ।
ताहि 'देसिलवयन' कैं विसरव न क्यो / अन्यथा हम रहब सभठाँ शोक मे ।।
अपन भाषा मे लिखव दू पाँतियो / तखन दू सय ग्रन्थ दोसर मे लिखव ।
पढ़व पहिने अपन वानिक शब्द दू / तखन दू सय आन भाषा कें सिखव ।।
एहिठामक दिव्य प्रतिभा पुत्र कें / कते वंचक लेत अपना मे मिला ।
सावधान, न हो सफल से वंचना / अन्यथा ढहि जैत निज भाषा किला ।।
मैथिली कें पुनः हरि लेवाक हित / रहल अछि मड़ड़ाय रावण सुत कते ।
अहाँसभ द चोट डंकापर कहू । छी जते हमसभ, बुझह, लव-कुश तेते ।।

एहि सन्दर्भ मे **कवि चूड़ामणि मधुपक** किछु पाँती हमरा मन पड़ैछ । ओना त ई रचना भिन्ने सन्दर्भ मे भेल छल । मनीगाछी मे कविता पाठक मंच सं कविता पढ़ैत काल चन्द्रभानु सिंहक उपहास किछु गोटे केने छलाह आ प्रतिवाद मे ओ कविता पढ़नाइ बन्न क देल । हुनके सान्त्वनार्थ मुधपजी जे पद रचलनि से एना अछि -

पर्वतराज हिमालयसँ दक्षिण गंगासँ उत्तर
गंडकसँ पूर्वस्थ, महानन्दासँ पश्चिम मृदुतर
मही-मर्द्धमाला मिथिलाये जते-जाति केर मानव
सव थिक मैथिल, भिन्न बुझैजे, तकरा बूझी दानव
विस्तृत एकर विभिन्न अंचलक जते प्रकारक बोली
सकल मिलित मैथिली थीक तें किछु द'द' कटु बोली
से माता मैथिलीक द्रोही अधमहुँमे अधलाहा

आन्दोलन लेल दोसर आवश्यक तत्व भेल एकता । कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली विरोधी लोकनि सर्वप्रथम मैथिलक **जातीय एकता (National Unity)** कें अपन निशाना बनओने छल । एहि मे मैथिल महासभाक घातक नीति सेहो सहायक भेलै जकर चर्चा हम पहिनहि क आएल छी । स्वाभाविक छलैक जे एहि भ्रम के, एहि कृत्रिम खाधि के पाटल जाय । **लोक के एहि सत्य सँ अवगत कराओल जाए, विश्वास दिआओल जाए जे भाषा भूमिक होइत छैक, कोनो जाति वा धर्मक नहि** । जखन बंगालक रहनिहार सभ बंगाली थिक, पंजाबक

पंजाबी, आसामक असमिया तखन मिथिलाक मैथिल किएक नहि । ओकर भाषा किएक फराक हेतैक ? ई भ्रम थिक, मैथिली विरोधीक षड़यंत्र थिक । वास्तविकता ई थिक जे मिथिलाक रहनिहार सभ मैथिल छथि आ सभक मातृभाषा मैथिलीए थिक । एही बात के जनकवि यात्री अपन 'वन्दना' कविता मे एहि तरहें कहैत छथि ।

जय जय जय हे मिथिला माता / जय लाख लाख मिथिलाक पुत्र
अपनहि हाथे हम सोझराएब / अपना देशक शासनक सूत्र-
बाभन छत्री ओ भूमिहार / कायस्थ सूँड़ि ओ रौनियार
कोइरी कुर्मी ओ गोढ़ि-गोआर / धानुक अमात केओट मलाह
खतबे ततमा पासी चमार / बरही सोनार धोबि कमार
सैअद पठान मोमिन मीयाँ / जोलहा धुनियाँ कुजरा तुरुक
मुसहड़ दुसाध ओ डोम-नट्ट / भल हो हिन्नू भल मुसलमान
मिथिलाक माटि पर बसनिहार / मिथलाक अन्न सँ पुष्ट देह
मिथिलाक पानि सँ स्निग्ध कान्ति / सरिपहुँ सभ केओ मैथिले थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक / ई देश कोस ई बाध-बोन
ई चास-बास ई माटि पानि / सभटा हमरे लोकनिक थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक ?

संशय मुक्त मन, एकताक बल आ भाषा प्रेमक उफान -- भाषा आन्दोलनक अभियान मे आर की चाही ? वीर कवि राघवाचार्य हाक दैत छथि -

शिवराम दुर्ग सँ पड़ल हाँक
किए मैथिलार्यगण चुप छें रौ

कविवर आरसी प्रसाद सिंह, जे हिन्दी कविक रूप मे विख्यात छलाह, एहि आन्दोलन सँ अपना के फराक नहि राखि सकला, अपितु सबसँ आगा फानि रंणडंका पर चोट कएलनि -

वाजि गेल रणडंक, डंक ललकारि रहल अछि ।
गरजि गरजि कऽ जन-जन कें परचारि रहल अछि ।
कोशी-कमला-उमड़ि रहल, कल्लोल करै अछि ।
के रोकत ई बाढ़ि ककर सामर्थ्य अड़ै अछि ।
आबहुँ की रहतीह मैथिली बनल बन्दिनी ?
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनक नन्दिनी ?
डंक वाजि गेल, आगि लंक मे लागि रहल अछि ।

अपन ''अधिकार'' शीर्षक कविता मे कविवर लिखैत छथि -

माँगि रहल छी प्रथम आइ हम / अपन मातृजन वाणी ।
माँगि रहल छी हम विदेह-भू / भाषा चिर-कल्याणी ।
वैस कण्ठ पर क्यो बरजोरी / स्वर नहि दाबि सकै अछि ।

मूंग दररि सदिखन छाती पर / मुँह नहि जाबि सकै अछि ।
लेब अपन अधिकार आब हम / अपन महालक पानी ।
माँगि रहल छी प्रथम आइ हम / अपन मातृजन वाणी ।

आन्दोलन लेल लोक मे जोशक संगहि त्याग-बलिदानक भावनाक प्रावल्य सेहो अपेक्षित । कहबाक प्रयोजन नहि जे साहित्यकार लोकनि अपना-अपना ढंग सं एहि बात के कहलनिहें जे बेश प्रभावोत्पादक प्रमाणित भेल अछि । **प्रदीप मैथिली पुत्र** जखन कहै छथि -

एकटा बात कहब हम सदिखन
अपना मिथिलावासी सँ
भाषा के उद्धार करू, नहि
डरू जहल आर फांसीसँ

त हुनका समक्ष दोदुल्यमान मनस्थितिक लोक रहैत अछि । एहन लोक सभ काल आ सभ समाज मे किछु ने किछु रहिते आएल अछि । मुदा **बाबू भोला दास** मैथिली विरोधी के ललकारैत चेतावनी दैत छथि-

भूमिकम्प छी प्रबल विश्व-विप्लवकारी हम
छी अति प्रखर तरंग रूढ़ि गिरि रजकारी हम
अन्यायी सत्ता प्रबल गगन सम अति विषम
हमरहि लघु हुंकार सँ महाप्रलय होइछ नियम

मैथिली के ओकर न्यायोचित अधिकार सँ बंचित कएनिहार दिल्ली-पटनाक सरकार ओ ओकर सहयोगी के संबोधित करैत अपन **'चेतौनी'** शीर्षक कविता मे **राम लोचन ठाकुर** कहैत छथि -

रे पटना के पंडा/ रे दिल्लीक दलाल
हिन्दी के पोशा कुकूर शैतान
सावधान ! नहि त ई मिथिलादेश
बनत विश्व के दोसर बंगलादेश / दोसर वियतनाम

महाकवि यात्री आन्दोलनकारी मैथिली सेनानी के लक्ष्य कें कहै छथि -

सोनित बोकरए जँ जुआएल जोंक
त सफल तोहर बर्छीक नोक !

एकर अतिरिक्तो बहुत रास साहित्यकारक भूमिका मैथिली आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे देखल-पाओल जा सकैछ । कविताक अतिरिक्त साहित्यक अन्य विधा जेंना कथा, उपन्यास नाटक आदि मे एहि भावनाक प्रस्फुटन प्रायः नहिञे जकां भेल अछि, परंच किरण जीक **''विजेता विद्यापति''** आ **''जय-जन्मभूमि''** के एहि श्रेणी मे राखल जा सकैछ । निबन्ध मे निश्चिते एकर प्राचुर्य आछि । वस्तुतः आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे रचित रचनाक विशद अध्ययन मननक प्रयोजन अछि जे एहि छोट सन निबन्ध मे संभव नहि । एहि विषय पर त फराक सँ एक ग्रंथ लिखल जा सकैछ आ से लिखल जेबाक चाही । ई त भूमिका मात्र थिक । तथापि ई त मानहि पड़त जे अन्यान्य भाषा-आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका जाहि अनुपात मे देखल-पाओल जाइछ, मैथिली मे तकर अभाव अछि ।

(2001)

मैथिली साहित्यक विकास मे कलकत्ताक योगदान

मिथिला मैथिलीक चर्च हो आ कलकत्ता अचर्चित रहि जाय से केना संभव भ सकैछ । ओना मैथिली इतिहासकार लोकनिक बात भिन्न थिक जनिका लोकनिक लेल सत्य सं बेसी महत्वक स्वार्थ संबंध रहैत आयल अछि । बात मैथिली आन्दोलनक हो वा पत्रकारिताक, नाट्य-मंचक वा साहित्य साधनाक कलकत्ताक नाम सभसं पहिने आंओत । वस्तुत: कोनो एक नगर-महानगर एहन नहि जे कलकत्ताक तुलना मे ठठि सकय । सरकारी सद्भावना सहयोग संपोषित संस्था, शहरक बात निश्चितें अपवाद थिक । स्वभावत: आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि - 'कलकत्ता मैथिलीक हेतु सिद्धपीठ जकाँ तीर्थस्थान थिक । जं कलकत्ता मैथिली कँ स्थान नहि देने रहितए तं बिहार मे मैथिली उपेक्षिते रहितए ।' यात्रीजीक अनुसार कलकत्ता मिथिलाक लघुसंस्करण थिक । राजकमल चौधरी लिखैत छथि - 'कलकत्ता मे अपन स्वाधीन द्वीप जकाँ एकटा छोट-छीन 'मिथिला' अछि, जकर विराट स्वरूप प्रतिवर्ष विद्यापति जयन्तीक पर्व अवसर पर देखाबाक संयोग भेटैत अछि ।' कहबाक प्रयोजन नहि जे कलकत्ताक एहि उपलब्धिक आधार सर्वसाधारण लोकक सहयोग सद्भावक संगहि बंग संतानक स्नेह सद्भावना रहल अछि ।

आजुक स्थिति अबस्से भिन्न अछि । मैथिली साहित्यक शोध-साधनाक शुभारंभक शत वर्ष पश्चातक कलकत्ता ज कही अनचिन्हार अनओभार लगैत अछि, त प्राय: अनर्गल नहि होएत । तहिया बिहार बंगाल सं फराक नहि भेल छल । ओना मिथिला तहियो नहि छल आ आइयो नहि अछि, परंच मिथिलाक अस्तित्व तहिया बेसी देखार जगजिआर छल । जे से । आइ कलकत्ता मे मैथिलक संख्याक संगहि ओकर भाषा-चेतना मे सेहो ह्रास-भेल बुझि पड़ैछ । जे लोकनि एहि कर्मकांडक अगुआ छलाह ताहि मे बहुतो दिवंगत भ गेलाह आ किछु कलकत्ता छोड़ि देलनि । एकरा विडम्बनाए कहल जाय जे नेतृत्वक अगिला खाढ़ी तैयार करबाक कोनो प्रयास नहि कएल गेल वा कही जे ठाम-ठीम बाधाए उपस्थित कएल गेल त सेहो फूसि नहि होएत । स्वभावत: आइ एहि सभ कर्मकाण्डक सम्यक जानकारी रखनिहार लोकक सेहो अभावे अछि । एहना स्थिति मे भविष्यक लेल इतिहासक खगता-महत्ता कें, कृती पुरुषक योगदान अवदान कें ध्यान मे रखैत एकर लेखन-प्रकाशनक प्रयोजनीयता के अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ । ओना वास्तविकता त इएह थिक जे विभिन्न क्षेत्र मे कलकत्ताक योगदान - अवदानक पृथक-पृथक ग्रंथ लिखल जा सकैत अछि, परंच हम अपन योग्यता, क्षमता आ प्रकाशनक असुविधा के ध्यान मे रखैत एकर संक्षेप मे उल्लेख मात्र करबाक प्रयास क रहल छी । भविष्य मे जं कोनो अनुरागी उत्साही अनुसंधानकर्त्ता एहि क्षेत्र मे कार्य करय चाहता त एहि आलेख सं हुनका सहयोग वा दिशा-निर्देश भेटतनि से विश्वास अछि । एहि क्रम मे हम 'कोकिल-मंच' आ मिथिला विकास परिषद्क स्मारिका 2002 मे नाट्यमंच आ 'कृर्णामृत' शारदीय 2002 मे पत्रकारिता पर आलेख लिखि चुकल छी । कलकत्ताक साहित्यकार पर लिखबाक नेआर छल परंच जेना कि शीर्षक सं स्पष्ट अछि, मैथिली साहित्यक विकास मे कलकत्ताक योगदान-अवदान के रेखांकित करबाक प्रयास अछि ।

विषय विशाल अछि आ अध्ययन - अनुशीलनक आधार नगण्य । अपन शक्ति-सामर्थ्यक बात हम पहिनहिं कहि आयल छी । तथापि जँ हम एहि दिशा मे अगुआ रहल छी त तकर एकमात्र कारण मैथिलीक उन्नति विकासक लेल कएल गेल कार्यक प्रति श्रद्धा सम्मान प्रदर्शन । स्पष्ट छैक

जे आधुनिक काल मे मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे कलकत्ताक चिन्तन-चेतनाक शुभारंभ उन्नैसम शतीक शेषकाल मे होइत अछि । 1891 मे जखन सारदा चरण मित्र महोदय प्रेसिडेंसी कालेजक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह तखनहिं 'प्राचीन काव्यसंग्रह' क अन्तर्गत विद्यापतिक रचनाक संग्रह-प्रकाशनक उद्योग लेलनि । नगेन्द्र बाबूक शोध-साधनाक पृष्ठभूमि मे इएह सारदा बाबूक प्रेरणा प्रोत्साहन छल आ तेँ ई हमरा लोकनिक लेल प्रणम्य छथि, प्रात: स्मरणीय छथि ।

'मैथिली साहित्यक विकास मे कलकत्ताक योगदान' कँ विवेचना-बोधक सुविधा-सहजता के ध्यान मे रखैत, तीन भाग मे विभक्त कएल जा सकैछ - (1) लेखन, (2) प्रकाशन तथा (3) अन्यान्य । आ फेर अपन सुविधाक कारणे हम शेषे सँ शुरू करय जा रहल छी ।

अन्यान्य : कोनो भाषा साहित्यक विकास मे ओहि भाषाक राजनैतिक-सामाजिक मान्यता-मर्यादा महत्वपूर्ण होइत छैक । ओना इहो मान्यता मर्यादाक आधार जे ओकर समृद्ध साहित्य, दीर्घ साहित्यिक परंपरा होइत छैक ताइ मे संदेह नहि । एहि संदर्भ मे मैथिली सभ दिन आगू रहल । अभाव रहलैक त ओकर मान्यताक जे आइयो छैक । मैथिली भाषी चिरऋणी रहत सर आशुतोष मुखोपाध्यायक जे 1919 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे आधुनिक भारतीय भाषाक रूप मे आन भाषाक संग मैथिलीयो के स्वीकृति देलनि । एहि संदर्भ मे अपन विभूति ब्रजमोहन ठाकुरक स्मरण होएब स्वाभाविक जनिक प्रयास मैथिलीक इतिहास मे स्वर्णाक्षर मे लिखल जेबाक चाही । ई आशुतोष बाबूक प्रिय पात्र छलथिन आ तकर प्रसाद मैथिलीके भरिपोख प्राप्त भेलैक । आशुतोष बाबूक मैथिली प्रेमक बानगी सुनीति बाबूक शब्द में -

The bulk of the literature of Maithili being in Ms, to facilitate Maithili Studies. Sir. Asutosh has Devnagari transcripts of a number of Maithili works made to be edited and published under the auspices of the University. He even thought of having the first fount of Maithili letters prepared for this purpose, but his sudden death in May, 1942 prevented the maturing of this idea.

आब जखन सुनीति बाबूक चर्च आबिये गेल त कहनाइ आवश्यके जे मैथिलीक लेल हिनक अवदान अविस्मरणीय अछि । अपन बंग - भाषाक उत्पत्ति ओ विकास मे मैथिलीक जे चर्च केलनिहें, साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेशक हेतु जे हुनक प्रेरणा-प्रयास रहलनिहे, वर्णरत्नाकारक संपादन-प्रकाशन मे जे हुनक अवदान रहलनिहें..... । वस्तुत: भाषाचार्यक मैथिली प्रेम, ओकर उन्नतिक आकांक्षा अपरिसीम छल । सुभद्र बाबू के ई बड़ स्नेह करैत छलथिल जे हिनका स भेंट घांटक क्रम मे ज्ञात भेल । ई जखन साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष भेलाह त बधाई पत्र देने छलियनि । ओहि सँ पहिने भेंट-घाँट नहि छल । 13 अगस्त 1969 के ओ लिखलनि -

Dear Sri Thakur,

Pleas excuse this letter in English. Thank you very much for your letter written in Maithili characters, felicitating me on my election to the presidentship of Sahitya Akademi. I am very happy that Maithili is slowly coming to its own as an independent new Indo-Aryan language, with a rich literature of its own.

साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेश निर्विवाद पैघ उपलब्धि थिक आ एहि लेल जयकान्त बाबूक श्रम-साधना सर्व-विदिते अछि । परंच ई उपलब्धि कोनो एक व्यक्तिक प्रयासें संभव नहि छल । वस्तुत: वर्षो एकर पृष्ठभूमि तैयार कएल गेल छल । 1957 मे कलकत्ता मे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन भेल छल जाइ मे तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 नेहरू उपस्थित छलाह । एहि सम्मेलन मे मात्र ओंही भाषाक लेखक आमंत्रित छलाह जाहि भाषाक स्थान संविधानक आठम अनुच्छेद मे छलैक । एहि बातक पता जखन बाबू साहेब चौधरी आ पं0 देवनारायण झा कें लगलनि त ओ लोकनि बंगला साहित्यकार वुद्धदेव बसुक माध्यमे प्रो0 हुमायुँ कबीर सं सम्पर्क केलनि आ हुनका प्रभावित कऽ मैथिलीक तीन गोट लेखकक नाम आमंत्रण पत्र प्रेषित करबौलनि । ई लोकनि छलाह डॉ0 लक्ष्मण झा, डॉ0 ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' आ प्रो0 हरिमोहन झा । ओतबे नहि एहनो व्यवस्था कएल गेल जे मैथिली लेखक के पं0 नेहरूक समक्ष अपन वक्तव्य रखबाक अवसर देल गेलनि । डॉ0 लक्ष्मण झा आ मणिपद्मक वक्तव्य तथा नेहरूक जवाब एहि बातक प्रमाण अछि जे अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता मे एहि सम्मेलनक अहम भूमिका रहलैक । पश्चात् जखन जयकान्त बाबू मैथिली पोथीक प्रदर्शनी कएलनि ताहु मे कलकत्ता सं हवाई-जहाज द्वारा पोथी पठाओल गेल छल । एहिठाम उल्लेखनीय जे साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक मान्यता लेल एक गोट एक्सपर्ट कमिटि गठित भेल छल जाहि मे डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ0 सुकुमार सेन, डॉ0 अत्रेय, डॉ0 सुभद्र झा आ डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी छलाह । एहि मे डॉ0 द्विवेदीक संगहि डॉ0 झा सेहो मैथिलीक मान्यताक विरोधी छलाह । मुदा संयोग जे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे द्विवेदीजी घनश्याम दास बिड़ला हिन्दी व्याख्यान मालाक संदर्भ मे कलकत्ता आयल छलाह । अखिल भारतीय मिथिला संघक कार्यकर्त्ता राजनन्दन लाल दास, पीताम्बर पाठक, मदन चौधरी तथा ब्रह्मनारायण झा, डॉ0 द्विवेदी सँ संपर्क क हुनका मैथिलीक अनुकूल बनौलनि । डॉ0 द्विवेदी स्वीकार कैने छलथि 'मैं जानता हूँ राजनीतिक कारणों से मैथिली को मान्यता नहीं मिलती है । मैं इतना करूँगा जो उस मीटिंग मे नहीं जाऊँगा।' आ भेबो सैह केलैक । ओना आइ कालि जे साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनिक स्थिति अवस्थान देखैत छी त सुभद्र बाबूक विरोधक अर्थ स्पष्ट भ जाइत अछि । से जे हो । कमिटिक विद्वान लोकनि सँ एकाधिक बेर संपर्क स्थापित कएल गेल छल, विभिन्न माध्यम सँ हुनका लोकनि कें प्रभावित करबाक प्रयास कएल गेल छल ।

जहाँ धरि मन पड़ैछ, 1972 मे इला रानी सिंह कलकत्ता वि0 विद्यालय मे डी0 लिट लेल अपन थिसिस जमा केने छली । विषय छल 'मैथिली लोक गीत मे समाज-चित्रण ।' प्रो0 कल्याणमल लोढ़ाक नेतृत्व मे किछु हिन्दीवला सभ अड़गा लगा देने छल जे मिथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि, हिन्दीक बोली मात्र थिक, तें एकरा हिन्दी विभाग मे हेबाक चाही । प्रो0 प्रवोध नारायण सिंह अपन मैथिली प्रेम आ बुद्धिमत्ताक कारणे एकर मुंहतोड़ जवाब देने छलाह । उनतीस मत मे मात्र सातटा हिन्दीक पक्ष मे आ बाँकी मैथिलीक पक्ष मे छल ।

एहि सभक अतिरिक्त मैथिलीक उन्नति विकास मे साहित्यकार लोकनिक अहम् भूमिकाक आदर सम्मान करैत कलकत्ता प्रति वर्ष विभिन्न साहित्यकार के आमंत्रित सम्मानित करैत रहल आ एहन भरिसके कोनो साहित्यकार होथि जे एक ने एक खेप एहि महानगर मे पदार्पण नहि केने

होथि । 1970 मे कलकत्ताक प्रयासे गोड्डा हाइ स्कूल मे दुदिना साहित्यिक कार्यक्रम भेल छल पं0 बुद्धिनाथ झा कैरवक नेतृत्व मे । द्विजवरजी सँ ल कँ किसुन जी धरि भाग लेने छलाह आ दुनू राति कलकत्ताक रंगकर्मी द्वारा नाटक मंचित भेल छल । 'विदित' जीक नेतृत्व मे दुमका मे सेहो आयोजन भेल छल ।

प्रकाशन : प्रकाशनक क्षेत्र मे सेहो कलकत्ता महानगरक भूमिका महत्वपूर्ण रहलैक अछि । प्रकाशनक एहि श्रृंखला मे एकदिस जँ प्राचीन साहित्य अछि त दोसर दिस लोक साहित्य आ फेर आधुनिक साहित्य । परंच एकर कोनो सूची उपलब्ध नहि रहबाक कारणे ठीक-ठीक विवरण देब असंभव । स्मृति सँ जतबा दूर धरि संभव भ पाओत ताहि पर संतोष करय पड़त ।

प्राचीन साहित्य : चर्यापद, वर्णरत्नाकर आ विद्यापति पदावली मैथिली साहित्यक आधार स्तम्भ मानल जाइछ, तें एहि पर पृथक-पृथक किछु बात क लेब आवश्यक ।

चर्यापद : 1907 ई0 मे महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री नेपालक राज-पुस्तकालय सँ एहि पोथीक आविष्कार कएलनि जे 1916 मे प्रकाशित भेल । 'हजार वर्षक प्राचीन बंगला भाषा मे बौद्ध गान ओ दोहा' नामे प्रकाशित ई ग्रंथ सम्पूर्ण नहि रहितहुँ अनुसंधानक एक नव दिगंत उद्भासित उद्घाटित कएलक ताहि मे संदेह नहि । शास्त्री महोदय द्वारा आविष्कृत पोथी मे 'चर्याचर्य विनिश्चय', 'दोहाकोष' एवं 'डाकार्णव' अछि जे एक संग प्रकाशित भेल छल । एहिठाम उल्लेखनीय जे हमरे लोकनि जकाँ बंगला भाषी सेहो एहि पोथी के अपन भाषाक आदि उपलब्ध ग्रंथ मानै छथि । एमहर त हिन्दीवला सभ सेहो बलधिंगरो आरंभ क देने अछि । ओना 'डाकार्णव' क भाषा संदर्भ मे शास्त्री महोदय सेहो संदिग्ध छलाह परंच 'चर्यापद' आ 'दोहाकोष' पर आइयो हिनका लोकनिक दावी अछिए । ओना डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार केवल 'चर्यागीति' टा बंगला थिक अन्य नहि । महापंडित राहुल सांकृत्यायन, के0पी0 जायसवाल, डॉ0 सुभद्र झा, डॉ0 जयकान्त मिश्र आदि एहि समस्त पोथी के मैथिलीक आदि उपलब्ध ग्रंथक रूप से मानैत छथि, जकर रचनाकाल आठम शतक मानल जाइछ । एहि क्षेत्र मे डॉ0 प्रबोध कुमार बागचीक तिब्बती अनुवादक अनुसंधान विशेष महत्वक अछि जे 1938 मे 'जर्नल ऑफ दि डिपार्टमेंट ऑफ लेटर्स' मे प्रकाशित भेल छल । एकर बाद सँ त एकर कतेको संग्रह प्रकाशित भेल अछि ।

वर्णरत्नाकर : अपन नामक अनुरूपे एहि ग्रंथक महत्ता गुणवत्ता आइ विश्वविदित अछि । कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर विरचित तेरहम शताब्दीक ई विशद विलक्षण ग्रंथ ने मात्र मैथिलीक अपितु आधुनिक विश्व भाषाक प्रथम गद्य-ग्रंथ हेबाक गौरव गरिमा सं मंडित अछि । सुनीति बाबू लिखैत छथि - This book seems to have guided the genius of Vidyapati. एहि अमूल्य ग्रंथक आविष्कार उन्नैसम शतीक अवसान वेला मे पं0 हर प्रसाद शास्त्रीक सहयोगी विनोद बिहारी काव्यतीर्थ 'मिथिला' सं कएलनि जकर चर्च शास्त्री महोदय 1901 मे एसियाटिक सोसाइटीक सचिवक नाम अपन Report on the search of Sanskrit Manuscripts मे कएने छथि । कलकत्ता विश्व विद्यालय में मैथिलीक प्रवेशक संगहि एम0ए0 कक्षाक पाठ्यक्रम मे एकरा राखल गेल छल । पोथी प्रकाशित नहि रहबाक कारणे पं0 खुद्दी झा, जे मैथिलीक पहिल प्राध्यापक छलाह, एकर हस्तलिखित प्रति छात्र लोकनि के उपलब्ध करबैत

छलाह । वस्तुत: पोथीक किछु अंश नष्ट भ' जेबाक कारणे एकर प्रकाशन मे विलम्ब भेल । पंडित जी लाख चेष्टा कइयो के एकर नीक आ सम्पूर्ण प्रतिक जोगार-आविष्कार नहि क पओलनि आ अन्ततोगत्वा उपलब्ध ताल पत्रक आधार पर 1940 मे डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी आ पं0 बबुआजी मिश्रक संयुक्त संपादन मे एसियाटिक सोसाइटी सँ एकर प्रकाशन संभव भेल ।

विद्यापति पदावली : जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, सारदा चरण मित्र महोदयक प्रेरणा-प्रोत्साहन आ नगेन्द्र नाथ गुप्त महोदयक श्रम-साधनाक फलस्वरूप विद्यापति पदावलीक प्रथम पूर्णांग संस्करण 1316 साल मे प्रकाशित भेल । पुन: वैष्णव महाजन पदावलीक अन्तर्गत 1342 साल मे एकर दोसर संस्करण दीर्घ भूमिका आ बंगला टीकाक संग प्रकाशित भेल । नगेन्द्र बाबूक श्रद्धा-समर्पण, विचार-विश्लेषणक अद्भूत नमूना प्रस्तुत करैछ ई पोथी जाहि मे ओ समस्त गीत के वन्दना, प्रार्थना, विरह, मिलन, हरगौरी पदावली, गंगा-गीत, प्रहेलिका आदि मे विभक्तकए विवेचन प्रस्तुत कएने छथि । देवनागरी लिपि मे सेहो एकर टीका रहित प्रकाशनक सूचना अछि जे दड़िभंगा महाराजक अर्थ सहयोगें संभव भेल छल । एकर पश्चात् त पदावलीक कतेको संग्रह विभिन्न विद्वानक संपादन मे प्रकाशित भेल अछि जाहि मे विशेष उल्लेखनीय थिक खगेन्द्र नाथ मित्र आ बिमान बिहारी मजुमदारक संयुक्त संपादन मे प्रकाशित 'विद्यापति' जकर नवीन संस्करण देवनागरी मे हिन्दी टीकाक संग 1951 मे प्रकाशित भेल । खेदक बात जे उपरोक्त पोथी द्वयक तुलना मे आइधरि मैथिली मे कोनो संग्रह नहि प्रकाशित भय सकल।

लोक साहित्य : लोक साहित्यक क्षेत्रहुं मे कलकत्ता पछुआएल नहि रहल । अद्यावधि प्रकाशित लोकगीत संग्रह मे प्राय: सर्ववृहत-विलक्षण संग्रह थिक डॉ0 अणिमा सिंहक 'मैथिली लोकगीत' जे 1970 मे लोक साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित भेल । दीर्घ भूमिकाक संग कुल 1137 गीतक संग्रह एहि पोथी मे अछि । ओतबे नहि जनिका लोकनि सँ गीत लेल गेलनि तेहन तिरपन गोटके परिचय सेहो पोथी मे देल गेल अछि जे विशेष तात्पर्य वहन करैत अछि । 1976 मे 'शिखा' पत्रिका लोक कथा विशेषांक प्रकाशित कएने छल जकर विशेष चर्चा 'कर्णामृत'क शारदीय 2002 अंक मे भेल अछि । मिथिला सांसकृतिक परिषद द्वारा 1979 मे प्रकाशित 'अष्टदल' मे आठ गोट कथाक संग्रह भेल अछि । 1983 मे 18 गोट कथाक संकलन-संपादन -प्रकाशन राम लोचन ठाकुर द्वारा 'मैथिली लोककथा' नामे भेल अछि ।

'मिथिला दर्शन' मे प्रबोध बाबूक संकलन 'दीना भद्री' सेहो प्रकाशित भेल छल ।

मैथिली लोकसाहित्यक क्षेत्र मे डॉ0 ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क अवदान सर्वविदिते अछि । विभिन्न लोकगाथाक आधार पर ओ कतिपय उपन्यासक रचना कएने छथि जाहि मे राजा-सलहेस, लोरिक विजय, नैका बनिजारा, रायरणपाल, लवहरि-कुशहरि, दुलरादयाल आदि प्रमुख अछि आ एहि समस्त पोथीक प्रकाशन कलकत्ते सं संभव भेल अछि ।

आधुनिक साहित्य : आधुनिक साहित्य प्रकाशनक क्रम मे एहिठाम हम ओही प्रकाशनक मुख्यत: चर्चा करय चाहब जे कलकत्ताक बाहरक साहित्यकार लोकनिक रचना थिक । कलकत्ताक साहित्यकार लोकनिक चर्च फराक सं हुनक प्रकाशित रचनाक संग हो से नीक ।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, एहिठाम सं शताधिक पोथी प्रकाशित भेल अछि परंच

तकर कोनो सूची उपलब्ध नहि । ओना त एहिठाम संस्थाक संख्या थोड़ नहि आ प्राय: सभ संस्था एकाधटा प्रकाशन केनहि अछि, परंच एहि मे प्रमुख भूमिका रहलैक अछि अखिल भारतीय मिथिला संघ, मैथिली प्रकाशन समिति, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, मैथिली रंगमंच एवं कर्णगोष्ठीक । उपरोक्त संस्था सभ मे एकमात्र कर्णगोष्ठी आइयो एहि प्रकाशन प्रक्रिया के जीवित रखने अछि ।

प्रकाशनक क्षेत्र मे अखिल भारतीय मिथिला संघक अग्रणी भूमिका रहल छैक । ओना त एहि संस्थाक प्रधान कार्य- आन्दोलनात्मक छलैक परंच मैथिलीक मान्यताक लेल साहित्यक सक्कत आधारक प्रयोजनीयता सं ई पूर्ण परिचित छल तें एहि दिशा मे निस्सन डेग उठाओल संभव भेलै । प्रकाशनक लेल एकर सदस्य लोकनि मिथिला दर्शन प्रा0 लिमिटेड नामक संस्थाक गठन केलनि जाहि नामे पोथी प्रकाशनक संगहि 'मिथिलादर्शन' मासिक पत्र प्रकाशित होइत छल । नैमिकानन प्रकाशनक नामे एक आर संस्था सेहो बनाओल गेल छल । एहि संस्था द्वारा ललितक कथा संग्रह 'प्रतिनिध' तथा शिवानन्द चौधरी द्वारा अनूदित कपाल कुण्डलाक दोसर संस्करण प्रकाशित भेल । पश्चात् प्रबोध बाबू लोक साहित्य परिषद नामे आर एक संस्था बनओलनि । एहि सभ संस्था द्वारा पचास सं बेसी पोथी प्रकाशित भेल अछि । आरसी प्रसाद सिंहक पहिल पोथी 'माटिक दीप' मणिपद्मक पहिल पोथी 'विद्यापति' उपन्यास, राघवाचार्यक 'क्रान्तिगीत' राजकमलक 'स्वरगंधा' आ 'आदिकथा' प्रो0 राधाकृष्ण चौधरीक 'शारान्तिधा' प्रो0 हरिमोहन झाक 'चर्चरी' प्रवासी साहित्यालंकारक 'अरुणिमा' प्रो0 मायानन्द मिश्रक उपन्यास 'बिहारि, पात, पाथर', डॉ0 आर0के0 रमणक 'एक आँखि गंगा', हरिशंकर मिश्रक 'कलिंगक राजकुमारी' श्रीमती गौरी मिश्रक 'ठेहिआएल मोन शीतल छाहरि', 'अछिञ्जल', 'टटका-गप', 'चयनिका' कथा-संग्रह आदि एकर प्रमुख प्रकाशन थिक ।

प्रकाशन मे दोसर स्थानक अधिकारी अछि मिथिला सांस्कृतिक परिषद जकर मुख्य उद्देश्य पोथी प्रकाशने छलैक । लगभग पचीस पोथी एहु संस्था द्वारा प्रकाशित भेल जाहि मे मुख्य अछि 'विद्यापति वाङमय' डॉ0 मुनीश्वर झाक 'तापस कवि विद्यापति' विद्यापतिक 'भूपरिक्रमा' मणिपद्मक 'नैका बनिजारा', 'लोरिक विजय', 'दुलरा दयाल', 'फुटपाथ' यात्रीजीक 'बलचनमा', नवीन चौधरीक 'बाट आ बटोही' पं0 कालीकान्त झाक 'मातृ दोहावली' रमानन्द रेणुक 'अन्तहीन आकाश' आदि ।

कलकत्ताक 'कर्णगोष्ठी' विगत तैस वर्ष सं 'कर्णामृत' पत्रक प्रकाशनक संगहि किछु पोथीक प्रकाशन सेहो केने अछि । एहि संस्थाक अध्यावधि प्रकाशित पोथी थिक मणिपद्मक 'अर्द्धनारीश्वर' 'नागभूमि' 'आदिम-गुलाम' एवं 'कनकी' (उपन्यास) तेसर कनियाँ (नाटक) 'फुटपाथ' (नाटचरूप प्रदीप बिहारी) 'अनमिल आखर' एकांकी संग्रह 'अनंग कुसुमा' महाकाव्य आ 'मणिकण' काव्य-संकलन, प्रदीप बिराहीक उपन्यास 'विसूवियस', रमानन्द रेणुक उपन्यास 'उत्तर-जनपद' शंभुनाथ मिश्रक 'मैथिलीक दधीचि बाबू भोला लाल दास', 'साहित्य-रत्नाकार मुंशी रघुनन्दन दास व्यक्तित्व ओ कृतित्व' ललित गीत - संग्रह आदि ।

'मैथिली रंगमंच' नाट्य-संस्था छल । स्वभावत: एकर प्रकाशनक सूची मे नाटकेक पोथी अछि । एकर मुख्य प्रकाशन मे सीताराम चौधरीक 'सुखायल डारि नव पल्लव', बंकिम चन्द्रक

आनन्द मठक नाट्य रूपान्तर, 'बेमातर' इला रानी सिंह अनूदित मर्परि मुखर्जीक 'प्रेम एक कविता।' दीनानाथ झा अनूदित नारायण गंगोपाध्याय क 'आगन्तुक' मोहन चौधरी अनूदित 'चन्द्र गुप्त' आ किरणजीक 'जय-जन्मभूमि' पर आधारित 'सन्तान' नचिकेताक 'एक छल राजा' आ विन्देश्वर मण्डलक 'क्षमादान' अछि ।

कलकत्ताक मैथिली प्रकाशन समिति 'मैथिली प्रकाश' नामे शोध पत्रिका प्रकाशित करैत छल । एकर अतिरिक्त मणिपद्मक 'राजा सलहेस' आ 'लवहरि कुशहरि' उपन्यास आ प्रो0 राधाकृष्ण चौधरीक 'धम्मपद' ई प्रकाशित कएने अछि । ऑल इंडिया मैथिल संघ द्वारा 'बाबू भोला लाल दास' स्व0 राजेश्वर झा व्यक्तित्व ओ कृतित्व, नामक पोथी एवं 'सन्तो' नाटक प्रकाशित भेल अछि । 'मिथिला सांस्कृतिक समिति' द्वारा वृहत्-विलक्षण मधुप स्मृति ग्रंथ 'अमरकीर्ति कवि तोर' आ 'सोम-सतसई' तथा 'मिथिला समाद' द्वारा 'अपूर्वा' प्रकाशित भेल अछि । विद्यापति स्मारक मंच द्वारा प्रकाशित 'कविपति विद्यापति मतिमान' अपना ढंगक विरल ग्रंथ थिक । पं0 शिवनाथ मिश्र 'शिव' विरचित काव्यक संकलन हुनक सुपुत्र गिरीश मिश्र द्वारा 'श्यामा गीताञ्जलि' ओ 'शिवनाथ रचनावली' नामे प्रकाशित भेल अछि ।

लेखन वा कलकत्ताक साहित्यकार : कलकत्ताक साहित्यकारक चर्चाक क्रम मे हम स्पष्ट क देमए चाहैत छी जे हमरा लोकनि मूलतः मैथिल छी, मिथिलाक छी । बंगभूमिक महानगर कलकत्ता आगमन अवस्थान मुख्यतः जीविकोपार्जन लेल अछि । अवसर लेलाक पश्चात् अपन गाम अपन देसकोस घुरि गेनाइ प्रायः निश्चिते । अपवाद त अपवादे थिक । तें एहिठाम हम ओहि समस्त साहित्यकारक चर्च करय चाहब जे दीर्घ वा अल्पकालहुक लेल एहि महानगर मे रहल छथि वा रहि रहल छथि आ हुनक रचना एहि परिवेश सँ प्रभावित प्रेरित भेल अछि । आ एहि क्रम मे जे नाम सर्वप्रथम मन पड़ैछ ओ थिक पं0 जीवनाथ मिश्रक । हिनक लिखल 'मोहिनी-मोहन' उपन्यास 1908 ई0 (सं0 1316) मे कॉटन स्ट्रीटक ठेकाना सँ प्रकाशित भेल छल जकरा मैथिलीक पहिल उपन्यास होएबाक गौरव प्राप्त छैक । अपन लघुकायक अछैतो एहि पोथीक ऐतिहासिक महत्ता के अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ । दुखक बात जे पंडित जीक सम्बन्ध मे विशेष जानकारी उपलब्ध नहि अछि ।

यात्री (1911-1998) : तरौनीक वैद्यनाथ मिश्र के थोड़ लोक जनैत अछि परंच यात्री नागार्जुन के बड़ थोड़ लोक नहि जनैत होएत । ई नाम ओ अपने रखने छलाह अपन स्वभावक अनुरूप । तें हम एकरा उपनाम नहि कहब । कवीन्द्र रवीन्द्र कहैत छथि -

पतन अभ्युदय वन्धुर पन्था
युग - युग धावित यात्री
तुमि चिर सारथि, तव रथ-चक्रे
मुखरित पथ दिन-रात्री ।

एहन जे यात्री तकरा कोनो स्थान विशेषक संग बान्हब उचित केना कहल जा सकैछ ! ओना प्रारंभ मे अपन अध्ययन अध्यापनक क्रम मे ओ किछु दिन कलकत्ता मे छलाह । पश्चात् जड़काला मे प्रायः प्रति वर्ष ओ कलकत्ता अबैत छलाह आ मास-डेढ़ मास रहैत छलाह । दम्माक रोगी हेबाक

कारण एहिठामक जलवायु हुनका लेल हितकर छल । एहि अवधि मे ओ विभिन्न मैथिली आयोजन मे भाग लैत छलाह, मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक संग अड्डा दैत छलाह ओ हुनका लोकनि के प्रेरित प्रोत्साहित करैत छलाह । जाड़क बेरिया मे हमरा लोकनि घंटो धर्मतल्ला मैदान मे बैसि विभिन्न विषय पर गप करैत छलौं; 'पुस्तक-पाड़ा' मे बौआइत छलौं । हमर प्रथम पोथी 'इतिहासहंता'क विमोचन ओ लेक - मैदान मे केने छलाह । नवतुरियाक प्रति हुनक स्नेह सदभाव ककरो सँ नुकाएल नहि अछि ।

कलकत्ताक परिवेश यात्री साहित्ये नहि नागार्जुन - साहित्यो के पर्याप्त प्रभावित कएने अछि जकर अंदाज हुनक साहित्यक मर्मज्ञ सहजहि लगा सकैत छथि । ओना पश्चात् ओ मैथिली थोड़ आ हिन्दी मे बेशी रचना कएलनि, तें एकर विशेष लाभ हिन्दीएक खाता मे जाइछ । कलकत्ताक पृष्ठभूमि मे रचित हिनक 'बालीगंजक ट्राम' 'कइए देलकइ गोल' 'पसेनाक गुणधर्म' आदि विशेष चर्चित कविता अछि । जँ मैथिली मे अपन साहित्यकारक भरण-पोषण ओ ओकर कीर्ति के प्रकाशनक क्षमता रहितैक त निश्चिते ओ अपन मैथिल मानसक रचना हिन्दी के नहि दितथि । अन्त मे ओ किछु बंगला कविता सेहो रचलनि जे राजकमल प्रकाशन द्वारा 'आमि मिलिटरीर बुड़ोघोड़ा' नामे प्रकाशित अछि, हिन्दी-अनुवादक संग देवनागरी लिपि मे ।

राजकमल चौधरी (1929 - 1967) : जन्म रामपुर हवेली, पैतृक महिसी, सहरसाक फुलबाबू उर्फ मनीन्द्र चौधरी उर्फ मनीन्द्र राजकलम उर्फ राजकलम चौधरीक आविर्भाव मैथिलीक संगहि हिन्दी साहित्यो मे उल्का - सदृश भेल जे स्वयं क्षणजीवी होइतहुं अपन स्मृति के हमरा लोकनिक मानस मे चिरंजीवी बना गेलाह । मैथिलीक एहि वरदपुत्रक अवस्थान कलकत्ता मे चारि-पांच वर्ष प्रायः छल 1957 सँ । हिनक 'स्वरगंधा', 'आदिकथा' आ 'आन्दोलन' एही महागनर सँ प्रकाशित भेल अछि । 'स्वरगंधा'क समस्त कविता 1957-58 क रचना थिक । कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे रचित भेल अछि उपन्यास 'आन्दोलन' । उल्लेखनीय जे मैथिली आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे कविता - निबंध छोड़ि आन विधाक रचना प्रायः नगण्य अछि । उल्लेखनीय इहो जे मैथिली मे आइधरि प्रकाशित जे कोनो पोथी सं बेशी चर्चित रहल अछि 'स्वरगंधा' । स्वाभाविक थिक जे राजकलम के बाद द मैथिली कविता सम्यक समीक्षा-समालोचना असंभव । अपन प्रतिभा-तेजस्विताक कारणे ई बहुतोक ईर्षाक पात्र होइतहु यात्रीक सर्वाधिक प्रिय पात्र छलाह । तें विशेष नहि कहि हिनक मादे यात्रीएक कथन के उधृत करैत शेष करैत छी ।

युगवद्ध मिथुन की भावभूमि तुम रस पिच्छल
तुम स्वेद सुरभि हारा जिससे मृगमद परिमल
विम्वग्राही तुम स्वच्छ स्फटिक, तुम प्रभातरल
भासित जिसमे सित-असित, मलिन एवं उज्ज्वल
तुम चर्चाओं के केन्द्रविन्दु, तुम नित्य नवल
इस उस पीढ़ी के लिए विरोधाभास प्रवल
वाहर छलनामय, भीतर-भीतर थे निश्छल
तुम तो थे अद्भुत व्यक्ति, चौधरी राजकमल

प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह (6 दि० 1925) : सहमौरा, सहरसा निवासी प्रबोध बाबू बी0ए0 कए कलकत्ता आयल छलाह आ कलकत्तेक भ के रहि गेलाह । ए – 132 लेक गार्डेन्स मे हिनक अपन मकान छनि । 1950 ई0 मे हिन्दी सँ एम0ए0 केलाक पश्चात् ई आर तीन विषय सँ एम0ए0 एवं शोध कएलनि । वृत्ति रहलनि अध्यापन । कलकत्ता वि0 वि0 मे प्राय: सोलह वर्ष धरि हिन्दीक प्राध्यापक रहि अवसर लेलनि । अध्ययन-अध्यापनक संगहि ई मैथिली आन्दोलनक संग ओत-प्रोत भावें जुड़ल रहलाह । अखिल भारतीय मिथिला संघक नेता, मिथिला दर्शनक संपादक, मिथिला राज्यक कट्टर समर्थक प्रबोध बाबूक प्रकाशित कृति मे 'लसिका' (काव्य-संकलन) 'आजाद हिन्द फौज' (कथा-संग्रह) 'जयन्ती' 'वैजयन्ती' 'हनुमानाष्टक' (काव्य-संकलन) 'हाथीक दाँत' आ 'प्रेमक रोग' (नाटक) 'चोर' आ 'अन्हेर नगरी' (अनु0 नाटक) थिक । कर्तुरल एन हैदरक प्रसिद्ध कृति 'पतझड़ की आवाज' क मैथिली अनुवाद 'पतझड़क स्वर' 2002 मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेल अछि । बहुभाषा विद् प्रबोध बाबूक अनेकानेक शोधपरक निबंध विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशित अछि । एमहर पांच - छ: वर्ष सं ई अस्वस्थ छथि ।

बाबू साहेब चौधरी (1916-98) : दुलारपुर निवासी बाबू साहेब चौधरीक नाम कलकत्ता मैथिली आन्दोलन संग अविच्छिन्न अछि । एक समय मिथिला संघक कर्णधार आ मिथिला दर्शन मैथिली - दर्शनक संपादक बाबू साहेब चौधरीक परिचय सं कलकत्ता परिचित छल । लोक हिनका मैथिली आन्दोलनक नेताक रूप मे जनैत अछि आ मुख्यत: सैह छलाह । परंच बड़ - थोड़ लोक जानैत अछि जे ई नीक रंगकर्मी आ यशस्वी नाट्यकार सेहो छलाह । जीविकाक खोज मे कलकत्ता अएनिहार चौधरी जी प्राइवेट बसक नौकरी सं आरंभ कए मैथिली आर्ट प्रेसक मालिक धरि बनला । मैथिली पोथीक प्रकाशन क्षेत्र मे एहि प्रेसक अवदान-अवस्थान स्मरणीय अछि जतय मैथिली जगतक महान विभूतिक एक ने एक खेप चरण अबस्से पड़ल होएत । चौधरीक लिखल मात्र एक नाटक अछि - कुहेस । दहेज प्रथा पर लिखित प्राय: समस्त नाटक मे एकर स्थान ऊपर छै । डी0एल0राय रचित बंगलाक प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त'क अनुवाद से ई कएने छथि जे पश्चात् 'चाणक्य' नामे प्रकाशित भेल अछि । कहबाक प्रयोजन नहि जे ई दुनू नाटक पर्याप्त लोकप्रिय भेल ।

डॉ0 मुनीश्वर झा : करमौलीक डॉ0 मुनीश्वर झा एहिठाम अध्यापन मे छलाह आ आब अवकाश मे छथि । शिक्षाक क्षेत्र मे ई डी0पी0 आइ0 क पद धरि के सुशोभित क चुकल छथि जे अपने आप मे एक पैघ उपलब्धि थिक । ई मिथिला सांस्कृतिक परिषदक संग जुड़ल रहला आ परिषद द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति वाङमय' क संपादन तथा 'भूपरिक्रमण'क अनुवाद तथा 'तापस कवि विद्यापति' हिनक मौलिक रचना उपलब्ध अछि ।

डॉ0 अणिमा सिंह : प्रबोध बाबूक धर्मपत्नी डॉ0 सिंहक मुख्य कृति थिक 'मैथिली लोकगीत' । एहि पोथीक मादे उपर कहिए आयल छी तें पुरनावृत्तिक प्रयोजन नहि । अपन एहि विलक्षण कृतिक हेतु ई सम्मानित भेल छथि आ स्वर्णपदक सेहो प्राप्त केने छथि । किछु दिन मिथिला दर्शनक संपादन मे सेहो हिनक नाम देखल जा सकैछ । 'स्वर्णिम छाया' नामे हिनक अनूदित उपन्यास (मूल-शिवकुमार जोशी, गुजराती) प्रकाशित अछि । एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिका, स्मारिका मे कतेको निबन्ध प्रकाशित अछि ।

कीर्तिनारायण मिश्र (19 जुलाई 1937) : शोकहरा बरौनीक कीर्तिनारायण मिश्र दीर्घ अवधि धरि कलकत्ता मे छलाह आ वर्तमान मे गाम छथि । 'आखर' सन विलक्षण पत्रिकाक यशस्वी संपादक आ अकविताक प्रवक्ता कवि कीर्तिनारायण मिश्रक 'सीमान्त' 'महानगर' 'हम स्तवन नहि लिखब' 'ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप' (काव्य) तथा अपन एकान्त मे (संस्मरण) प्रकाशित अछि । आखरक संगहि 'आधुनिक मैथिली साहित्य' आ 'राजकमल : जीवन ओ साहित्य'क ई संपादन केने छथि । 'ध्वस्त होइत शान्तिस्तूप' साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत अछि । प्रसन्नताक बात जे मंथर गतिए सही, ई आइयो रचनारत छथि ।

डॉ0 वीरेन्द्र मल्लिक : परसौनी, मधुबनीक वीरेन्द्र मल्लिकक नाम 'आखर' क संपादकक रूप मे कीर्तिनारायण मिश्रक संग देखल जा सकैछ । मैथिली मिनि 'मि' आ 'अग्निपत्र' क सेहो ई संपादन केने छथि आ मुख्यत: कवि होइतहुँ कथा आ निबन्ध सेहो लिखने छथि, परंच दुखक बात जे आइधरि हिनक कोनो पोथी प्रकाशित नहि अछि । अध्यापन वृत्ति सँ जुड़ल वीरेन्द्र जी वर्तमान मे विरामक स्थिति मे छथि ।

रामलोचन ठाकुर (1949) : बाबूपाली, मधुबनी निवासी अधुना कलकत्ता प्रवासी रामलोचन ठाकुर सरकारी सेवा मे छथि । कहियो मैथिली आन्दोलन आ रंगमंच सँ विशेष रूपें जुड़ल, मैथिली मुक्ति मोर्चाक संयोजक रहि चुकल छथि आ कलकत्ताक प्रथम पर्यायक अधिकांश नाटक मे अभिनय क चुकल छथि । हिनक प्रकाशित पोथी अछि- इतिहासहंता, माटि - पानिक गीत, अपूर्वा, देशक नाम छलै सोनचिड़ैया, लाख प्रश्न अनुत्तरित (काव्य), बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य), मैथिली लोककथा एवं प्रतिध्वनि आ जा सकै छी किन्तु किए जाऊ (अनु0 काव्य), जादूगर तथा फांस (अनु0 नाटक) । आजुक कविता नामे समकालीक कविता संकलन-संपादन-प्रकाशन ई केने छथि । रंगमंच, अग्निपत्र आ सुल्फा पत्रक संपादनक संगहि देसिल बयनाक आ 'देसकोसक' किछु अंकक बेनामी संपादन कएने छथि । एकर अतिरिक्त शताधिक कविता कथा, निबंध, हास्य-व्यंग्य रचना विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित अछि । 'चारि पहर' आ 'रिहलसल' अनूदित नाटक मंचित किन्तु अप्रकाशित अछि ।

डॉ0 इला रानी सिंह (1945-95) : प्रबोध बाबूक सुपुत्री इला रानी सिंह एम0ए0पी0एच0डी0, डी0 लिट0 अध्यापन वृत्ति मे छलीह स्थानीय जयपुरिया कालेज मे । किछु दिनक हेतु ई भागलपुर वि0वि0 मे सेहो अध्यापन केने छथि । 'मैथिली लोक-गीत मे समाज चित्रण' पर डी0 लिट केने छलीह, मैथिलीक संगहि हिन्दी मे सेहो लिखैत छलीह । मैथिली मे हिनक प्रकाशित कृति अछि 'विन्दन्ति' काव्य संग्रह । सलोमा तथा विषवृक्ष उपन्यास, प्रेम एक कविता नाटक तथा विभूति भूषण बन्दोपाध्याक मोनोग्राफ अनूदित प्रकाशित अछि । मिथिला दर्शनक संपादन सँ सेहो किछु दिन ई जुड़ल रहलीह ।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' : प्रबोध बाबूक पुत्र आ विख्यात भाषा शास्त्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' संप्रति भारतीय भाषा संस्थान मैसूर मे कार्यरत छथि । मैथिली रंगमंचक अभिनेताक रूप मे नान्हिएटा सं ई परिचित छलाह आ नाट्यकारक रूप मे नवतकनीकक प्रयोगक लेल प्रशंसित । हिनक मुख्य कृति मे कवयो वदन्ति, अमृतस्य पुत्रा: आ अनुत्तरण काव्य संकलन

तथा नायकक नाम जीवन, एक छल राजा, नाटकक लेल, प्रत्यावर्त्तन, रामलीला आ आन्दोलन नाटक प्रकाशित अछि । रवीन्द्रक बाल साहित्यक अनुवाद साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित अछि । मैथिली कविता पत्रक ई संपादन केने छथि आ समकालीन मैथिली कविताक बंगानुवाद जे 'अनुकृति' नामे साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित अछि से हिनके निर्देशन मे भेल अछि । ई बंगला मे सेहो लिखैत छथि आ कएकटा पोथी सेहो प्रकाशित छनि, परन्तु हिनक प्रयोजन मैथिली के बेसी ठीक से ई मन राखथि त नीक ।

कुणाल - अग्निपुष्प : बाबुपालीक शिवनारायण झा आ तरौनीक महेन्द्र झा कलकत्ता आबि 'कु:अ' अर्थात् कुणाल आ अग्निपुष्पक नामे परिचिति लाभ केलनि । 'शिखा' पत्रिकाक संपादक - प्रकाशक रूप मे ई लोकनि वेश चर्चित प्रशंसित रहलाह । हिनका लोकनिक साहित्य-यात्राक आ कुणालक मंच - यात्राक जं कही विधिवत शुभारंभ एहिठाम सं भेल त प्राय: अनर्गल नहि होएत । कुणाल के रंगकर्म दिस झुकाव छलनि आ आई एहि क्षेत्र मे ओ पूर्ण परिचित प्रतिष्ठित छथि । अग्निपुष्प एक खेप 'नसबंदी'क मंच पर उतरल छलाह । 'इतिहसाहंता'क प्रकाशन हिनके लोकनि द्वारा शिखा प्रकाशन सं भेल अछि । समकालीन कविताक प्रखर हस्ताक्षर एहि दुनु कविक एक-एक कविता पोथी 'मीताक नाम' आ 'सहस्त्र बाहु' प्रकाशित अछि । कुणालक चालिस चोर आ 'गोनू झा' एवं 'विदापत' नाटक सेहो प्रकाशित अछि । एमहर कुणाल नाट्य मंच मे व्यस्त छथि परन्तु अग्निपुष्पक कच्छपगति दुखद अछि । वर्तमान मे दुनु गोटे पटना धेने छथि ।

विन्देश्वर मंडल : कारज, दड़िभंगा निवासी विन्देश्वर मंडल बहुत दिन धरि कलकत्ता मे छलाह आ अ0 भारतीय मिथिला संघक संग सक्रिय-छलाह । हिनक उपन्यास 'बाटक भेंट : जिनगीक गेंठ' आ नाटक 'क्षमादान' एतहि सँ प्रकाशित अछि । कलकत्ता छोड़लाक पश्चात् ई प्राय: लेखनी सँ सन्यास ल लेने छथि ।

सुशील : दुलहा, मधुबनी निवासी सुशील एहिठाम बजबज जूट मिल मे कार्यरत छलाह आ वर्तमान मे ओहि सँ मुक्त छथि । हिनक घराड़ी आ गामवाली उपन्यास आ भामती नाटक प्रकाशित अछि । सुशील जी आइयो लेखन सँ विरत नहि भेल छथि ओ विभिन्न पत्र-पत्रिका तथा सम्पर्कक माध्यमें कथाकारक रूप मे अपन उपस्थिति बनओने छथि । 9 दिसम्बर 1980 क मैथिली मुक्ति मोर्चाक आन्दोलन मे बिहार पुलिसक वर्बरताक पहिल शिकार सुशील जीक साहस आ सजीवता प्रशंसनीय अछि।

पं0 कालीकान्त झा : अन्हरा ठाढीक पं0 कालीकान्त झा एहिठाम अध्यापन करैत छलाह आ प्राचीन परिपाटीक नीक कवि छलाह । मिथिला सांस्कृतिक परिषदक संग जुड़ल छलाह । हिनक श्यामा पुष्पांजलि, हनुमान चरित्र, दोहावली मौलिक काव्य तथा कणिका अनुवाद ग्रंथ प्रकाशित अछि । पं0 जयकान्त झा 'श्रुतधर'क 'गीतांजलि'क अनुवाद प्रकाशित अछि ।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक संस्थापक सदस्य, सहज-सरल व्यक्तित्व आ कर्मठताक प्रतीक राजकुमार मल्लिक अपन प्रेस चलबैत छलाह । कठोपनिषद आ स्थितिप्रज्ञ हिनक दू गोट अनुवाद ग्रंथ प्रकाशित अछि ।

प्रभास कुमार चौधरी (1941-1998) : मैथिलीक बहु चर्चित पठित-प्रशंसित कथाकार

उपन्यासकार प्रभास कुमार चौधरीक शेष दू-अढ़ाइ वर्ष कलकत्ता मे बीतल । नौकरी मे कलकत्ता पदस्थापन भेल छलनि । अपन एहि अल्प कालहुँ मे ओ कलकत्ताक अपन लोक बनि गेल छलाह । 1996 क दिसम्बर मे ओ युवा लेखन गोष्ठीक रजत जयन्तीक आ सगर राति दीप जरय कथा-गोष्ठीक भव्य आयोजन केने छलाह । कथा - दिशा'क जे विशेषांक ओ एहिठाम सँ प्रकाशित कैने छलाह, जाहि मे एकाबन गोट कथा संकलित अछि, वस्तुत: अप्रतिम अछि । 'प्रवासी'क शेष दू अंकक संपादन प्रकाशन ओ एहीठाम सँ केने छलाह । अपन विलक्षण व्यक्तित्व आ रचनात्मक सक्रियताक लेल ओ सदा मन राखल जेताह ।

नवीन चौधरी (1954) : हिरनी, दड़िभंगा निवासी कथाकार, उपन्यासकार, अनुवादक आ संपादक नवीन चौधरी, एहिठाम केन्द्रिय सरकारक सेवा मे छथि । हिनक एक मात्र मौलिक कृति 'बाट आ बटोही' उपन्यास प्रकाशित अछि । हिनक अनूदित सिन्धी साहित्यक इतिहास, शाह तलीफक मोनोग्राफ आ सुकुमार सेन लिखित डॉ0 सुनिति कुमार चटर्जीक मोनोग्राफ क अतिरिक्त 'माटि मंगल' साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कएल गेल छनि । ई कएकटा पोथीक संपादन ओ सह संपादन केने छथि । 'अमर कीर्ति कवितोर' हिनक संपादन दृष्टि-शक्तिक दस्तावेज कहल जा सकैछ । एकर अतिरिक्त हिनक दर्जनों कथा, निबंध, यात्रा-संस्मरण विभिन्न पत्र - पत्रिका मे प्रकाशित अछि । पत्र-पत्रिकाक संगहि सम्पर्कक माध्यमे हिनक रचनात्मक सक्रियता देखल जा सकैछ ।

विद्यानन्द झा : कैथिनिया, मधुबनीक विद्यानन्द झा एहिठाम आई0आई0एम0 जोका मे अध्यापन करैत छथि । समकालीन कविताक सशक्त हस्ताक्षर विद्यानन्द जीक प्रथम काव्य-ग्रंथ साहित्य-अकादेमी, दिल्ली द्वारा प्रकाशित भेल अछि । समालोचनाक क्षेत्रहुं मे हिनक उपस्थिति साहित्य अध्येता के सहजहि आकर्षित करैत अछि । पेशागत व्यस्तताक कारणे साहित्य के ई अपेक्षित समय नहि द पबैत छथि फलत: हिनक सर्जनात्मक क्षमताक उपयोग सम्पूर्णता मे नहि भ पबैत अछि जे चिन्तनीय थिक ।

सीताराम चौधरी : चहुटा निवासी सीताराम चौधरीक एहिठाम अपन व्यवसाय छलनि । ओ मैथिली रंग मंचक फाउण्डर अध्यक्ष छलाह आ मूलत: नाटक लिखने छथि । हिनक नाटक सुखायल डारि: नवपल्लव आ बेमातर प्रकाशित अछि । प्रवीण मुखर्जीक 'निस्प्रदीप'क ई अनुवाद केने छथि जे मंच द्वारा मंचित भेल छल । अपन भाषा समाज सँ हठात् हिनक सन्यास दुखद ।

गुणनाथ झा : रैमा निवासी गुणनाथ झा एहिठाम लाइफ इन्सोरेन्स मे कार्यरत छलाह परन्तु स्वेच्छा चाकरी छोड़ि अपन प्रेस स्थापित केलथि । ई मिथियात्रिक नाट्य-संस्थाक मुख्यकर्त्ता छलाह । मैथिली मिनि 'मि' तथा 'लोकमंच'क संपादन केने छथि । हिनक लिखल कनिया-पुतरा, पाथेय, मधुयामिनी, सातम चरित्र, शेष नत्रि आ आजुक लोक नाटक अछि जाइ मे शेष दूटा मंचित/अप्रकाशित अछि । इहो हठात् लेखन विमुख भ गेलाह । हिनक मौन भंग होइन आ ई फेर पूर्ववत लेखन दिस अग्रसर होथि-एखन सैह कामना ।

एहि सभक अतिरिक्त गोनौन, दरभंगा निवासी आ 'कर्णामृत' त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक **राजनन्दन लाल दासक** 'सन्तो' नाटक प्रकाशित आ मंचित भेल अछि । हिनक सक्रियताक संबंध मे बेसी कहबाक भरिसक प्रयोजन नहि । घनश्यामपुर, दरभंगाक **जनार्दन झा** एहिठाम उषा

कम्पना म काज करत छलाह आ अ0 भारताय मिथिला संधक सक्रिय सदस्य छलाह । मंचक चर्चित-प्रशंसित अभिनेता जनार्दन जीक तीनटा नाटक-निष्कलंक, अभिनेत्री तथा अरुणोदय मंचित भेल अछि, मुदा प्रकाशित प्रथमेटा । ई सेवा निवृत्त भ गाम चलि गेलाह । एहने बहुपरिचित रंगकर्मी आ उषाक कर्मी **उत्तम लाल मंडलक** 'इजोत' नाटक मंचित प्रकाशित अछि । मंगरौनीक **देवन मंडल** कुर्मी क्षत्रीय छात्रवृत्ति कोष सं सम्पर्कित छलाह । हिनक लिखल नाटक 'महकारी' मंचित प्रकाशित अछि । परंच जानि ने 'महकारी'क पश्चात् लेखन के महकारी सदृश किएक मानि लेलनि । **शरत चन्द्र मिश्र** मिथिला सांस्कृतिक परिषदक संग छलाह । हिनक 'समाज चक्र' नाटक प्रकाशित अछि ।

एहि क्रम मे एक नाम हम विशेष रूपें उल्लेख करय चाहैत छी से थिक तरौनी, दरभंगा निवासी **नरेन्द्र झाक** । ओ साहित्यकार त शाब्दिक अर्थ मे नहि छथि परंच मिथिलाक आर्थिक दशा-दिशा संदर्भित आलेख जे प्रायः विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहैत छलनि आ पश्चात् पटना निवासक समय जे मिथिलाक आर्थिक विकास नामक पोथी देलनिहें से हमरा जनैत कोनो साहित्यिक कृति सँ कम महत्वक नहि । हिनक-सहधर्मिनी श्रीमती पन्ना झा सेहो निबंधादि पत्र-पत्रिका मे लिखैत छलीह ।

मेहथ निवासी सरस गीतकार सुकंठ गायक एवं कथाकार **सियाराम झा 'सरस'** सत्तरि दशक मे कलकत्ता मे छलाह आ अ0 भारतीय मिथिला संघक बड़ लग छलाह । संघक प्रायः आयोजन के रमनगर आ आकर्षक बनौनिहार सरस जी कँ कलकत्ता कोना बिसरि सकैछ । कलकत्ता प्रबासक समय आ मैथिली आन्दोलनक संपर्क मे सरस जी बहुतो गीतक रचना कएने छथि । हुनक आगूक रचनाकार के कलकत्ता प्रवास कते प्रभावित कएलक से त इएह कहि सकैत छथि । तहिना छलाह एक द्वारिका नाथ चौधरी 'नवीन' । दर्शन मे हिनको किछु रचना छपल छल ।

वीर कवि **राघवाचार्यक** अवस्थान कलकत्ता मे प्रायः बर्ख दिनक छल होएत । मंच सं हिनक काव्य-पाठ सुनबाक सौभाग्य त भेल अछि परंच कलकत्ताक परिवेश प्रभावित रचना संबंध जानकारीक अभाव । वस्तुतः ओहि समय हिनक नब रचना प्रायः देखबा सुनबाक अवसर नहि भेल छल ।

कमलेश झा आन्दोलनीक रूप मे परिचित छलाह । 'मिथिला समाद' पत्रिकाक संपादन प्रकाशनक क्रम मे कहियोकाल एकाध रचनो क लैत छलाह । अमर कीर्ति कवि तांर, सोम सतसई, अपूर्वा हिनके प्रयासे प्रकाशित अछि । एमहर कथा लिखैत छथि आ कथागोष्ठी मे भाग लैत छथि ।

वाल-मुकुन्द वलियासे 'मुकुल' एहिठाम - डाबर कंपनी मे कार्यरत छलाह । हिनक अनेकरास कथा 'मिथिला-मिहिर' आ 'मिथिला-दर्शन' मे प्रकाशित अछि । रामप्रसाद राय 'रत्नाकार' सेहो एक समय कविता लिखैत छलाह आ हिनक लिखल 'बतहा' नाटक 'मैथिली रंगमंच' द्वारा मंचित भेल छल । ई आइयो कलकत्ता मे छथि परंच लेखन विमुख ।

दोसर पर्याय अर्थात् सत्तरि दशकक पश्चात् एहिठाम आर किछु नाटककारक उपस्थिति देखबामे अबैछ जे लोकनि थोड़ बहुत आइयो सक्रिय छथि । एहिमे परजुआरिक **कृष्ण चन्द्र झा**

लिखने छथि । एहि सफल
'रसिक' विवाह एक धंधा, विवाह एक समस्या आ सबध नाटक मे प्रकाशित त पहिलटा अछि परंच मंचित सभ भेल अछि । बड़हाक **अशोक झा** 'मिथिला विकास परिषदक कर्त्ता आ तृणमूल कांग्रेसक नेता छथि, नीक अभिनेता छथि । हिनक लिखल जिबैत लाश, कमउआ पूत आ बीरों मंचित भेल अछि, वीरों छोड़ि दूनू पोथी प्रकाशित अछि । मेंहथ निवासी तरुण **आनन्द कुमार झा** एम्हर तेजी सं नाट्य-लेखन ओ प्रकाशन मे बढ़ि रहल छथि । हिनक पहिल नाटक 'टाकाक मोल' वर्ष दू हजार मे छपल छल । तत्पश्चात् प्रतिवर्ष एकटा पोथी ई दैत छथि । कलह, बदलैत समाज, धधाइत नवकी कनियाँक लहास हिनक आर तीन नाटक मंचित प्रकाशित अछि । हठात परिवर्तन दू खेप मंचित भेलए आ शीघ्रे प्रकाशित होमय जा रहल अछि । ई कथा सेहो नीक लिखैत छथि । सुकण्ठक अधिकारी मधुर गायक **मधुर लाल मंडलक** 'नवजागरण' नाटक मिथिला सेवा संस्थान द्वारा मंचित होएबाक सूचना अछि । कोकिल मंचक निर्देशक **गंगा झा** द्वारा सभागाछी आ खोल नाटक अनुवाद आ मंचन भेल अछि । झंकार नाट्य संस्थाक निर्देशक **शंभूनाथ मिश्र** द्वारा बुड़िबक बेटा टके काबिल' आ कुर्सी खाली अछि प्रहसन लेखन मंचनक सूचना अछि । 'आन्हर' हिनक अनुदित नाटक सेहो मंचित भेल अछि ।

मैथिली मे प्रकाशनक कोनो सुव्यवस्था नहि रहबाक कारणें एकर साहित्य भंडार एहन दयनीय अवस्था मे अछि जँ कही त प्रायः अनुचित नहि होएत । सृजनात्मक मंथरताक सेहो उएह कारण थिक । प्रखर सर्जक लोकनि सेहो प्रायः अपन लेखनी के बेसीकाल विरामक स्थिति मे रखने रहैत छथि आ जेहो किछु लिखाइत अछि से पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल पड़ल रहैछ, पुस्तकाकार प्रकाशन अपवादे स्वरूप भ पबैछ। आधुनिक कथाक जनक रूप मे जानल मानल जाइत **ललितक** मात्र एगारह गोट कथाक संग्रह 'प्रतिनिधि' नामे कलकत्ताक 'नैमिकानन प्रकाशन' सँ प्रकाशित भ सकल । **धूमकेतुक** सेहो तेहने स्थिति जखन कि हिनक चौंतीस गोट कथा उपलब्ध अछि जकर प्रकाशन राजकमल प्रकाशन दिल्ली द्वारा भेल अछि । **राजमकल चौधरीक** अड़तीस कथाक संग्रह सेहो राजकमल प्रकाशन सँ आयल अछि । हुनक जीवन काल मे कतबा प्रकाशित भ सकल से ककरो स नुकाएल नहि अछि । एकरा विडंबना नहि त आर की कहल जाय जे हमरा लोकनि सभा-संस्था करैत छी, मैथिलीक उन्नति-विकासक, मान्यता-मर्यादाक बात करैत छी, परंच तकर आधार जे साहित्ये थिक तकरा बिसरा दैत छी । **विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक** नाम बल पर समस्त युद्ध जय करय चाहैत छी । अस्तु ।

मैथिलीक एहन कतेको साहित्यकार कलकत्ता मे छलाह आ आइयो छथि जिनकर कोनो पोथी उपलब्ध नहि । पत्र-पत्रिका मे यदा-कदा हिनक रचना छपैत अछि कोनो मंच सं हिनक रचना सुनबाक अवसर भेटैत अछि । प्रकाशनक असुविधा के ध्यान मे राखि नवपुरान रचनाकारक रचनात्मक सक्रियता के जीवित जागृत रखबाक उद्येशे एहिठाम लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व 'सम्पर्क'क स्थापना कएल गेल छल जे प्रतिमास दोसर रवि कँ बैसार करैत अछि । एहि बैसार मे रचनाकार लोकनि अपन नव रचना पाठ करैत छथि आ तकर समीक्षा कएल जाइछ । कहियो काल बाहरोक साहित्यकारक उपस्थिति सँ एकर सौन्दर्य-सार्थकता वृद्धि पबैत अछि । किशोरी कान्त मिश्र, राजनन्दन लाल दास, रामलोचन ठाकुर, नवीन चौधरी, गंगा झा, नवोनारायण मिश्र, मिथिलेश झा,

[illegible], आनन्द कुमार झा, आमोद कुमार झा, एहि बैसारक नियमित सदस्य छाथ । पूर्व मे डा0 कालीकान्त झा (आव स्वर्गीय) दयानाथ झा, लूटन ठाकुर, विनय भूषण, अनमोल, अंजय चौधरी आदि सेहो नियमित छलाह, परंच आइ कालि प्राय: अपना के फराक क लेने छथि । एमहर सुशील जी आ लक्ष्मण झा 'सागर' सेहो उपस्थित रहैत छथि ओ कमलजी कहियो काल ।

हिनका लोकनि मे 'प्रवासक भेंटक संपादक **लूटन ठाकुर** बहुत दिन सं कथा-कविता' लिखैत छथि जकर वानगी उपरोक्त पत्रिका मे देखल ज सकैछ । मिथिला सांस्कृतिक परिषदक भूतपूर्व सचिव/अध्यक्ष **किशोरी कान्त मिश्र** साहित्यकार नहि होइतहु साहित्यानुरागी छथि । **राजनन्दन लाल दासक** मादे पहिनहि लिखि चुकल छी । एमहर संपर्कक सितम्बर मासक बैसार मे ओ अपन एगो कविता पाठ केलनिहे । संपर्क मे नाट्यनिर्देशक **गंगा झा** प्राय: अपन हास्य कविताक पाठ करैत छथि आ **नवोनारायण मिश्र** कहियो कथा त कहियो कविता पाठ करैत छथि । हिनक किछु रचना विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशितो भेल अछि । अपन पीढ़ीक प्रखर प्रतिभावान कवि कथाकार **विनयभूषणक** कोनो पोथी नहि छनि, परंच विभिन्न पत्र-पत्रिका मे हिनक रचना प्राय: अबैत रहैत अछि । **मिथिलेशजीक** कथा-कविता सेहो पत्र-पत्रिका मे अबैत अछि आ एमहर हिनका मे पर्याप्त प्रगति लक्ष कएल गेलए । **भारती जी** 'भोरुकवा' बहार करैत छथि आ कथा-कविता निबंधादि लिखैत छथि । **कमलजी** प्राय: गति लिखैत छथि आ नीक गबैत छथि । **आनन्द कुमार झाक** चर्चा हम पहिनहि क आयल छी । **आमोद कुमार झा** प्राय: कविताक संग संपर्क मे उपस्थित रहैत छथि । **अनमोलक** कथा-कविता विभिन्न पत्र-पत्रिका मे देखल जा सकैछ । **सागरजी** लिखैत त बहुत दिन सं छथि परंच हिनको कोनो पोथी नहि छनि । बीच मे किछु दिन ओ कलकत्ता सं बाहर छलाह । संपर्कक सम्पर्क मे **देवीकान्त मिश्र** आ **अर्जुनलाल करणक** उपस्थिति सेहो कहियो काल देखल जा सकैछ । देवीकान्त आ **अंजय चौधरी** लेखनक प्रयास मे रहैत छथि आ 'कर्णामृत'क प्रधान संपादक **अर्जुन वावूक** कतिपय रचना कर्णामृत मे देखल जा सकैछ । राष्ट्रीय पुस्तकालय मे कार्यरत **गोविन्द सरहदी** सेहो नीक कविता लिखैत छथि परंच पाठ-प्रकाशन मे अभिरुचि थोड़ छनि । एक नाम जे एखन धरि बाद रहल से थिक मैथिलीक ललित गीतकार **बुद्धिनाथ मिश्रक** । इहो बहुत दिनधरि कलकत्ता मे छलाह परंच एहि अवधिक तेहन कोनो रचनात्मक उपलब्धि हमरा स्मरण नहि भ पाबि रहल अछि । सत्तरि दशकक पूर्वार्ध मे किछु दिन लेल **सुभाष चन्द्र यादव** आ ताइ सं बेसी दिन लेल सुकान्त एहिठाम छलाह । अग्निपत्रक संपादक मे **सुकान्त** सोमक नाम आ किछु रचना देखल जा सकैछ ।

संक्षेप मे इएह थिक मैथिली साहित्यक विकास मे कलकत्ताक योगदान । ओना एहि मे किछु व्यक्तिक नाम छुटि गेल हो, कोनो विशेष कार्यहुक नाम छुटि गेल हो त से असंभव नहि । तकर तात्पर्य ई कित्रहु नहि जे ओहि व्यक्ति वा कार्यक प्रति हमरा सम्मान भाव नहि । हमरा लेल त ओहो सम्माननीय छथि जनिक एको आधटा रचना मातृमंदिर मे अर्पित भेल अछि । आग्रह जे हमर भूल-त्रुटिक सूचना देल जाय जाइ सँ आगाँ ओकर मार्जना भ पाबय । इति ।।

(2003)

पत्रकारिताक क्षेत्र मे कलकत्ताक योगदान

पत्रकारिताक इतिहासक अभाव नहि । वस्तुत: जं अभाव अछि त एकर आरंभक मादे मतैक्यक । जे हो 901 ई0 सँ चीन मे समाचार पत्र प्रकाशनक बात कहल जाइछ, जखन कि प्रेसक आविष्कारो नहि भेल छल । स्वभावत: चीन के समाचार पत्रक जन्मस्थान मानल जाइछ । भारत मे सर्वप्रथम 1780 क 29 जनवरी सँ जेम्स ऑगस्टस हिकीक प्रयासें आ हुनकहि संपादन मे अंग्रेजी भाषाक साप्ताहिक 'बंगाल गजेट' क प्रकाशन कलकत्ता सँ आरंभ होइछ । भारतीय भाषा मे सेहो सर्वप्रथम कलकत्ते सं बंगला मे 'बंगाल गजेट' नामक साप्ताहिकक प्रकाशन 1818 ई0 सं आरंभ होइछ राजा राम मोहन रायक प्रसाये । मैथिली पत्रकारिताक शुभारंभ होइछ 1905 ई0मे, मुख्य भूमि मिथिला सँ बाहर सुदूर राजस्थान प्रदेशक जयपुर नगरी सं । अर्थात् मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशन आरंभ होइछ 1905 में जयपुर सं, जयपुरक राज पंडित विद्या वाचसपति मधुसूदन झा तथा अलबर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश पं0 रामभद्र झा, एम0ए0 क प्रसाये हुनके लोकनिक संपादन मे । पत्रकारिताक क्षेत्र मे कलकत्ताक प्रवेश होइछ जनवरी 1953 मे मिथिला दर्शनक संग ।

मैथिलीक वर्तमान दशाक लेल हमरा लोकनि स्वयं दायी छी । वस्तुत: हमरा लोकनि मे भाषा चेतनाक पूर्ण अभाव छल आ आइयो अछि । 1939 मे शिक्षा निर्माण कमिटि, जाइ मे डा0 अमर नाथ झा, डा0 राजेन्द्र प्रसाद छलाह, अपन पूर्ण अधिवेशन मे सर्वसम्मति सं मैथिली भाषी नेनाक लेल सातम कक्षाधरि मैथिलीक माध्यमे शिक्षाक निर्णय लेने छल, परंच जानि ने 1940 मे तकरा केना बदलि मैथिलीक स्थान पर हिन्दी क देल गेल । मैथिली भाषी मे एकर कोनो प्रतिक्रिया नहि भेलैक । स्वाधीनताक पश्चात् बिहार प्रदेश के हिन्दी भाषी राज्य घोषित क देल गेल तैयो कोनो प्रतिक्रिया नहि । सत्य कही त मैथिलीक बुद्धिजीवी समुदाय दोगला राष्ट्रप्रेमक भावना मे तेना ने भसिआइत छलाह जे राष्ट्रप्रेमक नाम पर हिन्दी भक्ति के सर्वोपरि मानि मातृभाषाक महत्ता के पूर्णत: बिसरा देने छलाह । हिनका लोकनि मे सं अधिकांशक आंखि खुजलनि 1951क जनगणनाक रिपोर्ट स, जाइ मे मैथिली भाषीक जनसंख्या केवल 97,685 देखाओल गेल छल । स्मरणीय जे पराधीन भारतक 1931 क जनगणनाक अनुसार मैथिली भाषीक संख्या छल 1,42,75,000 आ 1911 क अनुसार 1,11,00,000 । परिणामत: मैथिली जगत मे चहल पहल देखल गेल आ मैथिली आन्दोलनक एक नवारंभ भेल । विद्यापति स्मृति पर्व एहि आन्दोलनक प्रभावी मंच प्रमाणित भेल । ओना कलकत्ताक बात भिन्न छलै । एहिठाम 1919 ई0 मे प्रात: स्मरणीय ब्रजमोहन ठाकुरक प्रयासें कलकत्ता विश्वविद्यालय मे एक आधुनिक भारतीय भाषाक रूप मे मैथिली के मान्यता भेटि चुकल छलै । 1945 ई0 मे अ0 भा0 मैथिल संघक निर्माण भ चुकल छलै आ मिथिला मैथिलीक प्रतिष्ठाक आन्दोलन चलि रहल छलैक । अपन निबंध साहित्य सर्जनाक समस्या मे आचार्य प्रवर रमानाथ झा लिखैत छथि - 'कलकत्ता मैथिलीक हेतु सिद्धपीठ जकाँ तीर्थस्थान थिक । जँ कलकत्ता मैथिलीकेँ स्थान नहि देने रहितए तँ बिहार मे मैथिली उपेक्षित रहितए ।' कहबाक प्रयोजन नहि जे कलकत्ता के तीर्थ स्थानक गरिमा प्रदान करवाक पाछा एक नहि अनेको लोकक अवदान अछि

जाइ मे मैथिल संतानक संगहि बंग संतानोक संख्या थोड़ नहि । हमर गौरव ग्रंथ 'वर्णरत्नाकार'क प्रकाशन एहिठाम सं 1940 ई0 मे भाषाचार्य सुनीति कुमार चटर्जी आ बबुआ मिश्रक संयुक्त संपादन मे भेल अछि । 1935 मे नगेन्द्र नाथ गुप्तक दीर्घ तपस्याक फलस्वरूप कविपति विद्यापतिक प्रायः समस्त पदक संग्रह प्रकाशित भेल छल । एहिठाम नाम गनाएब हमर अभीष्ट नहि । हमर विषयो से नहि थिक । ओनहुना मैथिली नाट्य-मंच सं आन्दोलन धरिक पाथेयक ओरियान अपन पेट काटि कएनिहार कल करखानाक लाख-लाख श्रमिक, ठेला-रिक्सा चलौनिहार मैथिल संतानक नामोल्लेख संभवो नहि । ई त मात्र श्रद्धा स्मरण । कहबाक ई अछि जे मैथिली आन्दोलन मे कलकत्ताक अग्रणी भूमिका रहलैए आ पत्रकारिताक आरंभ सेहो एहि पृष्ठभूमि मे होइत अछि ।

1. मिथिला दर्शन : जनवरी, 1953 सं प्रो0 प्रबोध नारायण सिंहक संपादन मे आरंभ होइछ 'मिथिला दर्शन' मासिक पत्रक प्रकाशन । मिथिला राज्य निर्माण ओ मैथिलीक राजनैतिक मान्यताक प्रबल प्रवक्ता, मैथिल संघक नेता प्रबोध बाबूक संपादन मे प्रकाशित होइवला पत्रिकाक स्वर स्वाभाविके आन्दोलनात्मक छलैक । जं कने आर फरिछाक कही त आन्दोलन के स्वर दंबाक उद्देश्यहि एहि पत्रक प्रकाशनक पृष्ठभूमि छैक । कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली आन्दोलन लेल जातीय चेतना ओ एकताक प्रयोजना सभसं पहिने । दुर्भाग्य सं मैथिल महासभाक संकीर्णता वा षड्यंत्र एहि एकता के विनष्ट क चुकल छल जकर कुफल हमरा लोकनि के आइयो भोगय पड़ि रहल अछि । मिथिला दर्शन समस्त मैथिली भाषी के समेटबाक सम्यक प्रयास कएलक आ मिथिलाक छी, मैथिल छी नारा के बुलन्द कएलक । महासंघक मैथिलक परिभाषाक विरुद्ध स्वयं प्रबोध बाबू ध्रुवतारा सन अडिग आ भास्कर छलाह । प्रत्यक्षक प्रमाण की ? एहि संबंध मे मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे आदरणीय अमर जी लिखैत छथि - 'एखन धरिक मैथिलीक पत्रक इतिहास मे ई पहिल संपादक भेलाह जे ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थ सं अतिरिक्त वर्गक छलाह । एहि सँ अन्य वर्ग मे पसरल मैथिल शब्दक भ्रान्त धारणाक आंशिक रूप मे परिहार सेहो भेल ।'

मिथिला दर्शनक उद्‌बोधन वाक्य छल कविवर सीताराम झाक –

'अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने,
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने'

स्वभावतः दर्शन मे आन्दोलनात्मक रचनाक प्रधानता रहैत छलैक, परंच साहित्यक श्री वृद्धि ओ साहित्यकारक निर्माणों मे एकर भूमिका महत्वपूर्ण रहलैए । एकर कतिपय कथा विशेषांक तथा कविवर सीताराम झा स्मृति अंक ओ मैथिली दधीचि भोला लाल दास आ राजेश्वर बाबू स्मृति अंक विशेष उल्लेखनीय अछि, जे वस्तुतः मैथिली दर्शनक थिक ।

पत्रिकाक अवलोकन सं ज्ञात होइछ जे एकर संपादक बीच-बीच मे बदलैत रहल छथि । 1957-58 मे पं0 दिनेश झा शास्त्री तथा पं0 श्री परमानन्द झाक नाम संपादक मे देखल जाइछ । दिसम्बर 1958 सं प्रो0 प्रबोध नारायणसिंह तथा हुनक विदुषी पत्नी श्रीमती अणिमा सिंहक नाम संपादक मे अछि आ फेर 1968 सं अणिमा जीक स्थानपर श्रीमती इला रानी सिंह छथि आ फेर सितम्बर 1973 सं असगरे बाबू साहेब चौधरी । जुलाई, 1974 सं पत्रिकाक नाम भ जाइछ 'मैथिली दर्शन' आ संपादक श्री बाबू साहेब चौधरी । ओना पत्रक रूप गुण मे कोनो परिवर्तन

परिलक्षित नहि होइछ । एहि तरहें मार्च-अप्रील 1981 धरि ई पत्रिका देर सबेर प्रकाशित होइत रहल आ अखिल भारतीय मिथिला संघक मुखपत्रक रूप मे आन्दोलनक स्वर कें मुखरित करैत रहल । एहि समय धरि आबि चौधरी जी लचरि गेल छलाह आ संघक सेहो नामेटा रहि गेल छलै । स्वभावतः पत्र बन्न भ गेल ।

2. मिथिला सेवक : अखिल भारतीय मैथिल संघ दिस सं साप्ताहिक पत्र 'मिथिला सेवक'क प्रकाशन आरंभ होइछ 2 जनवरी 1954 सं । एकर संपादक पं0 सभाकान्त झा आ प्रकाशक छलाह श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' । जेना कि अमरजी अपन इतिहास मे लिखैत छथि, एहि पत्रक लेल एक बर्खक कागतक मूल्य अगाउ देने छलाह पं0 वीरदत्त मिश्र नामक कोनो मातृभाषानुरागी । एकरो स्वर आन्दोलनात्मक छलै आ मैथिलीक संगहि मिथिला राज्यक सेहो ई समर्थक छल । एकर प्रथम अंक अमर अंकक रूप मे डा0 अमर नाथ झा पर केन्द्रित छल । ओना डा0 झा मिथिला राज्य निर्माणक विरोधी छलाह आ हुनक लेख 'भाषाक आधारपर प्रान्तक माँग सम्प्रति अनुचित' के ई पत्र प्रमुखताक संग प्रकाशित केने छल जकरा अमरजी स्वस्थ पत्रकारिताक गुण कहैत छथि । ओना हमरा जनैत ओहि समय मैथिली मे स्वस्थ पत्रकारिताक नहि मैथिलीक पक्षधरताक प्रयोजन छलैक आ कलकत्ताक पत्रकारिताक पृष्ठभूमिओ सैह छलै । ओना हुना एहि पत्र मे हिन्दीक आलेख सेहो छपैत छल । एहि पत्रक आयु चारि बर्खक छलैक । 1957 मे मिथिलेन्दु जी लोक सभाक चुनाव मे बाझि गेलाह आ पत्रिका बन्न भ गेल । एहिठाम लिखि देब आवश्यक जे एहि पत्रक कोनो टा अंक देखबाक सौभाग्य हमरा नहि भ सकल आ हमर सूचनाक आधार अमर जीक 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' अछि । वस्तुतः 1981 मे प्रकाशित एहि ग्रंथ मे अस्सी पूर्वक प्रायः समस्त पत्रिकाक उल्लेख अछि । विचार लेखकक अपन छनि आ ई आवश्यक नहि जे ओहि विचार सं सभ केओ सहमत हेबे करथि ।

3. आखर : दीपावली, 1967क अवसर पर प्रकाशित होइछ आखरक प्रथम अंक कीर्ति नारायण मिश्र आ वीरेन्द्र मलिल्कक संयुक्त संपादन मे । संपादक द्वयक अतिरिक्त एकर प्रकाशनक पृष्ठभूमि मे छलाह पीताम्बर पाठक आ राजनन्दन लाल दास । पत्रक संबंध संपादक लिखैत छथि- 'हमर जे सुषुप्ति भाषाकेर निर्वासनक कारण बनल सैह सुषुप्ति साहित्योके रुढ़ संस्कार ग्रस्त, ह्रासोन्मुख तथा पुंसत्वहीन बना देलक ।'

'आखर नवजागरणक प्रतीक बनि सकय तें एकरा एख हाथ मे भाषा - आन्दोलनक ध्वज दण्ड तथा दोसर हाथ मे साहित्य लेखनक कलम देल गेल अछि - ई हमर दावा अथवा घोषणा नहि- मात्र अदम्य संकल्प । तें आखर परिवारक सदस्य आखर कें अपन जीवन-मरणक प्रश्न बुझैत छथि । स्वस्थ आन्दोलन 'उत्कृष्ट लेखन तथा जीवन्त परम्परा स्थापना आखरक अभीष्ट ।' कहबाक प्रयोजन नहि जे संपादकीय संकल्प पाठकोक मानस मे एक नव आशा विश्वासक सृजन कएने छल आ एहि पत्रक नीक स्वागत भेल छलैक । ओना जीवन मरणक बात मे अतिशयोक्तिक प्रमाण एकर अल्पायु होएबे थिक । वास्तव मे मैथिली मे जं एहन संकल्पी लोक भेल रहितथि त एकर दोसरे दिन रहितैक । से जेहो, मुदा मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे आखर एक मीलक पाथर सदृश स्मरण कएल जायत । एकर कुल बारह अंक प्रकाशित भेल जाहि मे सातम-दसम

अंक राजकमल स्मृति अंक क रूप मे विशेष उल्लेखनीय अछि ।

मैथिलीक अन्यान्य पत्रिका जकां आखर सेहो मासिक होइतहुं समय सं नहि बहार भ पबैत छल आ कतिपय संयुक्तांकक रूप मे प्रकाशित भेल अछि, परंच एकर स्वर स्वरूप निश्चिते अपन पूर्वक पत्र सं भिन्न छलैक आ नव लेखनक प्रतिष्ठा मे एकर भूमिका महत्वपूर्ण छलैक । एहि संबंध मे अमर जी लिखैत छथि – 'नवलेखनक स्थापना मे आखर सब सँ महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कयने अछि । एहि संगहि मैथिलीक न्याय्य माङक पूर्तिक हेतु एकर स्वर बहुत सशक्त छलैक । एही दुइ गोट काजक हेतु मैथिली पत्रकारिताक इतिहास में आखर अपन विशिष्ट स्थान बना चुकल अछि ।'

4. मैथिली कविता : नचिकेताक संपादन मे विशुद्ध काव्य पत्र त्रैमासिक मैथिली कविता क आरंभ होइछ अप्रील 1968 मे । एकर मुद्रक प्रकाशक छथि श्रीमती इला रानी सिंह । मैथिली पत्रकारिताक इतिहास के देखैत एहि तरहक पत्रिका प्रकाशनक परिकल्पना --- प्रयासक जतबा प्रशंसा कएल जाय, थोड़ होयत । कविताक कलापक्ष किंवा वैचारिक पक्ष पर मतपार्थक्य भ सकैछ । वस्तुत: ई एक गोट अभिनव प्रयास छल जे कलकत्ते सँ संभव भेल ।

मैथिलीक संग विडम्बना रहलैए जे ई भनहि बाद पड़ि जाओ एहि मे वाद क अभाव नहि । नचिकेताक प्रथम काव्य संकलन 'कवयो वदन्ति' क संग जन्म लैछ नवचेतनावाद । पोथीक आमुख मे प्रबोध बाबू लिखैत छथि - 'काव्यक क्षेत्र मे प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नव कविता एवं अ-कविता आदि भाषा भाव तथा शिल्पक दृष्टियें मैथिली साहित्य के यथेष्ट समृद्ध केलक । जीवन आं यथार्थक स्पन्दन सँ साहित्य प्राणवंत भ उठल ।....एक मार्गक पश्चात् दोसर मार्गक सन्धान हैत गेल, किन्तु गन्तव्य विन्दुक निर्धारण नहि भ सकल । बुझना गेल जेना उत्तेजना, तीव्र प्रतिक्रिया तथा आक्रोश मैथिल समाजक प्रकृति मे पूर्ण पर्यवसान नहि प्राप्त क सकल हो । तैं, वर्तमान वर्षक आरंभहि सँ मैथिली साहित्य मे चेतन पीढ़ीक रचयिता लोकनि नव चेतानावादी काव्यक जे शंखनाद केलन्हि ओ विशेष महत्वक वस्तु मानल जा रहल अछि । ओही सँ नव चेतना वादी युगक प्रादुर्भाव मानल जा सकैछ । नव चेतनावादी काव्यक सबसँ प्रथम एवं देदीप्यमान ज्योति-स्तम्भक रूप मे श्रीयात्रीक नाम लेल जा सकैछ । किन्तु एहि धाराक सर्वाधिक तथा सर्वांगीण प्रतिनिधित्व करैछ श्री नचिकेताक प्रस्तुत काव्य संग्रह 'कवयो वन्दन्ति' । कहबाक प्रयोजन नहि जे ई पोथी श्री यात्री के समर्पित अछि । पत्रिकाक संबंध मे संपादक लिखैत छथि - मैथिली कविताक बहु विधोषित उद्देश्य अछि नपुंसकता, निराशा, सड़ल आक्रोश संस्कार हीनता (अश्लीलता) एवं देश-द्रोहक उन्मूलन आ प्राचीन तथा नवीनक स्वस्थ समनव्यक आधार पर स्थापित नवचेतनावादी साहित्यक प्रतिष्ठा ।' घोषणा भनहि जे हो परंच एहि पत्र मे मधुप, सुमन यात्रीक संगहि धूमकेतु, रेणु आ दोषीक कविता सेहो छपैत छल । संपादकीयक बदला शेष मे छपैत छल दृष्टिपात.... । मूल मैथिली कविताक संगहि अनुवाद के सेहो प्रमुखता देल जाइत छल । एवम् प्रकारे छ अंक प्रकाशित भ इहो पत्र सदा सर्वदाक लेल बन्न भ गेल ।

5. मैथिली प्रकाश : मैथिली प्रकाशन समितिक तत्वावधान मे 1968 सं आरंभ होइछ अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'मैथिली प्रकाश' । एकर संपादक मंडल मे श्री इन्द्र गोविन्द झा, श्री जयकान्त झा 'श्रुतधर', श्री मदन चौधरी एवं श्री श्यामानन्द पाठक छलाह । पश्चात् एहि मे विभिन्न

विधाक रचना छपय लागल आ यदा-कदा शोध विशेषांक सेहो छपेत रहल । 11 सितम्बर 1972 ई0 सं चतुर्मासिक आ फेर दिसम्बर 1975 सं मासिक रूप मे प्रकाशित होमय लागल । एही अंक स श्यामानन्द पाठकक स्थान पर संपादक मंडल मे श्री सुरेन्द्र मिश्रक नाम देखल जाइछ । उपलब्ध अंकक आधार पर सितम्बर 1977 दिसम्बर 1978 धरि ई पत्र कोनहुना चलैत रहल आ वर्ष 11 - 12 क अंक 36 - 38 एकर शेष अंक भेल । ओना एक आर अंक हमरा लग अछि जाहि मे मास वर्ष अंकक कोनो उल्लेख नहि । 87 - 88 क प्रकाशन समितिक सदस्यक सूची एहि मे रहबाक कारणें एकरा 88 क प्रकाशन मानल जा सकैछ जकर संपादक डा0 बुद्धिनाथ झा आ श्यामानन्द पाठक छथि ।

शोध पत्रिकाक रूप मे मैथिली प्रकाशक नाम निश्चिते आदरक संग लेल जायत कारण मैथिली मे एहनो पत्रिकाक अभाव रहल अछि । यद्यपि एकर कतिपय आलेख विशेष विवाद के सेहो जन्म देने छल परंच तकरा अपवादे मानल जेबाक चाही । एकर अंक 8-9, 14, 21, 22, 35, 36 आदि निश्चिते विशेष महत्वक अछि । ओनहुना पत्रिकाक स्तर त रचनापर निर्भर शील अछि आ रचना लेल दायी छथि लेखक । स्तरीय रचनाक अभाव मे एहि सुचिन्तित शोध पत्रक बन्न भ जायब सरिपहु दुखद ।

6. लोक मंच : सितम्बर-अक्टूबर 1969 मे आरंभ होइछ मैथिली नाट्य ओ मंच विषयक पत्रिका 'लोकमंच' क । एकर संपादक प्रकाशक छथि गुणनाथ झा । आधुनिक नाट्य मंचक विकास मे कलकत्ताक अवदान अविस्मरणीय आ एहि अवदानक पाछा जे लोकनि छलाह ताहि मे गुणनाथ झाक नाम आदरक संग लेल जायत । नाट्य मंचक सार्विक विकास के ध्यान मे राखि एहिठाम नाट्यानुवाद, लेखन, प्रकाशन मंचन होइत रहल आ एही क्रम मे आरंभ भेल छल एहि तरहक पत्रिकाक । नाट्यमंच संबंधी चिन्तन-चेतनाके उजागर करब भेल एकर प्रधान उद्देश्य । प्रवेशांकक संपादकीयक किछु अंश देखल जाय - 'मैथिली साहित्यक आन-आन विधाक अन्तर्गत नाटक आर उपेक्षित, परंच कखनौ एहनो समय ऐल छल एकर जीवन मे जेकरा इतिहासकार नामांकित कएलनि नाट्य-युग कहि । हमरा लोकनिक वैह उत्कृष्ट लोक-नाट्य कीर्तिनियाँ नाटक जेकर प्रभाव सम्पर्कित सभ भाषाक नाट्य साहित्य पर पड़ल छैक, ताहि स्वर्णिम परम्पराक स्मृति मात्र आइ अवशिष्ट अछि । फेर काल्हि एकरौ बिसरि जैब । मुदा, मैथिली भाषी के एतेक मन राखब परमावश्यक जे कोनो समाज संस्कृतिक मूल स्वरूप होइछ ओकर लोकगाथा, लोकगीत ओ लोकनाट्य । एकरा बिसरि जेबाक अर्थ होइछ अपन अस्तित्व के अपनहि अस्वीकृत करब ।'

उपरोक्त अंक मे 'पाथेय' नाटकक संबंधं किछु मतामतक अतिरिक्त प्रो0 रमानाथ झाक मैथिली नाटक ओ मंच, मन्मथ रायक बेर्ट्रल्ट ब्रेश्ट, डा0 लेखनाथ मिश्रक आधुनिक मैथिली नाटक ओ रंगमंच, शम्भुमित्रक नाट्य ओ मिथिला, बीरू मुखोपाध्यायक वर्तमान बांग्ला नाटक ओ ओकर गतिविधि, प्रवीर मुखोपाध्यायक वर्तमान मैथिली नाटक ओ ओकर प्रदर्शन, विश्वम्बर ठाकुरक मैथिली नाटक आ मिथिला कला केन्द्र आदि निबंधक संगहि गुणनाथ झाक नाटिका 'मधुयामिनी' प्रकाशित भेल अछि । एकर दोसर आ शेष अंक प्रकाशित भेल फरवरी 1974 मे, जाहि मे डा0 परमेश्वर मिश्रक मैथिली मे धार्मिक नाटक, डा0 अशर्फी झाक मिथिला एवं मैथिली नाट्य मंच,

विश्वम्भर ठाकुरक मिथिला कलाकेन्द्र निबंधक अतिरिक्त समपादकीय मे एक सामयिक प्रसंग : मैथिली पत्रिका, नाटक आ नाट्याभिनय, तथा गुणनाथ झा लिखित 'सातम चरित्र' नाटिका प्रकाशित अछि ।

7. मि : मइ 1970 मे वीरेन्द्र मल्लिक आ गुणनाथ झाक संयुक्त सम्पादन मे मिथियात्रिक नाट्य संस्था दिस सं प्रकाशित भेल विश्वक सर्वप्रथम मैथिली मिनिपत्र 'मि' । एहि मे संदेह नहि जे ई अपना ढगक पहिल पत्र छल जकर आकार 10/6 सेंटि मिटर छलैक । स्वभावत: रचनाक आकारो तदनुरुपे । कथा कविता, नाटक, निबंध सभ एहि मे छपैत छल । पहिल अंक मे प्रकाशित जीवकान्तक कविता-

खबरदार ! औ बूढ़
दूनू हाथ उठाउ
फटाक !!!

आ दोसर अंक जे कि अक्टूबर 1970 मे प्रकाशित भेल छल, मे प्रकाशित सोमदेवक कविता -

श्रीमान् आँखि महाराज के तीनटा कान
साँप के ओना एक्केटा
- औ मनुक्ख अपनेक दाँत मे
जीभ कोना जनमि गेल ?
आ धूमकेतुक -
की........यौ
यै.........ह ?
आ.......धा........छीं

वेश चर्चित भेल छल । दोसर अंक एकर शेख अंक छल ।

8. अग्निपत्र : फरवरी, 1973 सं आरंभ होइछ मैथिली युवा लेखन संकलन 'अग्निपत्र'क । एकर संपादक वीरेन्द्र मल्लिक आ सहयोगी सुकान्त सोम आ रामलोचन ठाकुर छथि । एहि मे संपादकीय नहि रहैत छल, रहैत छल अग्नि जीवी लेखकक अपन वक्तव्य । विडम्बना एहन जे सोमदेव, वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुरक संग पराशर सेहो अग्निजीवीक रूप मे आविर्भूत भेल छथि । अपन अभिनव आकर्षक रूप आ स्तरीय रचनाक रहितो एहि मे वैचारिक एकतानताक अभाव स्पष्ट परिलक्षित होइछ । प्रथमे अंक मे 'जाति उपजातिक जहल मे बन्द मैथिली' कहैत छथि सोमदेव त जीवकान्तक अनुसार 'मैथिली नवलेखन : पाखंड लेखन' थिक । वीरेन्द्र मल्लिक मैथिली नवलेखन के मिथिलाक अशिक्षा गरीबी, शोषण आ भूखक लेखन कहै छथि । जेहो, अपन आकर्षक रूप आ रचनाक विविधता ओ स्तरीयताक कारणे एकर नीक स्वागत भेल छल आ केओ केओ त एकरा आखरक परम्परा मे उठाओल गेल निस्सन डेग कहने छथि । एहि अभिनव प्रयास मे संपादक लोकनिक अतिरिक्त श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी, रत्नाकर, देवेन्द्र झा, अर्जुन लाल करण, राज कुमार मल्लिक, प्राण सिन्हा आदिक सहयोग स्मरणीय ।

फरवरी 1973 सं नवम्बर 1974 धरि एकर कुल सात गोट अंक प्रकाशित अछि जाइ मे अंक 3-4 आ 5 - 6 संयुक्तांक अछि ।

जून 1976 सं नव स्वर-स्वरूपक संग प्रकाशित होइछ अग्निपत्रक आठम अंक रामलोचन ठाकुरक संपादन मे । ताम-झाम रहित वैचारिक दृढ़ता, एकतानता ओ लोकोन्मुखी स्तरीय रचना एकर विशेषता छल । एहि तरहें मार्च 1979 धरि एकर आर पाच गोट अंक प्रकाशित भेल । मार्च 1980 मे फेर एकखेप डा0 वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम आ रामलोचन ठाकुरक संपादन मे प्रकाशित होइछ अग्निपत्र नव क्रमांक एक । फेर नयनाभिराम पत्र आ एही संग ई इतिहासक गहवर मे समाहित भ जाइछ ।

9. रंगमंच : कलकत्ताक प्रसिद्ध नाट्य संस्था मैथिली रंगमंच, दिससं नाट्य-मंच विषयक पत्रिका 'रंगमंच'क प्रकाशन आरंभ होइछ अप्रील, 1974 मे जकर संपादक छथि रामलोचन ठाकुर । कहबाक प्रयोजन नहि जे लोकमंचक परम्परा मे ई दोसर पत्रिका छल । एहि पत्रिकाक संबंध मे अमर जी अपन इतिहास मे लिखैत छथि - 'ई त निर्विवाद जे स्वतंत्र एक विधाकें ल स्वतंत्र पत्रिकाक प्रकाशन प्रगतिक दृष्टिएँ अवश्य श्लाधनीय प्रयास छल । लोकमंचक अपेक्षा एहि मे अधिक ओ विशेष महत्वक छपल अछि, परन्तु एकरो एकमात्र अंक प्राय: प्रकाशित भ सकल ।'

एहि अंक मे डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क 'सांस्कृतिक चेतना मूलक नाटक : विषय ओ अवधारण', श्री नरेन्द्र झाक 'मैथिली लोक गीत एवं नृत्य', प्राचार्य प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क 'नेपालक मैथिली नाटकक विशेषता', श्री रामलोचन ठाकुरक 'एबसर्ड नाटक' नचिकेताक 'नाटकक स्वरूप निर्णय आ मैथिली नाटक' श्रीमती पन्ना झाक 'मैथिली नाटक एवं कलकत्ताक अवदान', डा0 अणिमा सिंहक 'नाटके कियैक', गंगेश गुंजनक 'मैथिलीक रेडियो-नाटक', डा0 प्रबोध नारायण सिंहक 'भाव रसक अनिवार्य घटक उपकरण' आदि आलेखक संग मंच परिवारक परिचय पात प्रकाशित भेल अछि ।

आपसी मतान्तरक कारणे एकर प्रथमो अंक बड़ कठिनता सं प्रेस सं बहरा सकल, फलत: कतिपय अभाव एहू मे रहिए गेल आ एहि अध्याय पर बड़ शीघ्र यवनिकापात भ गेल ।

10. शिखा : मई 1974 सं आरंभ होइछ कुणाल, अग्निपुष्पक संयुक्त संपादन मे विद्रोही नवतुरियाक स्वरमंच 'शिखा'क प्रकाशन । प्रथम 6 गोट अंक फोल्डर पत्रक रूप मे छल आ फेर ई पत्रिकाक रूप मे आयल । एकर किछु अंक दड़िभंगा सं आशेष अंक (मार्च 1980)पटना सं केवल अग्निपुष्पक संपादन मे प्रकाशित भेल अछि । ज्ञातव्य जे एहि बीच कुणाल त कलकत्ते छलाह परंच अग्निपुष्प दड़िभंगा आ फेर पटना चल गेलाह । एकर प्राय: अंक कोनो ने कोनो विभूतिक नाम रहैत छल । शिखा क पहिल अंकक संपादकीय, जे एकर स्वर-स्वरूप के रेखांकित करैछ, देखल जा सकैछ - 'अमला, खाकी-वर्दी हनुमानक कान्हपर अवस्थित अंग्रजक उत्तराधिकारी । देश बनि गेलए जालियां वाला बाग । छद्मक्रान्ति, विकारग्रस्त मानसिकता युक्त एकटा पैध समुदाय परिवेशगत कुसंस्कार, कुण्ठा, निराशा, आत्म प्रवंचना स खुशामद आ मस्कावाद दिस अग्रसर होइत आधुनिक पीढ़ी आ नै त लाठी आ गोली ।

एहि सबहक विरुद्ध तखन ठाढ़ होइए अपन अस्तित्वक प्रति सजग समुदाय, जकरा हृदय मे

जन्म लेल छैक शिखा जे डिबिएक किएक ने हो, अपन तड़फड़ाइत काया मे रखने रहैत अछि कसक, तड़पन आ सब अनर्गल, अनाहूत, अनपेक्षित के डाहि देबाक शक्ति ।'

नव शक्ति स्फूर्ति, नव स्वर-गंधक संग शिखा नवतुरियाक सार्थक स्वर मंच छल । अग्रज पीढ़ी मे एक मात्र हमर रचना छपैत छल । हमरा लेल ई पत्र विशेष महत्व एहू लेल रखैछ जे कुंडलियाक रचना तथा 'बेताल कथा' शीर्षक सं राजनैतिक व्यंग्य लेखनक आरंभ हम एही पत्रिकाक लेल संपादक द्वयक आग्रह पर कएल आ अपन अनुज लोकनिक संग पुरैत रहलौं । ओना दड़िभंगा पटनासं प्रकाशनक क्रम मे साकेतन्दन, महाप्रकाश, सुकान्त सोम, रमानन्द रेणुक रचना देखल जा सकैछ, अन्यथा ई विशुद्ध नवतुरियाक मंच छल जे अपन स्पष्ट दृष्टि, नव तेवर, नव रूप-रंग, स्वर-गंध सं पत्रकारिताक क्षेत्र मे नव आलोड़न सृष्टि करबा मे सफल भेल ।

11. सुल्फा : 1975 मे आरंभ भेल छल चारमिनार सिरगेटक खलिया पैकेट पर हाथ सं लिखल पत्र सुल्फाक । ई प्रति रवि के बहार होइत छल । एकर स्थानीय महत्व बेसी छलैक । बाहर जाइतो नहि छल । तीन पाइ मूल्यक एहि पत्रिकाक विक्रय केन्द्र छल गिरीश पार्क । संपादक रामलोचन ठाकुर कुणाल- अग्निपुष्पक संग मिलि सभ लिखैत छलाह । एहि मे प्रकाशित रचनाक बानगी -

बिना कुनू संकेतक
वा समयक प्रतीक्षा के
सूतल ज्वालामुखी -
कखनहुं गरजि सकैछ
गिरि शिखरक आरोही
कखनहुं पिछड़ि सकैछ ।

इहो पत्र बेसी दिन नहि चलल । ओना प्रयोग बेजाय नहि ।

12. कर्णामृत : 1981 सं आरंभ होइछ कर्ण गोष्ठीक त्रैमासिक पत्रिका कर्णामृत । ओना एकर प्रथम अंक संयुक्तांक छल । एकर संपादक मंडल मे अर्जुन लाल करण, राजनन्दन लाल दास एवं नीरसन लाभक नाम अबैछ । मैथिलीक आरंभिक किछु पत्रिका सन एकरो संग बिडम्बना रहलैक जे ई पूर्णत: मैथिली पत्रिका नहि भ सकल । भाषा ल के आरंभहि मे विवाद उठि गेल छलैक आ अन्त मे निर्णय लेल गेल जे पत्रिका मूलत: मैथिली मे होएत परंच जं हिन्दी किंवा अंग्रेजीयो क स्तरीय रचना उपलब्ध हैत त तकरा छापल जायत ।

ओना त कर्णामृतक प्रकाशन 1981 सं आरंभ होइछ, मुदा एकर बीजारोपण 1974 मे भेल कही त प्राय: अनर्गल नहि होएत । 1973 मे गठित कर्णगोष्ठीक प्रथम वार्षिक स्मारिका जे 1974 मे प्रकाशित भेल छल तकरो नाम छल कर्णामृत । संपादक छलाह श्री अवध किशोर कर्ण आ सहयोगी श्रीमती दीपमालिका सिंह, एम0ए0 । वस्तुत: एहि स्मारिका आ प्रारंभिक पत्रिका मे विशेष अन्तर नहि छैक । 'स: जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम' क मूलमंत्र जाहि संस्थाक आधार हो तकर मुख पत्र जेहन हेबाक चाही । प्रारंभ मे एकर लेखक सेहो कर्ण कायस्थ वर्गक देखल जाइत छथि आ अंक चारि मे मिथिला मैथिली विरोधी दीनानाथ शरणक हिन्दी आलेख 'विद्यापति का मूल

स्थान ओर जाति निर्णय' जाइ ताम-झामक संग प्रकाशित कयल गेल छल से स्वभावत: विरुप प्रतिक्रियाक जन्म देने छल । परंच एहि मे क्रमश: परिवर्तन होइत गेल आ आइ ई निश्चित मैथिल जातिक पत्रिकाक रूप मे अपना के प्रतिष्ठापित क चुकल अछि जकर आभास प्राय: प्रवेशांकक संपादकीय सं (लेखक राजनन्दन लाल दास) भेटि जाइछ - आइ प्रयोजन अछि जे अंधविश्वास एवं रूढ़वादिता सं मुक्त समाजक निर्माण करब । परम्परा सँ प्राप्त प्रत्येक सामाजिक नियम, प्रथा किंवा रीति रेवाज नीक अथवा बेजाय भय सकैत अछि । ओकर नाप काठी थिक एकमात्र ओकर जीवनोपयोगिता ओ प्रगतिशीलता । वैह नाप काठी आधुनिक आचार विचार ले सेहो लागू होइत अछि । ....कर्णामृत यैह संकल्प लय प्रवेश कय रहल अछि जाहि सँ कर्ण समाजक संगहि संग एक वृहत्तर समाजक स्वस्थ एवं प्रगतिशील निर्माण मे सहायक भय सकय ।'

वर्तमान मे एकर प्रधान संपादक अर्जुन लाल करण, संपादक राजनन्दन लाल दास आ प्रबंध संपादक छथि नारायण प्रसाद कर्ण । स्पष्ट अछि जे ई तीनू शुरू सं आइधरि कर्णामृत क कर्णधारक रूप मे अविराम अगुआ रहल छथि । आब जखन नारायण जीक चर्च आबिए गेल त कहिए दी जे ई उएह व्यक्ति छथि जे हिन्दी मे कर्णामृत प्रकाशनक पक्षधर छलाह । मैथिलीक पक्ष मे छलाह नीरसन लाभ जे हिन्दी भेने संस्था छोड़बाक घोषणा केने छलाह । नारायण जी सीतामढ़ी के हेबाक कारणे बज्जिका भाषी हेबाक भ्रम पोसने छलाह आ तें हिन्दीक पक्षधर । परंच हुनक भ्रम बड़ जल्दी टूटल आ ओ एहन मैथिली भक्त भेलाह जे अपन कन्या तथा बालकक विवाहक निमंत्रण पत्रो मैथिली मे छपओलनि । अस्तु । अपन एहि बाइस बर्खक जीवन मे कर्णामृत मिथिला मैथिलीक केहन सेवा कएलक से कोनो मैथिली प्रेमी सं नुकायल नहि अछि । ओना त मैथिली पत्रिकाक अर्थे भेल साहित्यिक पत्रिका आ तें ओकर प्रत्येक अंक संग्रहणीय तथापि एकर शारदीय अंक सभ आ मैथिली मनीषी लोकनिक स्मृति मे प्रकाशित अंक सभ, यथा राधा कृष्ण चौधरी, मणिपद्म, किरण, दीपक, श्रीकान्त मंडल, आरसी प्रसाद सिंह, प्रभास कुमार चौधरी, यात्री, लाल दास, श्री नारायण दास, बाबू साहेब चौधरी आदि अंक सभ मैथिलीक अनमोल धरोहरक रूप मे विशेष उल्लेखनीय अछि । पत्रिकाक एहि प्रगति-उपलब्धिक लेल गोष्ठीक सदस्य लोकनिक संगहि सहयोगी शुभाकांक्षी लोकनि सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह ।

13. देसकोस : मई 1981 सं आरंभ होइछ समाचार आ विचारक मासिक पत्र 'देसकोस' क प्रकाशन । मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे ई एक नवारंभ मानल जा सकैछ । एहि सं पहिलुक प्राय: समस्त पत्रिका साहित्य पत्र मात्र छल । ओना एहू मे साहित्य हेतु किछु पन्ना अबस्से छल आ तदनुसार एक गोट कथा आ एक गोट कविता प्रकाशित होइत छल । एहि मे मिथिला मैथिलीक समाचार देशक अन्तर्गत, बाहरक राष्ट्र आ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार विदेशक अन्तर्गत प्रकाशित होइत छल । अन्यान्य स्तम्भ मे धरोहर, खेल-कूद, छाया-छवि, हास्य-व्यंग्य, बालमंच आदि छल । अपन रूपरंग आ विषय वस्तुक कारणे एकर नीक स्वागत भेल । परंच खेद जे इहो दीर्घजीवी नहि भ सकल ।

देसकोस विदेह पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित होइत छल जकर प्रतिष्ठाता छलाह क्रमश: रामलोचन ठाकुर, कुणाल, विनोद कुमार झा, सत्यनारायण झा आ आदित्य नाथ झा । चौदह सै

टाका प्रति व्यक्तिक पूंजी आ तीन मासक रचनाक तौयारीक संग एकर प्रकाशन आरंभ भेल छल । मात्र समसामयिक रचनाक तैयारीक प्रयोजन छलैक । संपादक भेलाह विनोद कुमार झा जे मैथिली जगतक लेल एकदमे नव । मैथिलीक गोलैसी स पत्रिका के पृथक रखबाक उद्देश्य सं एहन कएल गेल छल जखन कि कार्यतः संपादन हम स्वयं करैत छलौं । परंच ई क्रम मात्र तीन अंक तक चलल आ मतभेदक कारणे हम एहि सं फराक भ गेलौं । एहि अंक सभ मे कथा कविता छोड़ि प्रायः आलेख मे नाम नहि देल गेल अछि । कारण ओ समस्त हमर आ कुणालक लिखल थिक । से जेहो, प्रथम बर्ख त ई पत्र नियमित बहराइत रहल परंच दोसर बर्ख मे अनियमितता आबि गेलैक आ वर्षान्तक संगहि इहो बन्न भ गेल । कुल सतरह अंक कलकत्ता सं प्रकाशित भेल परंच अन्तधरि ई अपन आरंभिक स्वरूप स्वरक निर्वाह नहि क सकल ।

दोसर खेप पटना सं विनोद जी फेर एक बेर प्रयास केलनि । दिसम्बर 93 सं जुलाई-नवम्बर 94 धरि आर आठ अंक प्रकाशित भेल । इएह थिक देसकोसक इतिहास । परंच अल्पजीवी होइतहु ई पत्र पत्रकारिता के कतेक प्रभावित कएलक से बादक प्रकाशित विभिन्न पत्रिका सं प्रमाणित अछि ।

14. देसिल वयना / देसकोस : अक्टूबर, 1981 सं आरंभ होइछ 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' क प्रमुख मासिक पत्र देसिल बनयाक । एकर संकल्प वाक्य छल -

संविधान बिनु मैथिलीक
ओ मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जुआन

मैथिली मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक क्रम मे बहुतरास पोस्टर कविता हम रचने रही ई ताहि मे सं एक थिक । एहिठाम विषयान्तर होइतो लिखब आवश्यक बूझि पड़ैछ जे मोर्चा क हम संयोजक रही । 9 दिसम्बर 1980 के मैथिलीक सरकारी मान्यता लेल पटना मे प्रदर्शन भेल छलै एही मैथिली मुक्तिमोर्चाक नेतृत्व मे जे पूर्णतः सफल रहलै । बिहारेक बात नहि, बंगालक प्रायः समस्त अखबार एहि समाचार के प्रमुखताक संग छपने छल । एहि आन्दोलन मे पहिल बेर मैथिल सन्तानक शोणित सं पटनाक राजपथ रंगायल छल । मिथिलाक मिरजाफर जगन्नाथ मिश्रक पुलिस-बर्बरताक शिकार भेल छलाह आदरणीय नथुनी झा, सुशील, विजय पाठक आदि अनेको मैथिल सन्तान । हम सोचने रही जे एहि आन्दोलनक प्रभाव मिथिलाक जन-मानस पर पड़तैक आ ई प्रसार लाभ करत । इएह आशाक संग 23 - 25 मई 1981 के दड़िभंगा मे मैथिली सम्मेलनक योजना बनल छल जे नगर भवन मे भेल छलैक । प्रदर्शन पश्चाते हम अनुभव कएल जे हमरा सन चाकरी जीवी बुतें आन्दोलन संभव नहि तें हम अपन क्षमता के पत्रकारिता मे लगेबाक आ ओही माध्यमे आन्दोलन के गति देबाक योजना बनाओल । एकरे परिणाम छल 'देसकोस' जकर संपादकीय मे हम अपन उद्देश्य के स्पष्ट कएने छी । स्वभावतः ओहि पत्र सं हटलाक पश्चात् हम देसिल बयना क योजना बनाओल जाहि मे मुक्तिमोर्चा क हमर सहयोगी जनार्दन झा, नीरसन लाभ, रामआधार मिश्र आ महेश्वर झाक संग-सहयोग प्राप्त भेल । ए तौ संपादकीय दायित्वक निर्वाह करितो संपादक मे

हम अपन नाम नहि द जनार्दन झाक नाम देने छी । एहि सब विषयक खुलासा हम देसकोस जनवरी-फरवरी, 1984 अंक मे क चुकल छी । अस्तु ।

देसिल बयना मुख्यतः आन्दोलनात्मक समाचार विचार के प्रधानता दैत छल तथापि कथा कविता सेहो छपैत छल । विभिन्न स्तम्भ मे मिथिला विभूति, गाम सं दूरःमिथिलाक मजदूर, बालमंच, हास्य-व्यंग आदि रहैत छल । एहि क्रम मे 13 गोट अंक प्रकाशित भेल । अंतिम अंक शारदीय साहित्य विशेषांक छल जे अक्टूबर, 1982 मे प्रकाशित भेल छल । एहि अंक मे 'जादूगर' नाटक (मूल बंगला सं अनुवाद) पूर्णतः प्रकाशित अछि आ पहिल बेर इसाइ हाइनेक पांच गोट कविताक अनुवाद सेहो । एकर अतिरिक्त कीर्तिनारायण मिश्र, हाशमी, उपेन्द्र दोषी, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अग्निपुष्प, भ्रमर, सोमदेव क कविता धनचक्र, जीवकान्त, राज, अग्रदूतक कथा आदि प्रकाशित अछि ।

देसिल बयना क पंजीकरणक हेतु आवेदन कएल गेल छलैक त तीन गोट नाम मे दोसर नाम देसकोस छलैक आ संयोग सं डिक्लरेशन एहि नामे भेटलैक । ओनहुना ई नाम हमर प्रिय छल जाइ कारणे हमर बहुतो विरोधी हमर भाषा-ज्ञानक आलोचना कएने छलाह । जेहो, देसकोस नाम सँ फेर एहि पत्रिकाक छः गोट अंक प्रकाशित भेल । देसिल बयना आ एहि देसकोस मे मात्र नामक फर्क छलैक अन्यथा सभ वस्तु एके । जून, 1984 क पश्चात् विशेष कें रचनाक अभाव मे इहो बन्न क देल गेल । ओना एहि पत्रक कारणे कतिपय बालगीत आ बालकथा लिखबाक प्रयास हम अबस्से कएल । नीक वा वेजायक निर्णय त पाठके करताह ।

15. प्रवासक भेंट : एहि पत्रक प्रथम अंक हमरा उपलब्ध नहि अछि आ संपादक प्रकाशक श्री लूटन ठाकुर जी सेहो निस्तुकी नहि क सकलाह । दोसर अंक उपलब्ध अछि जे जून-जुलाई 1990 मे प्रकाशित भेल छल । समाचार केन्द्रित एहि पत्र मे मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी तीन भाषा मे रचना छपैत छल । ठाकुर जी शिक्षक छलाह । स्वभावतः शिक्षा एवं शिक्षण संस्थानक समस्या पर सेहो समय-समय पर आलेख रहैत छल । मिथिला-मैथिलीक अतिरिक्त देशक विभिन्न राजनैतिक गति विधिक लेखा-जोखा एहि मे रहैत छल । कथा बड़ थोड़ परंच कविता प्रायः तीनू भाषा मे छपैत छल । एकरो आयु दस बर्खक छलैक । भाषा, शिल्प एकर अन्यान्य पोथी पत्र सं भिन्न छल । जे हो, दस बर्खधरि एहि पत्रक समस्त दायित्वक निर्वाह असगरे करबाक लेल श्री ठाकुर जी धन्यवादक पात्र अबस्से छथि ।

16. अनुवार्त्ता : अक्टूबर 1993 सं आरंभ होइछ अनुवार्ता मासिक पत्रक । मिथिलाक्षर मे एकर नाम बेस आकर्षक । कलकत्ताक प्रायः पत्रिकाक नाम मिथिलाक्षर मे रहैत आयल अछि परंच मिथिला दर्शनक पश्चात् एतेक नयनाभिराम आन पत्रक नाम नहि बुझना जाइछ । जेसे, एहि पत्रक मात्र 16 - 17, 36 - 37 एवं 40 - 41 अंक हमरा उपलब्ध भेल अछि जे सभ संयुक्तांक अछि । अंक 16 - 17 प्रकाशित अछि जनवरी-फरवरी 1995 मे आ एही आधार पर हम एकर आरंभ लिखल अछि । एकर प्रधान संपादक छथि श्रीमती शैल झा । संपादक अंक 16 - 17 मे छथि कौशलेन्द्र झा, प्रो0 देवेन्द्र ठाकुर 'रमण' तथा अन्य चर्चित अंक मे गणपति मिश्र । प्रकाशक मे कोनो संस्था वा व्यक्तिक नाम नहि अछि केवल 383, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-7 सं

प्रकाशित, मुद्रित अछि । कथा, कविता निबंधादि सभ तरहक रचनाक एहि मे समावेश देखल जाइछ । भाषाक भुल-त्रुटि बड़ बेसी । वर्तमान मे इहो पत्र बन्ने अछि ।

17. मैथिली संज्ञा : अप्रील, 1994 मे मैथिली संज्ञा नामक पत्र प्रकाशित भेल आ इएह एकर प्रथम आ शेष अंक थिक । मैथिली साहित्य, कला, संस्कृतिक संदेशवाहक समाचार पत्रिका घोषित कएल गेल छल जेकर प्रकाशक संपादक छलाह संजय चौधरी ।

18. मिथिला समाद : सितम्बर, 1994 सं आरंभ होइछ मिथिला समाद नामक मासिक पत्रक जकर संपादक प्रकाशक छथि कमलेश झा । जेना कि नामहि सं ज्ञात होइछ, ई पत्रिका मिथिला मैथिली समाचार केन्द्रित छल । कमलेश जी स्वयं आन्दोलनी छथि आ मिथिला मैथिली लेल किछु ने किछु करिते रहैत छथि । स्वभावतः एहि पत्रक स्वर आन्दोलनात्मक आ भाषा सहज छल । पत्रिका नियमित नहि छल आ किछु संयुक्तांक सेहो बहार भेल अछि । खेदक विषय जे सभ अंक हमरो लग उपलब्ध नहि आ उपलब्ध अंक मे शेष थिक नवम्बर-दिसम्बर 1998 अंक । जहांधरि स्मरण होइछ, एकर पश्चातो एकाधटा अंक प्रकाशित भेल अछि जे तत्काल उलपब्ध नहि । ओनहुना एहि बीच ओ कलकत्ता प्रायः छोड़िए देने छथि ।

मिथिला समाद मे कथा - लघुकथा कहियोकाल छपैत छल परंच कविता बेसी काल आ सर्वाधिक आन्दोलनात्मक आलेख । वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे एहन पत्रिकाक बड़ बेसी प्रयोजन हमरा बूझि पड़ैछ ।

19. मिथिला चेतना : मिथिला चेतनाक प्रकाशन आरंभ होइछ अप्रील, 1997 सं । एकर प्रथम अंकक लोकार्पण 14 मई 97 मे महिसी मे युवा लेखन गोष्ठीक रजत जयन्ती समारोहक अवसर पर वरिष्ट कथाकार श्री राज मोहन झाक हाथें । एकर संपादक वियन भूषण, सह संपादक -देवी शंकर मिश्र एवं प्रबंध संपादक अंजय कुमार चौधरी आ सुधीर कुमार झा छथि । प्रवेशांकक मुखपृष्ट पर मो0 नाजिम रिजवी, रामलोचन ठाकुरक काव्यांशक संगहि भीमनाथ झाक निम्न शुभकामना छपल छल ।

निश्चेतन मिथिलाकेँ भरवा लेल चेतना
जा न वंग झिकझोरत सहिते रहत यातना
वहवो हवड़ा सँ मिथिला चेतना वायु पुनि
जागथु मैथिल बन्धु बढ़थु बैसथु जुनि सिर धुनि

संपादकीय वैश्वीकरणक कुफल ओ मातृभाषाक महत्ता के रेखांकित करैत अछि तथा महाकवि आरसी प्रसाद सिंहक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करैछ । एक लघुपत्रिकाक स्वरूप एकर रचना सं उद्घाटित होइछ आ नवतूरक उत्साह देखि लोक मे आशक संचार करैछ । परंच दोसरे अंक मे ई लड़खड़ा जाइछ आ तेसर अंक जे शेष अंक होइछ - तीन बर्खक पश्चाते बहार भ पबैत । सहस्राब्दीक अन्त मे मैथिली कविता, नामे ई प्रकाशित होइछ जाइ मे सोमदेव सं नवोनारायण मिश्र धरि कुल 56 कविक कविता प्रकाशित भेल अछि जे निश्चिते पठनीय आ संग्रहणीय अछि । अपन दृष्टि आ सृष्टिक कारणे अल्पजीवी होइतो ई पत्र इतिहास मे अपन स्थान बना पाओत से विश्वास अछि ।

20. मिथिला चेम्बरक सनेस : मैथिली मासिक मिथिला चेम्बरक सनेस क प्रकाशन आरंभ होइछ सिम्तबर, 2000 सं । जेना कि नामे सं ज्ञात होइछ एहि पत्रक प्रकाशक मिथिला चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज अछि आ संपादक विनय भूषण । अप्रील 2002 धरि एकर कुल बीस अंक प्रकाशित भेल अछि । जाहि मे किछु संयुक्तांको अछि । ई पत्र आलेख के आ विशेषतः आर्थिक आलेख कें प्रधानता दैत रहल अछि परंच तकर अभाव मे आनो तरहक आलेखक संगहि कथा-कविता सेहो छपैत आयल अछि । अधिकांश रचना स्तरीय एवं समयोपयोगी बुझना जाइछ ।

21. भोरुकवा : वैशाख 2002 मे अमरनाथ झा 'भारती' क संपादन प्रकाशन मे बहार होइछ भोरुकबा । आइधरि एकर छह अंक प्रकाशित भ चुकल अछि ।

प्रवेशांकक मुखपृष्ठ पर पं0 खुद्दी झाक निम्न श्लोक छपल अछि -

भाषा चदन्य देशीयो
मिथिलाया वदेत तदा
पीत मिझाक पोतेन
समस्त वारिधेर्जलम

पत्रिका मे नव लेखकक रचनाक प्राधान्य परिलक्षित होइछ जे नीक बात थिक । प्रयास बेजाय नहि । भावना जं पवित्र हो त तकर स्वागत हेबैक चाही ।

संक्षेप मे इएह थिक कलकत्ताक पत्रकारिताक इतिहास । ओना एकरा इतिहास नहि कहि मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्र मे कलकत्ताक योगदानक स्मरण मात्र कहबे उचित । इतिहासक आयाम निश्चिते पैघ होइछ आ विस्तृत व्याख्याक प्रयोजन होइछ, परंच तेहन पैध रचना प्रकाशनक सुविधा जे हेतु नहि, तें तत्काल एतबहिं सं संतोष करय पड़त । पश्चात् फेर समय सुविधा भेने विशेष ।

(2002)

समकालीन मैथिली रंगमंचक विकास से कलकत्ताक योगदान

कहल गेल अछि जे देवगणक अनुरोध पर ब्रह्मा ऋग्वेद सं 'पाठ्य' सामवेद सं 'गीत' यजुर्वेद सं 'अभिनय' आ अथर्ववेद सं 'रस' ल के नाटकक रचना कएलनि । अर्थात बीज रूप मे नाटक एहि वेद समवेत मे अवस्थित छल । स्वाभाविक कारणे नाटक के पंचम वेद कहल गेल अछि ।

वर्तमान मे नाटक कहने सर्वप्रथम जे भाव मन मे जगैत अछि से थिक नाट्याभिनय वा नाट्यमंचनक । फलांठाम नाटक होइत छैक, अर्थात नाट्य मंचन होइत छैक । हम नाटक देखय जाइत छी, अर्थात् नाटकक मंचन देखऽजाइत छी । ओ नाटक खेलाइत छथि, अर्थात् नाटक मे अभिनय करैत छथि । एहिठाम अभिनय आ खेल दुनू शब्द पर ध्यान देबाक थिक । भरत मुनि अपन 'नाट्यशास्त्र' मे कहैत छथि ''लोक स्वभाव अनुकरणञ्च'' तथा ''लोक वृत्तानुकरणं'' अर्थात अभिनय लोकस्वभाव ओ लोकक क्रिया कलापक अनुकरण थिक । ओना जं प्राचीन नाटक सभ पर दृष्टिपात करी त ओहि मे साधारण लोकक स्थान पर देवी-देवता विराजमान भेदताह । देवी-देवता वा आदर्श पुरूषक चरित्राभिनय द्वारा लोक कें आदर्श पथानुगमनक हेतु प्रेरित करबे एकर कारण छल होएत । स्वयं रामकृष्ण परमहंस सेहो अपन प्रिय शिष्य नाट्यकार अभिनेता गिरिश घोष के प्रोत्साहित करैत कहने छलथिन जे नाटक करब नीक बात थिक । एहि सं लोकशिक्षा होइत छैक । जहांधरि खेलक प्रश्न अछि, एकरो उत्स नाट्यशास्त्रे थिक । भरतमुनि अभिनय के क्रीड़ाक संज्ञा सेहो देने छथि आ इहो एकर उद्देश के रेखांकित करैत अछि । खेल आनन्दक लेल, मनोरंजनक लेल होइत अछि । कमोवेश आइयो ई बात नाट्याभिनयक मादे कहले जा सकैछ ।

पूर्वांचलीय भाषा सभ मे मैथिलीए ओ भाषा थिक जाइ मे सर्वप्रथम साहित्य रचना भेल । यद्यपि मैथिलीक आदि उपलब्ध ग्रन्थ 'चर्यापद' थिक परंच एकर प्रभाव बड़ व्यापक नहि भेल । तेरहम शताब्दी मे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर निर्विवाद आदि गद्य-ग्रन्थ थिक जकरा भाषाचार्य डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी 'एनसाक्लोपेडिया' कहने छथि । एकर पश्चात् चौदहम शताब्दी मे कविपति विद्यापतिक आविर्भाव भारतीय वाङ्मय में एक स्वर्णिम अध्यायक सृष्टि कएलक । बंग भाषाओ साहित्यक इतिहासकार दीनेश चन्द्र सेन यथार्थहि लिखै छथि जे समस्त पूर्वांचल मे साहित्यक भाषा रूप मे संस्कृतक स्थान पर मैथिली प्रतिष्ठापित भेल, जकर सम्पूर्ण श्रेय विद्यापति के छनि । जहांधरि नाटकक बात अछि, प्राय: समस्त भारतीय भाषा मे मैथिलीए प्रथम स्थानक अधिकारी अछि । संस्कृतक पश्चात मैथिलीए मे सर्वप्रथम नाटक लिखाएल । एहि बात कें अपन गहन अध्ययन आ विलक्षण विवेचन द्वारा श्रीमती पन्ना झा ''मैथिली नाटक एवं कलकत्ताक अवदान'' मे सिद्ध क चुकल छथि । (रंगमंच/सम्पा. रामलोचन ठाकुर) श्रीमती झाक अनुसार बंगला मे उन्नैसम शताब्दी मे नाटक (यात्रा) लिपिवद्ध भेल । ओड़िया मे सतरहम शताब्दी मे पहिल नाटक ''परशुराम-व्यायोग'' रचित भेल । मराठी मे 1934 एवं गुजराती मे 1907 ओ कन्नड मे 1853 मे प्रथम नाटक रचित भेल । तामिल नाटकक इतिहास लगभग सय बर्खक थिक । हिन्दी मे भारतेन्दु सं नाटकक प्रारंभ मानल जाइछ परंच स्वयं भारतेन्दु जाहि ''आनन्द रघु नन्दन'' के हिन्दीक प्रथम नाटक कहैत छथि से वस्तुत: मैथिली नाटक थिक ।

ओना त इतिहासकार लोकनि मैथिली नाटकक प्रारंभ कविशेखराचार्यक ''धूर्त समागम'' सं मानैत छथि, परंच ''धूर्तसमागम'' हो वा विद्यापतिक ''गोरक्ष विजय'' वा उमापतिक ''पारिजात हरण'' एहि नाटक सभ मे मात्र मैथिली गीतेटाक प्रयोग भेल अछि, निर्देशन वा कथोपकथनक नहि । वास्तव मे मैथिली नाटक ओ मंचक शुभारंभ होइत अछि नेपाल सं आ मैथिलीक पहिल नाटक त्रिभुवन मल्लक ''काशी विजय'' के मानल जाइछ । कारण जे कोनो हो, परंच थिक धरि सत्य जे मैथिलीक पहिल नाटक मुख्य मिथिला भूमि सं नहि अपितु नेपाल मे रचित भेल आ फेर बंगाल सं आसाम धरि पसरल । शंकर देवक अंकिया नाटक सोलहम शताब्दीक थिक । नेपाल मे चौदहम शताब्दीक पूर्वार्धसं अठारहम शताब्दीधरि शताधिक नाटकक रचना भेल आ तकर विधिवत मंचन सेहो । नाटक आ मंचक अन्योन्याश्रय संबन्धे एहि बात के प्रमाणित करैछ जे मंचक अभाव मे एतेरास नाटक रचना संभव नहि छल । वास्तव मे एहिठामक मंच बड़ विकसित छल । भरतपुरक प्रशस्त मंचक भग्नावशेष आइयो देखल पाओल जाइछ । वस्तुत: एहि काल के जं मैथिली नाटकक स्वर्ण युग कहल जाय त अतिशयोक्ति नहि होएत । प्राचार्य श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह ''मौन'' एहि क्षेत्र मे पर्याप्त काज केने छथि जे एहि स्वर्णयुगक प्रामाणिक आ अनमोल दस्तावेज थिक ।

आधुनिक नाटकक आरंभ इतिहासकार लोकनिक अनुसार 1906 मे पंडित जीवन झाक ''सुन्दर संयोग'' स होइत आछि । ओना किनको - किनको मतें पं0 जीवन झा 1904 में तीन गोट नाटक ''सामवती पुनर्जन्म'' सुन्दर संयोग आ ''नर्मदासागर सट्टक'' क रचना कएलनि । परंच एहि नाटक सभक मंचनक कोनो समाचार उपलब्ध नाहि । डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' क अभिमत छनि जे साहित्य मे एहि विधाक नितान्त अभाव देखि तकर पूर्तिक निमित्त एहि नाटकक रचना भेल नेकि मंचके ध्यान मे राखि । एहि दृष्टिजे साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास रचित ''मिथिला नाटक'' (1920-23) मिथिलाक प्रसिद्ध उमाकान्तक नाट्य कम्पनी द्वारा अभिनीत भेल छल । एहिठाम उल्लेखनीय जे ई कम्पनी पारसी नाटक खेलाइत छल आ मैथिली मे ई ओकर पहिल प्रयास छलैक । से जे हो, एकर पश्चात नाट्य लेखनक क्रम अव्याहत रहल । ई भिन्न बात जे एहि मे अपेक्षित गति जेना कि आन भारतीय भाषा नाटकक छैक, नहि रहलैक, परंच अवरुद्ध कहियो ने भेलै । अपन सुव्यवस्थित मंच नहि रहब एहिमंथरताक प्रमुख कारण कहल जा सकैछ । एहिठाम उल्लेखनीय जे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार प्रसार, औद्योगिक विकासक अभाव आ पैघ-पैघ शहरक अवस्थान, जे आधुनिक भाषा-साहित्यिक विकासक पृष्ठभूमि मे रहल अछि, मिथिला मे तकर नितान्त अभाव । पढ़ल लिखल लोक जीविकाक जोगार मे अपन गामघर, लोकवेद छोड़ि परदेश पड़ाइत रहल । इएह कारण छैक जे मैथिली भाषा आन्दोलन सं नाट्यान्दोलन धरिक शुभारम्भ मिथिला सं बाहर भेल ।

कलकत्ता के भारतक सांस्कृतिक राजधानी कहल जाइत छैक । विश्वक छोट सं छोट घटनाक प्रभाव प्रतिक्रिया एहिठाम देखल पाओल जा सकैछ । ओनहुना पूर्वांचलक इ सभस पैघ शहर थिक ओ प्राचीन सेहो । मिथिलाक लोक शिक्षा सं जीविका धरिक लेल गाम - घर सं बहरा सर्वप्रथम एही महानगर मे पदार्पण करैछ । कहियो बिहार, बंगाल, उड़ीसाक ई राजधानी छल । मिथिला ओ बंगालक सम्पर्क जेहने प्राचीन तेहने धनिष्ट सेहो । खान-पान-परिधान, भाषा-संस्कृति,

भौगोलिक अवस्थान मे अद्भुत साम्य सम्बन्ध देखल-पाओल जा सकैछ । एक समय छलैक जखन बंगालक लोक मिथिला जा विद्याध्ययन करैत छलाह । मिथिलाक पक्षधर मिश्रक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि नवद्वीप मे नव्य न्यायक अध्ययन केन्द्र स्थापना केलनि । शिक्षाक हेतु जाइत बंगाली जखन शिक्षोपरान्त स्वदेश घुरैत छलाह त ओ लोकनि विशेष सनेस - स्वरुप विद्यापतिक गीत अपना संग नेने अबैत छलाह । एहिना विद्यापति एहिठामक ग्राम-घर मे रचि-बसि बंगालक अपन कवि भ गेलाह ।

भाषा-लिपिक साम्यक कारणे कृत्तिवासी रामायण आ काशीदासी महाभारत मिथिलाक अपन महाकाव्य लैक आ हेमनिधरि घर-घर मे पाओल पढ़ल जाइत छल । स्वाभाविक कारणे कलकत्ता प्रवास मे मैथिलक संख्या आन महानगरक अपेक्षा बड़ बेसी। देश काल परिवेश सं शिक्षा ग्रहण केनाइ मनुखक स्वाभाविक गुण होइछ । बंगालीक अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति प्रेम सं मैथिल लोकनि प्रेरणा लेलनि । एहि मे पूर्वक बंगाली विद्वान लोकनिक सहयोग सेहो उल्लेखनीय छल । 1919 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली के आधुनिक भारतीय भाषाक रूप मे मान्यता एकर प्रत्यक्ष प्रमाण थिक, जे श्रद्धेय ब्रजमोहन ठाकुरक सतप्रयास आ सर आशुतोष मुखर्जीक सहयोगे संभव भेल । साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यताक संदर्भ मे डॉ॰ सुनीति चटर्जीक अवदान बिसरल नहि जा सकैछ ।

अपन भाषाक प्रति प्रेम ओ तकर उन्नति विकासक लेल प्रयत्नक प्रतिफल भेल एहिठामक मैथिली सेवी संस्था सबहिक गठन । सभा-समावेस, आन्दोलन-अनशन, जुलूस-स्मारकपत्र, पोथी-पत्रक प्रकाशन आदि भेल एहि संस्था सबहिक कार्य । साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता, विद्यापति डाक टिकस ओ मिथिला एक्सप्रेस प्रत्यक्ष त बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिली, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, दड़िभागा रेडियो स्टेशनक स्थापना आदि अप्रत्यक्ष रूपें एहि संस्था सबहिक अवदान थिक । 9 दिसम्बर, 1980 क मैथिली आन्दोलन जाइमे पहिल बेर मैथिल सन्तानक रक्त सं पटनाक राजपथ लाल भेल छल, कलकत्ते सं संभव भेल । आचार्य रमानाथ झा कलकत्ता के मैथिली भाषीक लेल तीर्थस्थान कहने छथि । आ इएह पृष्ठभूमि थिक कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंचक ।

कलकत्ता मे मैथिली नाट्य-मंचक शुभारम्भ होइछ ''पंडितजी'' क अभिनय सं जे स्थानीय चारू चन्द्र कॉलेजक एक कक्षा मे 1953 (54) मे अभिनीत भेल छल । 1954 मे स्थानीय डागा धर्मशाला मे मंचित भेल ''छींक'' प्रहसन आ एही साल ''उगना'' नाटक मंचित हैबाक सेहो सूचना अछि । प्राय: बर्खदिनक अभ्यन्तर एहि तीनू मंचन के देखला सन्ता स्पष्ट होइछ जे मंचन सफल भेल होएत आ दर्शकक उपस्थिति उत्साहजनक रहल होएल । परंच 1955-60 के बीच फेर कोनो नाट्य-मंचनक सूचना नहि भेटब आश्चर्यित करैछ । एकर पश्चात जाइ मंचनक सूचना श्रीमती पन्ना झा संग्रह केने छथि, आ सर्वप्रथम इएह ई काज केने छथि, से भेल 1960 मे ''मिथिला कला केन्द्र'' द्वारा ''हाथीक दाँत'' क मंचन । एहिठाम उल्लेखनीय जे 30 दिसम्बर 1959 के उषाक कर्मी कान्ति विहारी मिश्रक मनोहर पोखरिक आवास पर ''मिथिला कला केन्द्र'' क स्थापना भेल जकर अध्यक्ष सीताराम चौधरी आ सचिव भेलाह श्रीकान्त मंडल । स्पष्ट अछि जे नाट्य संस्थाक गठन हठात् नहि भेल । वस्तुत: ''पंडित जी'' ''छीक'' आ ''उगना'' क प्रदर्शन सं दर्शक लोकनि जतबे

आनन्दित आहलादित भेलाह अभिनेता लोकनि ताइ सं बेसीए उत्साहित । ''मिथिला कला केन्द्र'' क चारि स्तम्भ शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आ लक्ष्मी नारायण मिश्र गप्पहिक क्रम मे ई योजना बनाओल आ पश्चात आन-आन लोक के सूचना देल गेलैक, सहयोग माङल गेलैक । 30 दिसम्बर के हिनका लोकनिक कल्पना-योजना ''मिथिला कलाकेन्द्र'' क रूप मे साकार भेल आ शुभारम्भ भेल आधुनिक मैथिली नाट्य मंचक जययात्रा ।

''मिथिला कला केन्द्र'' क आयु छल दस बर्खक आ एहि अवधि मे ई प्राय: नओ गोट नाट्य-मंचन करबा मे सफल भेल । स्वार्थपरता ओ गुटबाजीक चलते मिथिला कला केन्द्रक त अकाले अवसान भेबे कएल, पश्चात् जे आनो-आन संस्था सभ बनल से एहि घातक व्याधि सं अपना के मुक्त नहि राखि पओलक आ परिणाम जे हेबाक छल सैह भेल । एहि संदर्भ मे हम पटनाक ''अरिपन'' क स्मारिका 1986 मे अपन लेख ''कलकत्ता मैथिली रंगमंच-पुनर्जीवनक संभावना'' मे लिखि चुकल छी आ तैं एहिठाम पुनर्लेखनक आवश्यकता नहि । जनवरी 1966कै कलाकेन्द्रक किछु सदस्य 'मैथिली रंगमंच' नामे अपन फराक नाट्य संस्था बनओलनि । अध्यक्ष फेर सीताराम चौधरी आ सचिव दीनानाथ झा बनलाह । श्रीकान्त मंडल नाट्य सचिवक पदभार सम्हारलनि । एहू संस्थाक जीवनकाल दसे बर्खक रहलैक । परंच एहि अवधि मे ई संस्था छोट-पैध 18 गो नाट्य-मंचन आ 10 गो नाटकक प्रकाशन केलक । एहि पोथी मे आठ गो मौलिक प्रकाशने नहि तकर रचनाक पृष्ठभूमि मे सेहो रंगमंचक प्रेरणा छल । मंचित 18 नाटक मे बारह मौलिक आ 6 गोट अनुवाद । एहिठाम उल्लेखनीय जे कलाकेन्द्र द्वारा मंचित नाटक मे चारि गोट मौलिक नाटक छल जाइमे तीन टाक लेखन प्रकाशन कलकत्ता सं भेल अछि । 1970 मे कलाकेन्द्र इतिहासक पन्ना पर चल गेल आ ओकर बांकी सदस्य लोकनि डॉ अशर्फी झाक अध्यक्षता आ गुणनाथ झाक मंत्रित्व मे 'मिथि यात्रिक' नामक नव नाट्य संस्थाक गठन कएल । 25 फरवरी 1996, के ई संस्था अपन रजत जयन्ती मनओने छल आ एहि अवसरपर दू गोट नाट्य मंचन केने छल । ओना वास्तविकता इएह थिक जे 1974 क पश्चात कलकत्ता मे ओकर कोनो गतिविधि नहि देखल गेल । कहल जाइछ जे ई संस्था ने कि कलकत्ताक बाहर कार्यरत छल, परंच एकर कोनो सूचना संवाद स्वाभाविक कारणे हमरा लग उपलब्ध नहि । एहि हेतु हम मिथि यात्रिक क अभिनेता-निर्देशक दयानाथ जी सं सम्पर्क केलाक पश्चातो सफल नहि भऽ पओलहुं ।

वस्तुत: कलकत्ता मैथिली नाट्य-मंचक यात्रा मे 1976 क पश्चात विराम चिह्न लागि गेल । एहिठाम उल्लेखनीय जे अखिल भारतीय मिथिला संघ जकर मुख्य उद्देश्य आन्दोलन रहलैक सेहो प्राय: नाट्य-मंचन करैत रहल आ प्राय: सोलह गोट नाट्य-मंचन केने अछि । एकर अतिरिक्त कुर्मि क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोष, अ. भा. मैथिल संघ, उषाक मित्र संघ सेहो यदा-कदा नाट्य-मंचन केने अछि । दोसर पर्यायक आरम्भ, यद्यपि क्रमबद्ध रूपें नहि, तथापि 1983 मे मिथिला विकास परिषद द्वारा मंचित ''आजुक लोक'' सं कहल जा सकैछ । ई संस्था आइधरि एगारह गोट नाटक मंचित क चुकल अछि जाइमे किछु एकाधिक बेर मंचित भेल अछि । 1990 सं आरंभ होइछ नब नाट्य-संस्था नेकिल मंच क यात्रा । ई संस्था अद्यावधि अठारह गोट नाट्य मंचन क चुकल अछि जाइ मे दू गोट कलकत्ता सं बाहर मिथिलांचलक गाम मकरन्दा मे । एहिठाम लिखि देनाइ आवश्यक जे एहि ठाम नव मंचनक संख्याटा देल अछि । कोनो संस्था जं एक नाटक के एकाधिक बेर मंचित केने

अछि तकर गणना नहि भेल अछि । ओना एके नाटक जे विभिन्न संस्था द्वारा मंचित भेल हो त से अवश्य उल्लेखनीय । एहि संदर्भ मे आगू बढ़वा सं नीक जे पहिने कलकत्ताक विभिन्न संस्था द्वारा अभिनीत नाटकक सूचीक अवलोकन क लेल जाय, जे हमर सूचनाक अनुसार निम्न अछि :-

अखिल भारतीय मिथिला संघ

नाटक	लेखक/अनुवादक	प्रकाशक	समय
1. प्रेमक रोग	प्रबोध ना॰ सिंह	लोक साहित्य परिषद,कल॰	-
2. जमीन	अ॰ प्रबोध ना॰ सिंह	अप्रकाशित	-
3. अन्हेर नगरी	भारतेन्दु/अ॰ प्रबोध ना॰ सिंह	मिथिला दर्शन प्रा॰ लि॰	-
4. सलोमा	अ॰ इलारानी सिंह	मिथिला दर्शन प्रा॰ लि॰	-
5. चित्रीक लड्डू	ईशनाथ झा	-	30-5-65
6. चन्द्रगुप्त (चाणक्य)	अ॰ बाबू साहेब चौधरी	लेखक द्वारा प्रकाशित	21-11-65
7. निष्कलंक	जनार्दन झा	लेखक द्वारा प्रकाशित	14-6-70
8. कुहेस	बाबू साहेब चौधरी	लेखक	गोड्डा 1970
9. नायकक नाम जीवन	नचिकेता	अ॰भा॰मि॰ संघ	6-2-72
10. चारि पहर	ले॰ किरण मैत्र अ॰ रामलोचन ठाकुर	अप्रकाशित	1973
11. अभिनेत्री	जनार्दन झा	अप्रकाशित	1974
12. अरुणोदय	जनार्दन झा	अप्रकाशित	1976
13. चोर	अनु: प्रबोध ना॰ सिंह	मि॰ द॰ प्रा॰ लि॰	गोड्डा 1970

मिथिला कलाकेन्द्र

नाटक	लेखक/अनुवादक	प्रकाशक	समय
1. हाथीक दाँत	डॉ॰ प्रबोध ना॰ सिंह	मि॰ दर्शन प्रा॰ लि॰	1960
2. चोर	ले॰ छवि बंद्योपाध्याय अ॰ प्रबोध नारायण सिंह	मि॰ दर्शन प्रा॰ लि॰	1960
3. पियासल धरती उताहुल नोर	अ॰ अणिमा सिंह	अप्रकाशित	1960
4. कांचन रंग	ले॰ शंभुमित्र/तृप्ति मित्र अ॰ सीताराम चौधरी	अप्रकाशित	12-12-65
5. शैव्या हरिश्चन्द्र	घनानाथ झा	—	
6. महुआ	अनुवाद	अप्रकाशित	–
7. कनियाँ-पुतरा	गुणनाथ झा	मि॰ कलाकेन्द्र	3-9-67
8. पाथेय	गुणनाथ झा	लेखक	28-4-68
9. चारि पहर (मिथिला संघक लेल)	अ॰ रामलोचन ठाकुर	अप्रकाशित	1969

मैथिली रंगमंच

नाटक	लेखक/अनुवादक	प्रकाशक	समय
1. सुखायल डारि नव-पल्लव	सीताराम चौधरी	मैथिली रंगमंच	4-9-66
2. प्रेम एक कविता	ले॰ प्रबीर मुखर्जी अ॰ इलारानी सिंह	मैथिली रंगमंच	4-12-66
3. निष्प्रदीप	ले॰ प्रबीर मुखर्जी अ॰ सीताराम चौधरी	अप्रकाशित	4-12-66
4. कुहेस	ले॰ बाबू साहेब चौधरी	लेखक द्वारा	13-5-67
5. आगन्तुक	ले॰ नारायण गंगोपाध्याय अ॰ दीनानाथ झा	मैथिली रंगमंच	24-9-67
6. बेमातर	सीताराम चौधरी	मैथिली रंगमंच	12-10-69
7. सन्तान	अ॰ मोहन चौधरी	मैथिली रंगमंच	29-3-70
8. एक छल राजा	नचिकेता	मैथिली रंगमंच	8-7-73
9. नाटकक लेल	नचिकेता	मि॰ दर्शन प्रा॰ लि॰	6-10-74
10. पाथेय (मि॰ संघक लेल)	गुणनाथ झा	लेखक	–
11. आइ भोर	गंगेश गुंजन	-	4-5-75
12. नसबन्दी	महेन्द्र मलंगिया	-	4-5-75
13. लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत	महेन्द्र मलंगिया	-	4-5-75
14. मधुयामिनी	गुणनाथ झा	लोकमंच	1975
15. बतहा	रत्नाकर	अप्रकाशित	1975
16. जादूगर	ले॰ श्यामल तनु दासगुप्त अ॰ रामलोचन ठाकुर	देसिल बयना (अरूणोदय प्रकाशन)	22-2-76
17. रिहर्सल	ले॰ शैलेश गुह नियोगी अ॰ रामलोचन ठाकुर	कोकिल मंच	22-2-76
18. व्यक्तिगत	ले॰ डॉ लक्ष्मी ना॰ लाल अ॰ वीरेन्द्र मल्लिक	अप्रकाशित	4-4-76

मिथि यात्रिक

नाटक	लेखक/अनुवादक	प्रकाशक	समय
1. शेष नत्रि	गुणनाथ झा	अप्रकाशित	22-4-73
2. सातम चरित्र	गुणनाथ झा	लोकमंच	15-7-73
3. पाथेय	गुणनाथ झा	लेखक	15-7-73
4. आजुकलोक	ले॰/अ॰ गुणनाथ झा	अप्रकाशित	26-1-74
5. अहिबातक पातिल	बुद्धिनाथ झा	-	25-2-96
6. बौआ अएलाह	बुद्धिनाथ झा	-	29-4-02

मिथिला विकास परिषद

नाटक	लेखक/अनुवादक	प्रकाशक	समय
1. आजुक लोक	ले॰/अ॰ गुणनाथ झा	अप्रकाशित	1983
2. मिथिला मांगय खून	फूलचन्द झा प्रवीण	-	1987
3. सुखायल डारि: नव-पल्लव	सीताराम चौधरी	मैथिली रंगमंच	1989
4. लौंगिया मिरचाई	ललन प्र॰ ठाकुर	लेखक	1990

5. एना कतेक दिन	डा. अ. कु. अक्कू		1-5-91
6. कलियुगक भगवान	प्रमोद कुमार ठाकुर		1-5-91
7. जुआयल कनकनी	महेन्द्र मलंगिया	लेखक	22-12-91
8. जिबैत लाश	अशोक झा	मिथिला विकास परिषद	3-5-92
9. बीरौं	अशोक झा	अप्रकाशित	4-4-93
10. कमउआ पूत	अशोक झा	मिथिला विकास परिषद	7-5-95
11. बड़का साहेब	ललन प्र. ठाकुर	लेखक	5-1-97

कोकिल मंच

1. विवाह एक धंधा	कृष्ण चन्द्र झा रसिक	अप्रकाशित	13-12-90
2. विवाह एक नाटक	कृष्ण चन्द्र झा' रसिक	कोकिल मंच	30-4-91
3. लेटाइत आँचर	सुधांशु शेखर चौधरी	प्रकाशित	15-11-91
4. समन्ध	कृष्ण चन्द्र झा' रसिक	अप्रकाशित	22-12-92
5. उगना	ईशनाथ झा (मकरन्दा मे)	प्रकाशित	24-10-93
6. अंतिम गहना	रोहिणी रमण झा	प्रकाशित	24-4-94
7. सभागाछी	अ. गंगा झा	अप्रकाशित	2-10-94
8. रक्त	अरविन्द अक्कू	प्रकाशित	12-2-95
9. आतंक	अरविन्द अक्कू	प्रकाशित	31-12-95
10. खोल	अ. गंगा झा	अप्रकाशित	29-12-96
11. ओकरा आङनक बारहमासा	महेन्द्र मलंगिया	प्रकाशित	28-12-97
12. प्रायश्चित	मंत्रेश्वर झा	प्रकाशित	20-12-98
13. फाँस	ले. शैलेश गुह नियोगी अनु. रामलोचन ठाकुर	भंगिमा	26-12-99
14. अंतिम प्रणाम	ले. गोविन्द झा	प्रकाशित	28-0-01
15. बदलैत समाज	ले. आनन्द कु. झा	अप्रकाशित	27-1-02
16. बेलक मारल	ले. सुधांशु शेखर चौधरी	प्रकाशित	28-4- 04
17. आन्हर आ हाथी	ले. शरद जोशी अनु. गंगा झा	-	9-3-03
18. किसुनजी बिसुनजी	ले. मनोज मित्र अनु. रामलोचन ठाकुर	अप्रकाशित	29-2-04

कुर्मि क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोष

1. क्षमादान	विन्देश्वर मंडल	मैथिली रंगमंच	11-6-68
2. इजोत	उत्तम लाल मंडल	लेखक	8-3-70
3. महकारी	देवन मंडल	प्रकाशित	18-2-73

आल इण्डिया मैथिल संघ

1. सन्तो	राजनन्दन लाल दास	आ. ई. मैथिल संघ	15-12-68
2. एक राति	रविन्द्र नाथ ठाकुर		1-2-70

कर्ण गोष्ठी/जयन्त लोक मंच

1. मिथिला नाटक	साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास	- कर्ण गोष्ठी	25-9-83
2. फुटपाथ	ले. मणिपद्म	सहयोग: कोकिल मंच	2000

किछु अन्य संस्था द्वारा सेहो नाटक होइत रहल अछि जकर प्रमाण हमरा उपलब्ध नहि अछि, परन्तु कोकिल मंच द्वारा हमरा सूचना भेटल अछि जे मिथिला सेवा संस्थानं एवं वैदेही कला मंच सेहो नाटक प्रस्तुत कएने छथि । यथा–

मिथिला सेवा संस्थान

1. आगि धधकि रहल छै	डॉ. अरविन्द अक्कू	प्रकाशित	1988
2. विवाह एक समस्या	कृष्ण चन्द्र झा रसिक	अप्रकाशित	1989
3. नवजागरण	मधुरलाल मंडल	अप्रकाशित	1998

वैदेही कला मंच

1. घटकैती	कमलकान्त झा	प्रकाशित	1990
2. विद्यापतिक उगना	गोपी रमण झा	अप्रकाशित	1991
3. तेसर कनियाँ	मणिपद्म	प्रकाशित	1993-94

झंकार

1. बुड़िबक बेटा टके काबिल	शंभुनाथ मिश्र	25-12-90
2. मिथिलाक अभिशाप	ले. शंभुनाथ मिश्र	25-12-91
3. आन्हर	मूल-गो. पु. मारुतिराव अनु - शंभुनाथ मिश्र	25-12-92
4. उगना	ईशनाथ झा	22-2-93
5. हठात परिवर्तन	आनन्द कुमार झा	24-2-02

मिथिला सेवा समिति (वेलुड़)

1. कुर्सी खाली अछि (प्रहसन)	शंभुनाथ मिश्र	1986
2. मिथिलाक अभिशाप	,,	1987
3. उगना	ईशनाथ झा	1990
4. बकलेल	ललन प्र. ठाकुर	1998
5. सुखालय डारि नव पल्लव	सीताराम चौधरी	2001

उदय पथ

1. एकदिन	ले. प्र. ना. मिश्र अनु. विनोद कुमार मिश्र	अप्रकाशित
2. भग्न स्तूपक अक्षत स्तम्भ	कुणाल	,,
3. चेतनाक स्वर	,,	,,

एहिठाम लिखि देव आवश्यक जे झंकारक मात्र अंतिम प्रस्तुति हमरा देखबाक अवसर भेटलए आ मिथिला सेवा संस्थान, वैदेही - कला मंच ओ मिथिला सेवा समितिक कोनो मंचन

देखबाक सौभाग्य नहि प्राप्त भेल । नाट्य मंचनक सूची कोकिलमंच क सचिव श्री नवोनारायण मिश्र क सत्प्रयासें उपलब्ध भ सकल । बेलुड़ मैथिल वृन्द द्वारा गुणनाथ झाक शेष नञि (1982) क मंचन क सूचना सेहो देल गेल अछि । उपरोक्त समस्त मंचन शंभुनाथ मिश्रक निर्देशन मे भेल अछि आ कलाकार लोकनि मे मुख्यत: शंभुनाथ मिश्र, भवनाथ झा, उत्तम चौधरी, माला मुखर्जी, पम्पा पाल, अनामिका बनर्जी, आदिक नाम लेल जा सकैछ । कुणालक निर्देशन मे मंचित उदय पथ क कलाकार लोकनि मे रामलोचन ठाकुर, कुणाल, विनोद कुमार मिश्र, अशोक कुमार झा, चन्द्रकान्त पाठक आदिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

उपरोक्त सूचीक सम्पूर्ण हेबाक दावी हम नहि करैत छी । स्वभावत हमर आग्रह जे जिनका किनको एहि सूची मे भूल - भ्रान्ति बूझि पड़नि हमरा सूचित करथि जाइ सं आगा एकर संशोधन संभव भ पाबय ।

उपरोक्त विबरण सं स्पष्ट होइछ जे कलकत्ताक नाट्य - मंच अपन पचास बर्खक यात्रा पूर्ण कएलक आ से अपने आपमे महत्वपूर्ण थिक । जं कतौ कोनो अभाव रहियो गेल त से अकारण नहि । मन रखबाक थिक जे कलकत्ता प्रवास मे लोक जीविकोपार्जनक उद्देश्य सं अबैत अछि । ओकरा सामने पेट आ परिवार पहिने रहैत छैक । एहि दृष्टिजें विचार केने स्थिति निराशा जनक नहि बूझि पड़त । दोसर परिमाणे नहि परिणामक विवेचना सेहो महत्वपूर्ण ।

नाटक एक समन्वित कला थिक । आन कला जकां ई सोझे स्रष्टा सं भोक्ताधरि नहि पहुंचैत अछि । नाट्यकार नाटक लिखैत छथि। अभिनेता अभिनेत्रीगण अभिनय करैत छथि । निर्देशक हुनका लोकनि कें उपयुक्त आंगिक - बाचिक भाव - भाषा उपस्थापनक निर्देश दैत छथि । रूपकार ओसज्जाकर अपन कार्य द्वारा पात्र ओ दृश्य कें विश्वसनीय आ जीवंत बनबैत छथि आ एहि मे सहयोग करैत छथि आलोक शिल्पी । आवह संगीत द्वारा प्रदर्शित भाव कें विस्तार देल जाइछ आ ओकरा सहज संवेद्य बनाओल जाइछ। एहि तरहें एहि समस्त शिल्पीक प्रयासक प्रतिफल दर्शकक सामने प्रत्यक्ष होइछ। स्वाभाविक छैक जे एहि समस्तकला - कुशलीक निपुणताए पर नाटकक सफलता निर्भर करैछ । कोनो एकक सफलता सं नाटकक सम्पूर्ण सफलता सुनिश्चित नहि कैल जा सकैछ जखन कि एकक अपटुता / असफलता नाटक कें बाधित करबाक लेल पर्याप्त होइत अछि । मैथिली रंगमंच संग विडम्बना रहलैक जे एकरा अपन अभिनेता छोड़ि आर किछुओ नहि छलैक । जं ई समस्या मात्र आरंभिक रहैत त कोनो बात नहि, परंच एकर स्थायित्व - जेकि मैथिली रंगमंच संग रहलैए, कोनो भाषाक रंगमंच विकास पथ मे अवरोधक होइछ आ मैथिलीयो ताइ सं मुक्त नहि ।

रंगमंचक लेल सर्वप्रथम प्रयोजन नाटक अर्थात नाटकक पोथीक । कलकत्ता मैथिली रंगमंचक जहिया शुभारंभ भेल छल तहिया एकर नितान्त अभाव छलैक । अभाव आइयो छैक परंच स्थिति अपेक्षाकृत नीक । सीताराम चौधरी, गुणनाथ झा, नचिकेता, महेन्द्र मलंगिया, ललन ठाकुर, अक्कूजी, आनन्द, मंत्रेश्वर झा, आदिक पोथी आइ उपलब्ध अछि जे तइ दिन नहि छल । चिन्नीक लड्डू, बसात आ उगना पर कोनो रंगमंच कते दिनधरि चलि पाओत । स्वाभाविक छैक जे अनुवाद द्वारा एहि अभावक पूर्ति कएल गेल । बंगला ओ मैथिली मे निकट सम्पर्क होएबाक कारणे बंगला सं अनुवाद के प्राथमिकता देल गेलैक । कलकत्ता प्रवास मे रहबाक कारणे अनुवादक लोकनि के ने मात्र पोथी

अपितु बंगलाक मंचावलोकनक सुविधा सेहो सहजहि उपलब्ध छलनि । इएह कारण छैक जे एहिठामक अनूदित नाटक कलकत्ते नहि, मिथिलांचलक संगहि आनोठाम सफलतापूर्वक मंचित भेल आ दर्शक द्वारा पसिन्न कएल गेल, प्रशंसित भेल । स्वभावत: कहबाक प्रयोजन नहि जे प्रबोध नारायण सिंह, अणिमा सिंह, इलारानी सिंह, सीताराम चौधरी, बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर आदिक अवदान ने मात्र अनुवादक क्षेत्र मे अपितु एहिद्वारा कलकत्ता रंगमंचक बिकासक सन्दर्भ मे अविस्मरणीय अछि । (एहि सन्दर्भ मे हमर आलेख ''मैथिली आ बंगला नाटकक अन्त: सम्बन्ध'', 'पण्डित श्री गोविन्द झा अर्चा ओ चर्चा' ग्रंथ द्रष्टव्य) परंच एतबा होइतहुं कोनो भाषाक रंगमंच, ओकर उन्नति विकास मात्र अनुवादहि पर त निर्भर क नहि सकैछ । कलकत्ता नाट्य मंचानुरागी लोकनि एहि सत्य कें नीक जकां बुझलनि आ एहि पर गंभीरताक संग बिचारलनि । एकरे परिणाम भेल जे सीताराम चौधरी, गुणनाथ झा, नचिकेता सन् नाट्यकार सामने एलाह आ नाट्य लेखन के एगो नव उत्साह, नव आयाम आ नव दिशा भेटलैक । बाबू साहेब चौधरी, जे आन्दोलनी नेता छलाह आ अभिनेता छलाह तिनका द्वारा ''कुहेस'' सन विलक्षण नाटकक रचना भेल से साधारण बात किन्नहुं नहि कहल जा सकैछ । आचार्य रमानाथ झा सन् आलोचक विगत दस बर्ख मे एहन नाटक नहि लिखल जेबाक बात कहने छथि । उषाक कर्मी जनार्दन झा जे एक कुशल अभिनेता आ संस्थाक कार्यकर्त्ता छलाह, तीन तीनटा नाटक लिखलनि आ तकर सफलतापूर्वक मंचन भेल । तहिना उषाक कर्मी आ मैथिली रंगमंचक कलाकार उत्तम लाल मंडल ''इजोत'' नाटक लिखलनि । मैथिली सेवी बिन्देश्वर मंडल ''क्षमादान'' आ देवन मंडल ''महकारी'' नाटक लिखलनि आ ओहो सफलता पूर्वक मंचित भेल । पश्चात् अशोक झा, आनन्द कुमार झा, आ रसिक जीक नाट्य लेखनक क्षेत्र मे आगमन सेहो एही परिवेशक परिणाम थिक । एकर अतिरिक्तो किछु मौलिक नाटकक रचना प्रकाशन तथा किछु अनुवाद भेल अछि जकर मंचन नहि भ सकल किंवा कलकत्ताक बाहर मंचन-प्रकाशन भेल । एहन पोथी मे नचिकेताक ''जनक आ अन्यान्य एकांकी'' अनुतरण ''आन्दोलन'' ''रामलीला'' मिथिला दर्शन प्रा0 लि0 द्वारा प्रकाशित अछि । शरत् चन्द्र मिश्रक ''समाज चक्र'' मोहन चौधरी द्वारा अनूदित नाटक ''चन्द्रगुप्त'' मैथिली रंगमंच द्वारा प्रकाशित अछि । सुशील जीक ''भामती'' आ रामलोचन ठाकुर द्वारा अनूदित नाटक ''फांस'' क मंचन प्रकाशन पहिने पटनाक नाट्य संस्था ''भंगिमा'' द्वारा भेल अछि ।

कलकत्ता द्वारा मंचित नाटकक विषय वस्तुपर ध्यान देने एकर क्रमिक विकास स्पष्ट परिलक्षित होइछ । ओना त एहूठाम आरंभ हास्य आ वैवाहिक समस्यापरक नाटकें संभेल छलआ ''कनियाँ पुतरा'' ''सुखायल डारि: नव पल्लव'' तथा ''कुहेस'' एही श्रेणी मे अबैछ । किन्तु विषय वस्तुक समायोजन तथा मंच कलाक निर्देशन मे ई पोथीसब निर्विवाद अग्रिम पांती मे स्थान पाओत । गाम सं शहर दिस प्रतिभाक पलायन सन विषय पर विलक्षण कृति थिक ''पाथेय'' । जमीदारीक ढहैत शान आ नव धनाढ्यक गुमानक सजीव चित्र ''एक छल राजा'' प्रस्तुत करैछ । मंच तकनीकक दृष्टियें ''नायकक नाम जीवन'' ''एक छल राजा'' आ ''नाटकक लेल'' एक क्रान्तिकारी पदक्षेप छल । मध्यवर्गीय शहरी जीवनक समस्यापर ''चारि पहर'' आ ''क्रीतदास'' विद्रोहक पृष्ठभूमि मे रचित यात्रा शिल्पक नाटक ''जादूगर'' क अभिनय निर्विवाद अविस्मरणीय थिक । एहिसभ सँ भिन्न थिक राजनन्दन लाल दासक ''सन्तों'' ।

नहि । एक सं एक दक्ष कलाकार । परंच कलाकेन्द्रक विभाजनक संगहि ई लोकनि सेहो दू - भाग मे बंटि गेलाह । ''मैथिली रंगमंच'' मे बाबू साहेब चौधरी, शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, रामलोचन ठाकुर, मोहन चौधरी, कालीकान्त ठाकुर, विष्णुदेव झा, नचिकेता, कान्ति बिहारी मिश्र, जोगेन्द्र झा, परमानन्द झा, चंचल ठाकुर आदि छलाह त ''मिथि यात्रिक'' मे त्रिलोचन झा, दयानाथ झा, फेकू मिश्र, राजेन्द्र मल्लिक, शंकर झा, विश्वम्भर ठाकुर आदि । पहिने अखिल भारतीय मिथिला संघआ मैथिली रंगमंचक सम्बन्ध नीक छल । स्वाभाविक छैक जे रंगमंचक कलाकारे मिथिला संघक नाटक मे सेहो अभिनय करैत छलाह । ओना संघमे गौतम भारती, इन्द्र नारायण मिश्र, उत्तमलाल मंडल, जनार्दन झा, बालेश्वर झा, आदिक सेहो नामोल्लेख आवश्यक । ''मैथिली रंगमंच'' कलकत्ताक उत्तरार्ध मे मि0 संघ सं मतान्तर भ जेबाक कारण श्रीकान्त मंडल, रामलोचन ठाकुर, नचिकेता, मोहन चौधरी आदि जे ''मै0 रंगमंच'' सं सम्पर्कित छलाह, मि0 संघक एक नाटक ''चारि पहर'' मे भाग नहि लेलनि आ ई मंचन मिथि यात्रिकक सहयोगे भेल छलैक । तहिना संघक बाबू साहेब चौधरी, शुकदेव ठाकुर, जनार्दन झा आदि रंगमंचक अभिनय सं फराक रहलाह । नवागत मे कुणाल, महेश्वर झा, आदित्य, गोरखनाथ आदि ''रंगमंच'' क अभिनय मे आगू एलाह । कुर्मि क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोषक नाटक मे सेहो मैथिली रंगमंचक कलाकार लोकनिक संग लक्ष्मण कामति, देवन मंडल आदिक भूमिका उल्लेखनीय अछि । तहिना मिथिला नाटक मे रंगमंच, संघ, मिथि यात्रिकक कलाकारक अतिरिक्त ब्रह्मानन्द सिंह झा, अमरनाथ झा आदि नब कलाकार लोकनि अभिनय केने छलाह । दोसर पर्यायक मंचन मे अशोक झा, नारायण ठाकुर, संजीव झा, सत्येन्द्र झा, राघवेन्द्र झा, विनीत कु0 झा, विनय कुमार प्रतिहस्त आदिक नाम मिथिला विकास परिषदक कलाकार रूप मे अबैछ । कोकिल मंचक संग सुधाचन्द्र झा, ब्रह्मदेव झा, नबोनारायण मिश्र, प्रभुलाल मंडल, ललित पाठक, अर्जुन पाठक, राम शरण, अभय कान्त झा, उग्रकान्त मिश्र, आनन्द किशोर ठाकुर, अमल किशोर मिश्र, प्रेमचन्द्र झा, संजय ठाकुर, तारा कान्त चौधरी, मनोज कुमार चौधरी, ललित ना0 मिश्र, अमरेश झा, रमण ठाकुर, जीतेन्द्र झा, राम उदगार मंडल, भवनाथ झा, जीवेन्द्र मिश्र, विनय कुमार चौधरी, अरूण कुमार राय, गणपति झा, ललन झा, लोकेश नाथ झा, जयवीर झा, दुर्योधन मिश्र, मिथिलेश मिश्र, विश्वनाथ मिश्र, प्रकाश मिश्रक नामक सूची हमरा प्राप्त भेल अछि । निर्देशक छथि गंगा झा ।

अभिनेत्री मैथिलीक अपन नहि छलैक । प्रथम प्रर्याय मे सत्तो देवी, कृष्णा सरकार, बूला सरकार, वीणा सेन, वीणा राय, आरती सन्याल, चन्द्रकला किरण, उमा शर्मा आदि मैथिली रंगमंचक अविछिन्न अंग जकां छली । एहि मे वीणा राय आ चन्द्रकला किरण क नाम विशेष उल्लेखनीय अछि । दोसर पर्याय मे मैथिलानीक मंचपर उपस्थिति देखल जाइछ, जाइमे संगीता झा क नाम मि॰ वि॰ परिषदक संग विशेष उल्लेखनीय अछि । हिनक अभिनय प्रतिभा दर्शक के मुग्ध केने छल परंच जानिने ई किएक मंच विमुख भ गेली । कोकिल मंचक सूचीक अनुसार श्रीमती बन्दना झा, गीता चौधरी, अमोला झा, राधारानी झा, कृष्णारानी झाक नाम अछि । एहिठाम लिखि देब आवश्यक जें दोसर पर्यायक अभिनय मे हमरा बड़ थोड़ मंच देखबाक अवसर भेल अछि तें

जी- विसुन जीक मंचन मे पिंकी आ रिंकी बनर्जीक सशक्त अभिनय प्रथम प्रर्यायक बीना रायक अभिनयक स्मरण दिअबैत छल । मैथिलानीमे संगीता झा क प्रश्चात बन्दना झा क अभिनय प्रतिभा, आ विशेष के ओकरा आंगन क बारहमासा मे हिनक भूमिका निर्विवाद प्रशंसनीय छल । ''मिथिला नाटक'' क मंचन मे श्रीमती मंजु मल्लिक, दीप मालिका सिंह, शारदा चौधरी, रेणुका दास, सुश्री कान्ता झा आदि मैथिलानीक पदार्पण मंच पर अबस्से सुखद रहल परंच से क्षणिके कारण दोसरबेर मंच पर हिनका लोकनि के नहि देखल / पाओल गेल । केवल रेणुका दास एहिसं पूर्व सन्तो नाटक मे 'रमा' क अभिनय तथा 'फुटपाथ' नाटक मे 'मैयां' क अभिनय केने छथि ।

''मैथिली रंगमंच'' क अभिनय मे बंगला नाट्य संस्था ''राजा-साजा'' क सहयोग सेहो स्मरणीय अछि । एहि संस्थाक कलाकार शिशिर दास, विलीन दास, प्रभात चक्रवर्ती, पंकज बनर्जीक संगहि गोपाल दास आ परिमल सेनगुप्तक सहयोग - सहभागिता बिसरल नहि जा सकैछ ।

निर्देशनक क्षेत्र मे कलकत्ताक नाट्य मंच झुझुआन रहल । प्रारंभ मे कमल नारायण कर्ण निर्देशक छलाह, जनिक समर्पण रंगमंचक प्रति प्रश्नातीत अछि । परंच ओ पारसी ढंगक मंचक ज्ञाता छलाह । आधुनिक रंगमंचक अनुभवक अभाव छलनि । आधुनिक रंगमंचक कुशल निर्देशक रूप मे ''मैथिली रंगमंचक'' क माध्यमे सर्वप्रथम सामने एलाह बंगलाक ''राजा-साजा'' क निर्देशक ओ नाट्यकार प्रबीर मुखर्जी । वस्तुत: हिनक निर्देशन मे आधुनिक मैथिली रंगमंचक शुभारंभ ''सुखायल डारि नव पल्लव'' क अभिनय सं होइत अछि जे मैथिली रंगमंचक प्रयोजना छल । एही मंचनमे सर्वप्रथम रिवॉलविंग स्टेजक प्रयोग भेल छल । कहबाक प्रयोजन नहि जे बादक निर्देशक लोकनिक आ विशेष कें श्रीकान्त मंडल आ रामलोचन ठाकुर हिनके प्रेरणा सं ओतेक सफल निर्देशन देबा मे सफलीभूत भेलाह । ''मिथिला विकास परिषद'' क आरंभ मे दयानाथ झा आ पश्चात् अशोक झा तथा ''कोकिल मंच'' मे गंगा झा, झंकार मे शंभुनाथ मिश्रक नाम निर्देशकक रूप मे उल्लेखनीय अछि । नाटक मे निर्देशकक भूमिका बड़ महत्वपूर्ण होइछ । ओकरा मे पोथीक कथा वस्तु बुझबाक बोध हेबाक चाही जाइ आधार पर ओ पोथीक चयन करत । उपलब्ध कलाकार दक्षताक संगहि संभावित दर्शकक बोध – क्षमताक ज्ञान सेहो आवश्यक । नाटकक सफलता मे दर्शकक भूमिका के कोनो स्थिति मे बिसरबाक नहि चाही । कलाकारे जकां दर्शक सेहो तैयार कएल जाइछ । परंच कलाकार के कोनो एक मंचनक लेल तैयार कएल जाइछ ततै दर्शक कें क्रमश: एकक बाद एक अभिनय द्वारा तैयार कएल जाइछ । निर्देशक ओहि कुम्हार सन् होइछ जे माटि आनि ओकरा सानि - मरदि फेर मूर्ति बनबैछ । ओकरा सुखा पका कें रंग - रोगन लगा क्रेताक समक्ष उपस्थित करैछ । एहि मे संदेह नहि जे सब माटिक मूर्ति नहि बनाओल जा सकैछ परंच उपयुक्त माटि चीन्हब त सेहो कुम्हारेक काज थिक । आ तहिना अपन क्रेताक पसिन्न के सेहो ओकरा ध्यान मे राखहि पड़तैक । ओना ओ अपन कलाकारिताक माध्यमे क्रेताक रुचिमे परिवर्तन आनि सकैछ, परंच से राताराती संभव नहि । आवह संगीत, आलोक पात, रूपओ साज-सज्जा भनहि भाड़ा पर आनल जाओ, परंच निर्देशक कें एकर थोड़ बहुत ज्ञान त हैबैक चाही । ओना रंगमंचक सर्वांगीण विकासक लेल आवश्यक जे एकरो ओरियान संस्था स्वयं करय । अपन शिल्पीके शिक्षित

प्रशिक्षित करय ।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, आवह संगीत, आलोकपात, रूप ओ साज–सज्जाक लेल मैथिली नाट्य मंच के सबदिन आन भाषा - संस्कृतिक शिल्पीपर निर्भर करय पड़लैक । आलोक शिल्पी सुशील दास ओ रूपकार अजय दास वस्तुतः मैथिली मंचक अपन शिल्पी सन कुशलता ओ प्रतिवद्धताक संग काज केने छथि आ स्वभावतः हिनका लोकनि कें कोनो स्थिति मे बिसरल नहि जा सकैछ । मंच के प्रकाश क्षेत्र मे विभक्त कय अभिनयक आयोजन जे ''नायकक नाम जीवन'' ''एक छल राजा'' ओ ''नाटकक लेल'' मे ओतेक सफलतापूर्वक संभव भेल तकर श्रेय निर्विवाद सुशील दास कें छनि ।

जखन हम आधुनिक रंगमंचक बात करैत छी त बहुत रास विषय हमरा समक्ष उपस्थित होइत अछि । एक दिस नाटकक विषय वस्तु त दोसर दिस ओकर उपस्थापना आ फेर देश - विदेशक रंगमंचक गति - प्रकृति । कथा वस्तुक आधार पर ''पाथेय'' ''एक छल राजा'' ''नाटकक लेल'' ''चारि पहर'' ''नसबन्दी'' आ ''जादूगर'' त शिल्पक आधार पर ''एक छल राजा'' ''नाटकक लेल'' आ ''जादूगर'' मैथिली रंगमंचक इतिहास मे एक - एकटा क्रान्तिकारी पदक्षेप कहल जा सकैछ । दोसर पर्यायक प्रस्तुति मे ''जुआयल कनकनी'' ''ओकरा आङनक बारह मासा'' ''रक्त'' आदिक उल्लेख कएल जा सकैछ । एहिठाम उल्लेखनीय जे पहिल पर्यायक ''पाथेय'' ''एक छल राजा'' ''नाटकक लेल'' क रचना प्रकाशनओ ''चारि पहर'' क अनुवाद तथा ''जादूगर'' क अनुवाद ओ प्रकाशनक श्रेय सेहो कलकत्ते के छैक । मैथिलीक पहिल अध्ययन कक्षीय नाटक कलकत्तेक ''मैथिली रंगमंच'' द्वारा प्रस्तु भेल अछि तहिना नाट्य मंचक विकास के ध्यान में राखि सर्वप्रथम एतहिसं मिथियात्रिकक सौजन्य सं ''लोकमंच'' आ मैथिली रंगमंच द्वारा ''रंगमंच'' नामक नाट्य - विषयक पत्रिका क्रमशः गुणनाथ झा आ रामलोचन ठाकुरक संपादन मे प्रकाशित भेल अछि । मैथिली नाट्यकार आ निर्देशक कुणालक नाम आइ भनहि पटनाक रंगमंचक संग जुड़ल हो, परंच हिनक मंचयात्राक विधिवत आरंभ कलकत्ते सं भेल अछि । तहिना अरिपन क निर्देशक कौशल किशोर दास सिद्धिरस्तु एहीठाम सिखने हलाह । यद्यपि दोसर पर्यायक नाट्य - मंचन मे हमरा अपेक्षित प्रगति परिलक्षित नहि होइछ तथापि रंगमंचक यात्रा मे लागल विराम वा कही दीर्घविरामक अवसान शुभ आ सुखद त लगिते अछि । वर्तमान मे जं आनो भाषाक मंच दिस तकैत छी आ ओकरा सत्तरि दशकक मंच सं तुलना करैत छी त स्थिति दुखद ओ निराशाजनके बुझि पड़ैछ ।

एहि सभक अतिरिक्त मिथिला विकास परिषद द्वारा 28 अप्रिल सँ 1 मइ 2002, धरि आयोजित चतुर्दिवसीय नाट्य प्रतियोगिता आ तइ अवसर पर प्रकाशित भव्य स्मारिका क निश्चिते थोड़ महत्व नाहि । ओना आयोजक द्वारा पुरस्कारक लोभक संवरण नहि क पओनाइ एकर गरिमा के धूमिल अबस्से करैछ ।

कलकत्ताक रंगमंचक जयजात्रा मे योगदानक लेल लेखक, अनुवादक निर्देशक अभिनेता - अभिनेत्रीगणक यथासंभव नामोल्लेख भेल अछि । ओना अनेको कलाकुशलीक नामोल्लेख छुटि गेल अछि, विशेष कें पहिल पर्यायक ओहन अभिनेता अभिनेत्रीक जे एक वा दूटा अभिनय मे भाग लेने छथि । एहन किछु प्रकाशित - सामग्रीक अभावें भेल अछि । हम अपनाभरि प्रयास कइयो कें समग्र सूचना - संग्रह नहि क पाओल । परंच ताइ सं हुनका लोकनिक महत्व कें झूस क कथमपि नहि बूझल जेबाक चाही । एहिठाम हम चर्चा करय चाहब चंचल ठाकुरक जे लेक मार्केटक विपरीत फूटपाथ पर बैसि दाढ़ी - केश बना अपन तथा अपन परिवारक भरण - पोषण करैत छलाह, परंच नाटक सं ततेक ने सिनेह जे हुनका लेल प्रायः नाटक मे छोटो छीन रोल क व्यवस्था कएले जाइत छल । छोट - छीन एहि दुआरे जे अभिनय मे कुशल नहि छलाह, परंच पूर्वाभ्यास मे कहियो गरहाजिर नहि । उल्लेखनीय छथि लक्ष्मीनारायण मिश्र जे अपन आवश्यक काज अनठा अभिनेत्री लोकनि के पार्ट घोषबैत छलाह आ प्रायः पर्दाक पाछा - सूत्रधारक भूमिका निर्वाह करैत छलाह । आ अन्त मे नाट्य - संस्थाक ओ कर्मी लोकनि जे मंच पर त नहि अबैत छथि परंच अपन कष्टार्जित पाइ आ परीश्रमसं मंचक आयोजन सफल करैत छथि । ओ हजार हजार दर्शक लोकनि जे अपन पाइक संगहि बहुमूल्य समय व्यय क कें नाटक देखय लेल अबैत छथि, अभिनय नीक भेने थपड़ी बजा कलाकुशली कें प्रोत्साहित करैत छथि, अधलाह लगने समुचित समालोचना द्वारा दिशा निर्देश दैत छथि तिनको लोकनिक अवदान मैथिली रंगमंचक एहि जयजात्रा मे थोड़ क नहि आंकल जैबाक चाही । ते ई शेष नहि, आरंभे बुझू ।

(2004)

कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन, मैथिली मुक्ति मोर्चा आ पंडित देवनारायण झा

कलकत्ता मैथिली भाषीक लेल तीर्थस्थान थिक । ई बात केओ आन नहि, स्वयं आचार्य रमानाथ झा कहने छलाह । हुनक कथनक औचित्यपर केओ कोनो प्रश्नचिन्ह नहि लगओलक । लगएबाक कोनो आधार, कोनो औचित्य नहि छलैक, नहि छैक ।

मैथिलीक आदि उपलब्ध साहित्य 'चर्यापद'क प्रकाशन सर्वप्रथम कलकत्ते सं भेल अछि । कविपति विद्यापतिक सर्वबृहत आ प्रमाणिक पदावलीक संकलन प्रकाशन एहिठाम सं भेल अछि । कविशेषचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर'क प्रकाशन एहिठाम सं भेल अछि । मैथिलीक प्रथम उपन्यास जीवनाथ मिश्र विचरित 'मोहिनी मोहन'क रचना प्रकाशन एहिठाम सं सन् 1315 साल मे भेल अछि । प्रो0 हरिमोहन झाक 'चर्चरी', राजकमल चौधरीक 'स्वरगंधा' यात्रीक 'बलचनमा', मणिपद्मक 'लोरिक विजय', 'नैका बनिजारा', ललितक 'प्रतिनिधि', कीर्तिनारायण मिश्रक 'सीमान्त'क अतिरिक्त शताधिक पोथिक प्रकाशन एहिठाम सं भेल अछि । 'मैथिली लोकगीत' आ 'मैथिली लोक कथा'क अनुपम पोथी एहिठाम सं प्रकाशित भेल अछि । आधुनिक भारतीय भाषाक रूप मे मैथिलीक मान्यता सर्वप्रथम कलकत्ते विश्व विद्यालय द्वारा 1919 ई0 मे देल गेल छल । मिथिला सेवक, मिथिला दर्शन, मैथिली कविता, शिखा, सुल्फा, देसकोस, कर्णामृत, देसिल बयना, मिथिला समाद, प्रवासक भेंट, मिथिला चेतना, अनुवार्ता, मिथिला चेम्बरक सनेस (आब 'श्री मिथिला') भोरुकवा आदि पत्रिकाक प्रकाशन एहिठाम सं भेल अछि । केवल नाट्य-मंच के समर्पित पत्र सर्वप्रथम एहिठाम सं 'रंगमंच' आ 'लोकमंच' प्रकाशित भेल अछि । मैथिलीक प्रथम मिनी पत्र 'मि' एहिठाम सं प्रकाशित भेल अछि ।

कलकत्ताक मैथिली साहित्यकारक एक दीर्घ परपंरा अछि । जीवनाथ मिश्र सं ल कँ डा0 प्रबोध नारायण सिंह, डा0 अणिमा सिंह, पं0 कालीकान्त झा, श्रुतधर, राजकमल चौधरी, कीर्तिनारायण मिश्र, डा0 वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अग्निपुष्प, बाबू साहेब चौधरी, गुणनाथ झा, नचिकेता, डा0 इलारीनी सिंह, सीताराम चौधरी, विन्देश्वर मंडल, सुशील, सियाराम झा 'सरस', जनार्दन झा, उत्तम लाल मंडल, देवन मंडल, अशोक झा, राजनन्दन लाल दास, अर्जुनलाल करण, शरतचन्द्र मिश्र, लक्ष्मण झा 'सागर', रसिकजी, द्वारिका नाथ चौधरी नवीन, लूटन ठाकुर, विनय भूषण, अनमोल, मिथिलेश, आमोद कुमार, आनन्द कुमार झा, भारती, विद्यानन्द झा, डा0 बुद्धिनाथ मिश्र आ नवीन चौधरीक नाम कलकत्ताक संग ओत-प्रोत भावें जुड़ल अछि । अपन आकस्मिक अवसान सं किछु दिन पूर्व प्रभाश कुमार चौधरीक एहि महानगर मे स्थानान्तरण मैथिली साहित्य मे एगो स्पष्ट छाप छोड़ि गेल अछि। एकावन कथाकारक कथाक संग 'कथादिशा'क महाविशेषांक प्रकाशन युवा लेखनक रजत जयन्ती आ सगर राति दीप जरयक आयोजन हुनक एकल प्रयासक प्रतिफलन छल जकरा कोनो स्थिति मे बिसरल नहि जा सकैछ । एकर अतिरिक्त, मैथिलीक भरिसके कोनो एहन साहित्यकार हेताह जे स्थानीय कोनो संस्थाक आमंत्रण पर कलकत्ता नहि आयल होथि ।

मैथिली रंगमंचक विकास मे कलकत्ताक योगदान अतुलनीय अछि । ओना त मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास बड़ प्राचीन आ समृद्ध, परंच अप्रिय होइतहुं सत्य त इएह थिक जे विगत शतकक पूर्वार्द्ध मे ई प्रायः विलुप्त भ गेल छल आ समग्र मिथिला मे बिजातीय नाटक नौटंकीक बाढ़ि सन् आबि गेल छल । कलकत्ता मे मैथिली रंगमंचक शुभारंभ 1954 सं होइत अछि । एहि साल स्थानीय डागा धर्मशाला मे 'छीक' प्रहसन मंचस्थ भेल छल आ एकर सफलता रंगकर्मी लोकनि के ततेक प्रभावित उत्साहित केलक जे ओहि साल 'उगना'क मंचन सेहो भेल । नाटक - मंचक उपयोगिता-महत्ता कँ बुझैत आ ओकर उन्नति-विकास कँ ध्यान मे राखि 30 दिसम्बर 1959 कँ 'मिथिला कला केन्द्र'क स्थापना भेल । 1 जनवरी 1966 के 'मैथिली रंगमंच' बनल जे 'कलाकेन्द्र'क कर्मी लोकनिक मतभेदक परिणाम छल । 1970 मे 'मिथिला केन्द्र'क अवसान भेल आ बांकी सदस्य लोकनि 'मिथि-यात्रिक' नामक संस्थाक निर्माण केलनि। 1976 धरि नाट्य-मंचनक क्रम अबाध आ तीव्रगतिऎ चलैत रहल आ एहू बर्ख 'मैथिली रंगमंच' द्वारा तीनटा आ अ0 भा0 मिथिला संघ द्वारा एकगोट नाटक मंचित भेल । कुल मिला कँ 1954 सँ 1976 धरि लगभग पचासो नाटक मंचित भेल अछि जाइ मे मिथिला कलाकेन्द्र, मैथिली रंगमंच, मिथि-यांत्रिकक अतिरिक्त अ0 भा0 मिथिला संघ, उषा कर्मी लोकनिक 'मित्रसंघ' आ 'कुर्मी क्षत्रीय छात्रवृत्ति कोष'क योगदान उल्लेखनीय अछि ।

कोनो भाषाक रंगमंचक इतिहास मे पचास गोट नाट्य-मंचन निर्विवाद बड़ महत्वपूर्ण नहि । परंच ई बात महत्वपूर्ण अबस्से अछि जे नाटक ककरा द्वारा, कतय सँ, कोन स्थिति मे आ कोन रूपे प्रस्तुत कएल गेल । कलकत्ता मिथिलाक कोनो नगर नहि थिक आ एहिठाम जे केओ अबैत छथि से जीविकाक संधान मे आ हुनका लेलं पेट आ परिवार प्रधान होइत अछि । दोसर मञ्चोपयोगी नाटकक अभाव मैथिली मे आइयो अछि त पचास बरख पूर्वक बाते की । तेहना स्थिति मे शून्य सँ आरंभ क अन्यान्य भारतीय भाषाक नाट्य-मंचक समकक्ष मैथिली रंगमंच के ठाढ़ करब साधारण बात किन्नहुं नहि । एहि मे सन्देहक कोनो अवकाश नहि जे सत्तरि दशकक कलकत्ताक रंगमंच अन्य भारतीय भाषाक रंगमंचक समकक्ष अपन स्थान बना लेने छल । मंचोपयोगी नाटकक अभाव के ध्यान मे राखि डा0 प्रबोध नारायण सिंह, बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर, सीताराम चौधरी, डा0 इलारीनी सिंह द्वारा जे अनुवादक परंपरा चलल छल से आगा चलि कँ मौलिक रचनाक पथ प्रसस्त कएलक आ बाबू साहेब चौधरी, सीताराम चौधरी, नचिकेता, गुणनाथ झा, बिन्देश्वर मंडल, जनार्दन झा, उत्तम लाल मंडल, देवन मंडल आदि नाट्यकारक प्रयासें मैथिलीक नाट्य-साहित्य समृद्ध भेल । नाट्य-मंचक एहि अभियान मे श्रीकान्त मंडल, शुकदेव ठाकुर, लक्ष्मी नारायण मिश्र, मोहन चौधरी, बाबू साहेब चौधरी, फेकू मिश्र, कमल नारायण कर्ण, जनार्दन झा, गौतम भारती, उत्तम लाल मंडल, दयानाथ झा, रामलोचन ठाकुर, कालीकान्त ठाकुर, इन्द्रनारायण मिश्र, नचिकेता, विश्वम्भर ठाकुर, कुणाल, शंकर झा, चंचल ठाकुर, प्रवीर मुखर्जी, प्रभात चक्रवर्ती, शिशिर दास, विलीन दास, गोपालदास, सुशील दास, अजय दास, राजेन्द्र मल्लिक, सीता देवी, सत्ती देवी, वीणा सेन, वीणा राय, कृष्णा सरकार, बूला सरकार, आरती सन्याल, चन्द्रकलाकिरण, उमा शर्मा आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि ।

नाटक-मंचक विकास लेल कलकत्ताक किछु अभिनव प्रयासक चर्च सर्वथा समीचीन बुझना जाइछ । उल्लेखनीय जे नाट्य-प्रदर्शन टीकस पर होइत छल । 1966 मे मैथिली रंगमंच'क स्थापनाक संग मंचोपयोगी नाटकक अभाव के देखि निर्णय लेल गेल जे मंचित नाटकक प्रकाशन सेहो कएल जाय आ तकरा दू टाकाक टीकस कीननिहार कें मुफ्त देल जाय । एक टाकाक टीकस कीननिहारि मात्र मंच देखि सकैत छथि । एहि तरहेँ प्रकाशन आ वितरणक समस्याक सहज समाधान कएल गेल । एहि योजनाक अन्तर्गत सुखायल डारि नव पल्लव, कुहेस, बेमातर, क्षमादान, एक छल राजा, नाटकक लेल, प्रेम एक कविता आदि पोथी प्रकाशित भेल । एकर परिणाम भेल जे प्रकाशित पोथी सहजहि मिथिलाक गाम-गाम धरि पहुंचि गेल आ मंचित भेल । नाट्य-मंचक सार्विक विकास कें ध्यान मे रखैत 'मैथिली रंगमंच' द्वारा रामलोचन ठाकुरक संपादन मे 'रंगमंच' आ मिथि-यात्रिक द्वारा गुणनाथ झाक संपादन मे 'लोकमंच' पत्रिकाक प्रकाशन कम महत्वपूर्ण नहि मानल जायत । मंच तकनीक दृष्टि सं पहिल बेर 'घूर्णायमान' मंचक प्रयोग, मंच के प्रकाश क्षेत्र मे विभक्त कय अभिनय, अध्ययन कक्षीय नाटक, नेना - भुटकाक नाटक (मलंगियाक लेभरायल अन्हार मे एकटा इजोत) आदि निर्विवाद 'मैथिली रंगमंच'क उपलब्धि मानल जायत । तहिना कथाक दृष्टि सं दहेज-प्रथा सं आरंभ कय श्रमिक विद्रोह (जादूगर) आ भाषा-क्रान्तिक पृष्ठभूमि मे किरणजीक जय जन्मभूमिक नवरूप 'सन्तान'क मंचन तथा मिथि-यात्रिकक 'पाथेय'क मंचन विशेष महत्वपूर्ण मानल जायत । एहिठाम उल्लेखनीय जे 'पाथेय'क मंचन 'मैथिली रंगमंच' सेहो कएने छल । ओना त कलकत्ता मे 'मिथिला विकास परिषद' आ 'कोकिल मंच' आइयो नाटक करैत अछि परंच कलकत्ताक उन्नत नाट्य-परम्पराक निर्वहन-अग्रसारन मे असमर्थ बुझना जाइछ ।

कलकत्ता मैथिली आन्दोलन मे अगुआ रहल अछि । एहि बात के प्राय: सभ केओ स्वीकार करैत छथि । ओना त आन्दोलन शब्दक अर्थ बड़ व्यापक, परंच आइ-कालि अपन माङक लेल सभा-समावेश, जुलूस नारेबाजी, अनशन, तोड़-फोड़ आदि कार्य आन्दोलन बूझल-कहल जाइछ । एहि क्षेत्र मे कलकत्ताक योगदानक चर्च करब सेहो आवश्यक । कलकत्ता मे मैथिली सेवी-संस्थाक संगठन सर्वप्रथम कहिया भेल से निस्तुकी नहि कहल जा सकैछ । ओना हमरा जहांधरि सुनल अछि 1937 मे उदित नारायण झाक प्रयासे 'मैथिल युवक संघ' आ 1945 मे हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'क प्रयास सँ अ0 भा0 मैथिल संघक स्थापना भेल । ओना एहि सँ पूर्व 'मिथिलेन्दु जीक 'मिथिला सेवक संघ'क नाम सेहो सूनल जाइछ। एहि संस्था सभक उद्देश्य जे रहल हो परंच उपलब्ध प्रकाशित प्रर्चा सब हिन्दी मे रहबाक कारणे भाषा-चेतनाक अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ । 1919 मे कुब्जी झा, मार्कण्डेय मिश्र, बबुआजी मिश्र आदि द्वारा गठित 'मैथिल-शिक्षित समाज'क सम्बन्ध जानकारी उपलब्ध नहि अछि । कहल जाइछ जे 1952 मे डा0 लक्ष्मण झा मिथिलाराज्यक आवाज उठओलनि आ ताहिक्रम मे मिथिला लोक संघक स्थापना भेल । 1957 मे प्रो0 हरिमोहन झा आ डा0 ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक प्रयास सँ मैथिल संघ आ लोक संघक विलय बेल आ नब संस्था अ0 भा0 मिथिला संघ बनल । एहि संस्थाक मुख्य कार्य मिथिला-मैथिलीक मान्यताक लेल प्रयास करब छल । आग चलिकें किछु गोटे मतान्तरक कारणे फराक भय 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क स्थापना केलनि आ मैथिली साहित्यक प्रकाशन के अपन प्रधान कार्यक रूप मे घोषणा

केलनि । एहि संस्था मे महेन्द्र नारायण झा, परमेश्वर मिश्र, चन्द्रकान्त मिश्र, मुकुटधारी मिश्र, शरतचन्द्र मिश्र, कालीकान्त झा, किशोरीकान्त मिश्र आदि प्रमुख छलाह । मिथिला संघ मे मिथिलेन्दु जी, प्रबोध नारायण सिंह, बाबू साहेब चौधरी, उदित नारायण झा, महावीर झा, सुकदेव ठाकुर, देवनारायण झा, सत्यनारायण लाल दास, राजनन्दन लाल दास, रामकृष्ण ठाकुर, नरेन्द्र झा, प्रभाकर झा, मौजे पाठक, वैद्यनाथ झा, जय नारायण मिश्र, ब्रह्मनारायण झा, पीताम्बर पाठक आदि । फेर किछु दिनक पश्चात् उदित बाबू, महावीर बाबू आदि मिथिला संघ सँ फराक भ ऑल इण्डिया मैथिल संघ बनओलनि । ओमहर परिषद सं किछु गोटे फराक भ 'प्रकाशन समिति' बनओलनि । पश्चात् लूटन ठाकुर आ कमलेश झा मिलि 'नवतुरिया संघ' बनओलनि आ फेर कमलेश जी अपन 'मिथिला संघर्ष समिति' । एमहर 'कोकिल मंच' 'मिथिला विकास परिषद', 'मिथिला उदय संघ' 'विद्यापति स्मारक मंच' नामे आर चारि गोट संस्था बनल अछि । 'कर्णगोष्ठी' नामक संस्था सेहो प्रकाशनक क्षेत्र मे 'कर्णामृत' पत्रिकाक संगहि कएकटा पोथी द्वारा उल्लेखनीय कार्य केलक अछि । मिथिला सांस्कृतिक परिषद प्राय: पचीसो पोथीक प्रकाशन क चुकल अछि आ अ0भा0 मि0 संघ तथा मिथिला दर्शन प्रा0लि0क संयुक्त प्रकाशन पचास सं अधिके हेबाक चाही । मैथिली संघर्ष समिति आ मिथिला समाद तीनगोट पोथी प्रकाशित क चुकल जाइ मे 'अमर-कीर्ति कवि तोर' सेहो अछि । वि0 स्मारक मंच द्वारा 'कविपति विद्यापति मतिमान' सन वृहद - विलक्षण ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि ।

घोषित उद्देश्य भनहि जे कोनो किएक ने हो, वास्तविकता त इएह थिक जे प्रकाशन आ आन्दोलनक क्षेत्र मे कलकत्ताक समस्त संस्थाक थोड़-बहुत योगदान रहल अछि । मैथिलीक जे कोनो मान्यता आइधरि भेटल अछि ओहि मे कलकत्ता अपन अग्रणी भूमिकाक निर्वाह केलक अछि । सर्वप्रथम साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यताक बात लिअ । 24 दिसम्बर 1957 अ0 भा0 लेखक सम्मेलन कलकत्ता मे भेल छल । एकर प्रधान अतिथि नेहरू जी छलाह । मैथिली मान्य भाषा नहि रहबाक कारणे ओकर प्रतिनिधि आमंत्रित नहि छलाह । परंच कलकत्ताक बाबू साहेब चौधरी आ पं0 देवनारायण झाक प्रयासें आ बंगला लेखक मनोज बसु, बुद्धदेव बसु ओ ताराशंकर बन्द्योपाध्यायक सहयोगे मैथिली लेखक आमंत्रित भेलाह । मात्र आमंत्रित नहि, नेहरूक समक्ष अपन वक्तव्य राखबाक सुयोग सेहो भेटलनि आ आश्चर्यक विषय जे डा0 लक्ष्मण झाक वक्तव्यक जबाब मे नेहरू जी स्पष्ट कहलनि जे ओहि दिनक प्रात: 9 बजे धरि हुनका मैथिली मादे जानल नहि छलनि । हुनका अनुसारे सत्यनारायण सिंह मंत्रीक अतिरिक्त कतेको एम0पी0 मिथिलाक छथि परंच मैथिलीक, ओकर प्राचीन समृद्ध साहित्य, ओकर जीवंतताक चर्च केओ कहियो नहि केलनि । ओना सरकार कोनो भाषा कें दाबि क नहि राखय चाहैछ । पश्चात् डा0 जयकान्त मिश्र द्वारा दिल्लीमे मैथिली पोथी प्रदर्शनी भेल जाइ मे कलकत्ते सं हवाई जहाज मार्फत पोथी पठाओल गेल छल आ जकर उद्घाटन स्वयं नेहरू जी केने छलाह, साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यताक मार्ग प्रशस्त कएलक । सा0 अकादेमीक अध्यक्ष स्वयं नेहरू जी छलाह जे डा0 सुनीति कुमार चटर्जी, डा0 सुकुमार सेन, डा0 अत्रे, डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा0 शुभद्र झाके लय एक कमिटिक गठन करओलनि आ एहि कमेटीक सलाह पर मैथिलीके साहित्य अकादेमीक

मान्यता भेटलैक । नार्थ बिहार एक्सप्रेसक नाम बदलि 'मिथिला एक्सप्रेस' कराएब वस्तुत: पं0 देवनारायण झाक एकक प्रयासक फल थिक जाइ मे तत्कालीन बंगाल पैसेन्जर्स एसोसिएशनक अध्यक्ष क्षीरोद भट्टाचार्य आ एम0पी0 श्रीमती इलापाल चौधरीक सहयोग उल्लेखनीय अछि । तहिना विद्यापति डाक-टीकस एकक सांस्कृतिक परिषद क प्रयासे संभव भेल अछि । स्थानीय गिरिश पार्क मे कविपति विद्यापतिक आवक्ष प्रस्तर प्रतिमाक प्रतिष्ठा 'मिथिला विकास परिषदक' प्रयासे संभव भेल । सियालदह फ्लाई ओभरक 'विद्यापति सेतु' नामकरण मे विभिन्न संस्थाक सहयोग छल आ ओइपर कविपतिक आवक्ष मर्मर प्रतिमाक प्रतिष्ठापन 'विद्यापति स्मारक मंच' द्वारा भेल । मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली अकादेमीक स्थापना, बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान तथा दड़िभंगा रेडियो स्टेशनक स्थापना यद्यपि ललित बाबूक सत् प्रयासक परिणति थिक परंच ओकर मांग जे सर्वप्रथम कलकत्ते सं कएल गेल छल, तदर्थ पर्चा-पोस्टर स्मारपत्रादि देल गेल छल तकरा अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ । तहिना मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक लेल कतेको खेप जुलूस, स्मारपत्र, अनशन आदि कार्यक्रम चलाओल गेल अछि ।

हम 1963 मे मैट्रिक पास कएल आ एहि सालक शेष मे जीविकाक संधान मे मिथिलाक गाम छोड़ि बंगलाक एहि महानगर मे आयल रही । संयोग एहन जो जीविकाक जोगार त बड़ विलम्ब सं भेल परंच मैथिलीक सानिध्य बड़ शीघ्र । एकर कारण छल कलकत्ताक मैथिली प्रेम आ तदर्थ चलि रहल विभिन्न कार्य-कलाप । हम अपन पितिऔत श्री शुकदेव ठाकुरक संग रहैत रही । शुकदेव ठाकुर आ पं0 देवनारायण झा अ0भा0 मिथिला संघक एक-एक स्तम्भ छलाह । दूनू मे तेहन सौजन्य छलनि जे देवनारायण बाबू सहजहि हमर भाइ साहेब बनि गेलाह । मोन पड़ैछ, एक खेप हुनका गामपर पहुंचल रही । मुक्तिमोर्चाक आन्दोलनक क्रम मे भरिसक । दुपहरियाक समय । दरबजे पर छलाह । हमरा देखिते प्रसन्नताक जे लहरि हुनका मुंहपर देखल तकर वर्णन करब असंभव । तुरत्ते टाहि लगओलनि-सुनै छी! रामलोचन आयलए ! एहि सं पहिने भौजीक दर्शन हमरा नहि भेल छल । पहुंचल रही हम अबस्से परंच भीड़क बीच । तें जानि ने ओ हमर नाम सुनने छली वा नहि किन्तु अनति विलम्ब कोनटा लग उपस्थित भेली, जेना बजाहटिक प्रतीक्षे मे रहल होथि । स्वाभावित छैक घोघ तनने । भाइ साहेब चौट्टे बजलाह - अरे, एकरा सं कोन लाज ! ई त रामलोचन थिक, रामलोचन । बतहुक भाइ । बतहु अर्थात् हमर अग्रज शुकदेव ठाकुर । कहबाक प्रयोजन नहि जे हमरा जहिया कहियो हुनक सहयोग वा दिशा निर्देशक प्रयोजन पड़ल हम साधिकार हुनका लग उपस्थित होइ, कहियो सशरीर त कहियो पत्रक माध्यमे आ ओहो अनुजवत सहयोग, उत्साह-प्रेरणा जोगबैत रहलाह । ललित स्मृति ग्रंथ जखन ओ हमरा देलनि त ओइ मे 'मैथिली आन्दोलनक प्राण' लिखल देखि कहलयिनि - भाइ साहेब, ई की लिखि देलिएक ? बिहुसैत कहलनि - कोनो की गलती लिखलिऐए । अंय हओ, कलकत्ताक समस्त संस्था के एक मंचपर अननाइ आ पटनाक ओ प्रदर्शन, एहन बैमान के हैत जे एकरा अस्वीकार करत । सत्ते त, कलकत्ता के जते ओ जनैत छलाह तत्ते हमरा कहां जानल छल । ओना इहो बात सत्ते जे हमर जत्ते किएक ने प्रयास हो, जं किशोरी कान्त मिश्र आ कमलेश झा नहि आगू अबितथि, जं कलकत्ताक मैथिली प्रेम कनियों झूस रहितै त 'मैथिली मुक्तिमोर्चा' क गठन सहज संभव नहि छल ।

बात जनवरी 1974 क थिक । हम आ हमर अग्रज शुकदेव ठाकुर गामे रही । मोन भेल जे गाम मे विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल जाये। 20 जनवरीक दिन निश्चित भेल । गामक उत्साही युवक कुणाल आ हुनक सहपाठी राजलाल पंडित नोत-हकारक भार लेलनि आ साइकिल सं मधुबनी सुन्दरपुर बीरा, बहेड़ा, कुर्सो नदियामीक भ्रमण केलनि । भाइ जीवकान्त खजौली मे छलाह । पहिने त कने कचोट अबस्से भेल जखन कि मधुबनीक एक महान साहित्यकार जीपक अभाव मे आयब नहि गछलनि । हमरा लोकनि खजौली सं बाबूपाली धरिक लेल बैलगाड़ीक व्यवस्था केने रही । परंच बड़द जे महादेव भेलाह आ तें बैलगाड़ी पर हमर महान साहित्यकार नहि चढ़ैत छथि से नहि बूझल छल । ओना भाइ जीवकान्त, आदरणीय वर्माजी, देवनारायण बाबू, प्रदीप मैथिली पुत्र आदि ओही गाड़ी सँ बाटक आनन्द लैत पहुंचलाह । पहुंचल छलाह प्रवासी साहित्यालंकार, नवोदित कवि-कथाकार गंधराज, खजौली स्कूलक प्रधानाध्यापक प्रभु नारायण कुमर । आशातीत सफलता हमरा लोकनि कैं भेटल छल । गामक प्रतिष्ठित व्यक्ति नरसिंह बाबूक सहयोग मोने अछि । बहुत दिनधरि गाम जाइ त लोक ओहि आयोजनक चर्च करैत फेर कोनो आयोजनक आग्रह करैत । देवनारायण बाबूक भाषण आ प्रदीप मैथिलीपुत्रक गीत 'पहिरि लाल सारी उपारै खेसारी' बहुत दिनधरि लोक कैं मोन रहलैक । आ हमरा आइयो मोन अछि जे एकर प्रेरणा कतय सं भेटल छल ।

देवनारायण बाबू कलकत्ता छोड़ि गामहि रहय लागल छलाह । आर्थिक स्थिति नीक नहि छलनि । उपार्जनक साधन पंडिताइ आ जीवन बीमाक एजेन्सी । परिवार पैध । मुदा ओ गरीब नहि छलाह । ओहन विशाल ह्रदयक लोक दीन-हीन भइयो ने सकैछ । प्रतिकूल परिस्थितियो मे मैथिलीक मशाल जरबैत रहैत छलाह । 5 जनवरी 1974 कें भाइ जीवकान्तक संग दड़िभंगा गेल रही - साहित्यकार समाङ लोकनि सं भेंट-घांटक निमित्त । सुकान्त 'मिथिला टाइम्स' मे छल आ ओकरे डेरामे राति ठहरबाक नेआर छल । हठात् साइकिल सं जुमलाह देवनारायण बाबू । हमरा लोकनि कैं देखिते विभोर भ गेलाह । 'आयोजनक सफलता सुनिश्चित । मां मैथिलीक कृपा ।' बात छलैक जे 6 जनवरी कैं ओ सुन्दरपुर मे विद्यापति स्मृति - पर्व आ मणिपद्मक संवर्धनाक आयोजन केने छलाह । आदेश भेल जे आयोजन मे रहबाक अछि । भोजन सेहो हुनके ओतय करबाक अछि । प्रात: हम, भाइ जीवकान्त आ सुकान्त समय सं पहुंचलौं । आयोजन त पोखरीक भीड़ पर पुस्तकालयक सामने छलैक परंच बैसार हुनका दलान पर । देखल जे आदरणीय किरणजी आ वर्माजी पहिनहि सं उपस्थित । फेर एकाएकी भाइ सोमदेव, प्रदीप मैथिलीपुत्र, जीवाकान्त आ मैथिली लेल जखन-तखन आवाज उठओनिहार सांसद भोगेन्द्र झा । आर बहुतो लोक छलाह परंच नाम स्मरण नहि अछि । तीन बजे भोजन पर्व । प्राय: पचीस-तीस गोटक भोजनक व्यवस्था आ जाहि सौजन्य आत्मीयताक संग सब कैं भोजन कराओल गेल छल से एकमात्र हुनके सं संभव । पश्चात् पर्व आ वर्माजीक सम्वर्धना विधिवत् भेल । शेष मे काव्य-पाठक कार्यक्रम । अन्यान्य कविगणक संगहि हमहुं अपन कविता पाठ कएल । हमर आ सुकान्तक कविता बेस प्रशंसित भेल आ देवनारायण बाबू गदगद स्वरें घोषणा केलनि - कलकत्ता छिऐ । आ एहि आयोजन सं गाम घुरलापर हम अपना गाम मे आयोजनक प्रस्ताव अपन पितिऔत लग रखने छलौं आ हुनक सहमति-

सहयोग सं गामक सफल आयोजन संभव भेल छल ।

10 जून 1980 कें बिहारक तत्कालीन मैथिली भाषी मुख्यमंत्री डा0 जगन्नाथ मिश्र उर्दू कें बिहारक दोसर राजभाषा बना देलनि । हमरा लोकनिक दीर्घदिनक माङ-मैथिली कें बिहारक दोसर राजभाषा आ मिथिलांचलक प्रथम भाषा बनेबाक विरुद्ध जगन्नाथ मिश्रक ई घोषणा एक सुपरिकल्पित - घृणित षड़यंत्र छल । स्पष्ट छैक जे हमरा लोकनि कें कोनो भाषा सं द्वेष नहि । हमरा लोकनि मानैत छी जे भाषा सेतु थिक ने कि टाट । परंच जं कोनो भाषा हमर चूल्हि-चिनमार दखल करय चाहत त तकरा सहन करब निर्जीवता- नपुंसकताक लक्षण थिक । भाषा कोनो जाति वा धर्मक नहि अपितु भूमिक होइत अछि, परंच एहि सर्वमान्य सत्यक विपरीत एहि महान भारत देशक दू गोट भाषा - हिन्दी आ उर्दू के बलात् धर्मक संग जोड़ि देल गेल अछि । इएह कारण छैक जे उर्दू केवल मात्र ओही प्रदेशक मुसलमानक 'मातृभाषा' छैक जकरा हिन्दी प्रदेश वा हिन्दी भाषी प्रदेश घोषित कैल गेल छैक । जगन्नाथ मिश्रक निर्णयक पाछा इएह भावना छल । हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तानक नारा आ संकीर्ण भावना विशाल भारत भूमि के दू भाग मे विभक्त कइए चुकल छल । स्वाभाविक कारणे हिन्दुस्तानक राष्ट्रभाषा हिन्दी आ पाकिस्तान राष्ट्रभाषा उर्दू के बनाओल गेल । कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि दूनू भाषा कें अपन माटि कहियो ने छलैक आ ई मात्र शहरी शिक्षित समाजधरि सीमित छल । तें दूनू देश मे एकर विरुद्ध समय-असमय आवाज उठैत रहलैक । उर्दूक हठधर्मिता पाकिस्तानक विभाजन आ बंगलादेशक निर्माणक कारण बनल । परंच भारत मे कोनो तेहन आन्दोलन नहि भेलैक । उफांटू भाषा हिन्दी सरकारी पाइ आ पिल्लाक बलें मैथिलीक संगहि अवधि, राजस्थानी आदि लोकभाषाक सुन्दर-सुविशाल साहित्यक उद्यान पर अमरलत्ती जकां पतरय-पसरय लागल । आश्चर्य जे हिन्दीक एहि साम्राज्यवादी विस्तारलिप्सा, एहि घृणित षड़यंत्र सं दक्षिण भारतीय त सचेत भेल परंच जकर घर जरि रहल छलैक उएह मैथिली, अवधि , राजस्थानी भाषा-भाषी लोकनि अपन कान मे तुर-तेल द निसभेर सूतल रहल । परिणाम जे हेबाक चाही सैह भेल ।

बिहार सरकारक एहि घोषणाक प्रतिक्रिया भेलैक । राजनैतिक दलक प्रतिक्रियाक कारण निश्चित भिन्न छलैक परंच मैथिली भाषीक प्रतिक्रिया ओकर अस्मिता, ओकर परिचिति आ जातीय संस्कृतिक रक्षार्थ स्वभाविक आ आवश्यक छलैक । आश्चर्यक बात जे कर्पूरी ठाकुर जखन पाठ्य-क्रम सं मैथिलीके हटेबाक घोषणा केने छलाह तखन पटनाक महान मैथिली सेवी संस्था जुलूस बहार केने छल परंच एहि बेर चुंइयो शब्द नहि केलक । बहुतो गोटे त जगन्नाथ मिश्रक दलाली धरि करै सं बाज नहि एलाह । हमरा अपन कोनो संस्था छल नहि । मतभेदक कारणे हम मिथिला संघ सं अपन संबंध तोड़ि केवल लेखन आ प्रकाशन मे लागल रही । स्थिति तेहन जे चुप रहलो ने जा सकैत छल । हम अपन सहयोगी जनार्दन जी, निरसन लाभ, राम आधार मिश्र आ महेश झा सं परामर्श कए 'मैथिली सेना'क नामे पर्चा छपाओल । कर्पूरीजीक निर्णयक विरोध मे सेहो हम एहिना केने रही । कोनो पर्चा छपलाक बाद हमर पहिल काज होइत छल देवनारायण बाबूक नामे पोस्ट करब । तकर बाद आनो संस्था सभ कें पठाओल जाइत छलैक, परंच पठौनिहारक नाम-पता गुप्त रहैत छल । एकर बाद हवड़ा-सियालदह जा समस्तीपुरक गाड़ी मे पर्चा फेकल जाइत छल । एक बेर भेंट भेला

पर देवनारायण बाबू कहने छलाह जे मैथिली सेना नामक कोनो बड़ उग्र संस्था मैथिली लेल सक्रिय अछि । जानि ने सरिपहुं एहि नामक कोनो संस्थाक अस्तित्व कहिओ कतौ छलैको वा नहि ।

एकर पश्चात् सर्वप्रथम हम मिथिला सांस्कृतिक परिषदक किशोरी कान्त मिश्र सं सम्पर्क कएल । ओ बड़ उत्साहित केलनि । फेर मिथिला संघर्ष समितिक श्री कमलेश झा आगू एलाह । परिषदक प्रयासे 20 जून 1980 कें विद्यापति विद्या मन्दिर मे बैसार भेल जाइ मे उपस्थित छलाह - धनेश्वर झा, डा0 विरेन्द्र मल्लिक, शरतचन्द्र मिश्र, ब्रह्मानन्द सिंह झा, इन्द्रनारायण झा, निरसन लाभ, कृष्णचन्द्र , दयाकान्त झा, गिरिजेश्वर मिश्र, कालीकान्त झा, नागेन्द्र मिश्र, जनार्दन झा, विश्वम्भर ठाकुर, रामअधार मिश्र, कमलेश झा, ब्रह्मनारायण झा, अमरनाथ झा, हरिश्चन्द्र मिश्र। 'मिथिलेन्दु', बेचन झा, मुकुटधारी मिश्र, बाबू साहेब चौधरी आदि । बैसार मे प्राय: सभ केओ अपन विचार रखलनि आ अन्त मे एक तदर्थ समिति बनाओल गेल जाइ मे अ0भा0 मिथिला संघ, आल इंडिया मैथिल संघ, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, मैथिली प्रकाशन समिति आ मिथिला संघर्ष समितिक दू - दू गोट प्रतिनिधिक संगहि संस्था बहिर्भूत लोक मे छलाह - श्री जनार्दन झा, अमर नाथ झा, वीरेन्द्र मल्लिक, बेचन झा, बाबू साहेब चौधरी, कुशेस्वर झा, ब्रह्मानारायण झा, गिरिजेश्वर मिश्र, किशोरीकान्त मिश्र, कालीकान्त झा, शरतचन्द्र मिश्र, कमलेश झा, सुरेन्द्र नाथ मिश्र, मदन चौधरी आ रामलोचन ठाकुर ।

26 जून के दोसर बैसार भेल जाइ मे पहिल दिनक अतिरिक्त किछु लोक जेना विनोदानन्द झा, सुकान्त सोम, नन्दकिशोर झा, विजयकान्त चौधरी, विनोद कुमार मिश्र, राजनन्दन लाल दास, जयनारायण दास आदि उपस्थित छलाह । एहि दिन सर्वसम्मति सें 'मैथिली मुक्तिमोर्चा'क गठन भेल, जकर संयोजक रामलोचन ठाकुर आ कोषाध्यक्ष किशोरीकान्त मिश्र बनाओल गेलाह । निश्चित भेल जे मैथिली मांगक समर्थन मे आगामी विधानसभाक अधिवेशनक समय विशाल प्रदर्शन पटना मे कैल जाय । मैथिलीक न्यूनतम मांग राखल गेल -

1. मैथिली बिहारक प्रथम राजभाषा हो ।
2. मिथिलांचल मे प्राथमिक सं विश्वविद्यालय स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो ।
3. भारतीय संविधानक आठम अनुच्छेद मे मैथिलीक स्थान हो आ ताहि लेल बिहार सरकार प्रस्ताव पारित कए केन्द्र सं अनुरोध करए ।
4. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक संगहि समस्त प्रतियोगितामूलक परीक्षा मे एक ऐच्छिक विषयक रूप मे मैथिलीक स्थान हो ।

एहिठाम लिखनाइ भरिसक अनर्गल नहि होएत जे 'मिथिला राज्य'क मांगपर एकमत नहि भ सकल जे हमर 'मैथिली सेना'क एक नम्मर मांग छल । स्वभावत: मोर्चाक न्यूनतम मांगक सूची मे एकरा सम्मिलित केनाइ संभव नहि भेल ।

एहि बैसारक तुरत बाद एगो पर्चा छापल गेल जकरा कलकत्ताक विभिन्न अंचलक संगहि बजबज, बिड़लापुर, राजगंज, रिसड़ा आदि उपनगरी मे बांटल गेल आ सभठाम जनजागरण एवं आन्दोलन मे बेसी सं बेसी लोकक भागीदारीक लेल सभा-समावेश कएल गेल । जे हेतु आन्दोलन

पटना मे हेबाक छलैक तें स्वाभाविक छलैक जे मिथिलांचलक मैथिली सेवी संस्था ओ व्यक्ति विशेष सं सम्पर्क कएल जाय । सबठाम लोक पठाएब संभव नहि यद्यपि पटना, दड़िभंगा, रहिका, खजौली आदि स्थानक भ्रमण सदस्य लोकनि केलनि, बांकीठाम पत्राचारें सं संपर्क आ विचार-विमर्श कएल गेलैक । कलकत्ताक बाहर केहन प्रतिक्रिया छलैक ओ आन्दोलनक मादे केना कि सोचल जाइत छल तकर उदाहरणस्वरूप किछु पत्र एहिठाम देल जाइछ ।

आयुष्मान बन्धु श्री रामलोचन जी, धर्मपुर, 26/8/80

अहाँक 18-8-80क पत्र मिलल । हमर मत-

1. उर्दूक राजभाषा बनलापर कैलाशपति मिश्र द्वारा मैथिलीक चर्चा सैतानी भरल नीति थिक । तत्र उर्दूक मान्यताक संग मैथिलीक माङकें कोनो सम्बन्ध नहि रहय ।

2. बिहार विधानसभाक अगिला अधिवेशनक समय सभ पाटीक लीडरक संग सम्पर्क कय विधानसभा द्वारा मैथिली कें संविधाम मे स्थानक प्रस्ताव पास कराबी । तखन दिल्लीक कार्यक्रम ओतहि प्रस्तुत करी ।

3. एहि वर्ष विद्यापति पर्वक स्थगन कय समस्त शक्ति एहि मे लागय :-

(क) बिहार विधानसभा मे मैथिल मेम्बर मैथिली मे बाजथि । अनुमति नहि भेटनि तँ चुप भऽ बैसथु, बहराथु, बाजथु नहि । तथा हाइकोर्ट मे विधानसभाक कार्यवाही पर रोक लगौल जाय ।

यदि मैथिल मेम्बर हमर सभक बात मानि लेथि, बौक जकाँ स्वयं रहि जाथि अथवा हम सभ हुनका बाध्य कऽ कसिअनि तँ आन्दोलन मध्यान्ह मे पहुँचि जायत । यदि इहो सभ बात नहि मानथि वा मानबाक हेतु बाध्य नहि कयल जा सकथि तँ अपन शक्तिक अनुमान कऽ लिअ ।

तहिना चेतना समिति नाचगान करिते रहत तँ मातम वा क्रोधक असन्तोषक वातावरण कोना उत्पन्न हैत ?

ध्यान राखब - प्रतिक्रियावादी जे मैथिली अवरोधक तत्व छल जे आब एहि आन्दोलन तथा साहित्यकार आ साहित्य कें पथभ्रष्ट करबाक यत्न मे अछि । विद्यापति पर्व जे संघर्षात्मक संस्था छल से सामन्ती सभाक रूप लेलक । किछु विदाइ दऽ कऽ कवि कें भसिअयबाक यत्न भय रहल अछि । मैथिली एकादमी सामान्य जनताक लेल एकोटा पोथी दऽ सकल । पी0एच0डी0क थिसिस सँ मास कें कोन लाभ ?

शुभाकांक्षी - काञ्चीनाथ झा 'किरण'

दरभंगा, 30-8-80

प्रिय रामलोचन जी,

जय मैथिली !

अपनेक पत्र एकटा, आइए प्राप्त भेल अछि । एहि सँ पूर्व कोनो पत्र नै भेटल छल । मात्र श्री जनार्दन बाबू एकदिन हमरा घर पर आयल छला । ओ पर्चो देलनि आ सब बात कहबो केलनि । हम सम्प्रति मार्च 20 सँ लगातार दरभंगे मे छी । 20-8-80 भादव कृष्ण परीब बुधदिन दरभंगा कमिशनरक कार्यालय मे कमिशनरी लेभेल पर एक दिनक सांकेतिक अनशन केने छलहुँ । अनशन

मे दरभंगा, मधुबनी आ समस्तीपुरक लगभग 35 टा प्रतिनिधि भाग लेने छला । कमिश्नर साहेब कें कहल गेलैन जे शरद कालीन अधिवेशन के समय जे मैथिली आन्दोलन चलत तकर ई पूर्व सूचना थीक । शरदकालीन लोकसभा एवं विधानसभाक कार्यवाही समय तक जँ मैथिली भाषीक मांगपर उचित विचार नहि कयल गेल तँ स्थिति भयावह भऽ जेबाक संभावना अछि । मैथिलीक हेतु कलकत्ताक प्रवासी मैथिली भाषी लोकनिक कार्य सदा सँ सराहनीय रहल अछि । हम सभ अपनेक डेग कें हृदय सँ समर्थन करैत छी ।

अपनेक - प्रदीप मैथिलीपुत्र

रहिका, 13-9-80

आदरणीय महोदय,

जय मैथिली ।

अपनेक पत्र प्राप्त भेल । पत्र पढ़ि बहुत प्रसन्नता भेल । मैथिली आन्दोलन चलएबाक लेल एहि तरहक संस्थाक परम आवश्यकता छैक । जे एकर नेतृत्व करए एवं मिथिलांचल के प्रत्येक संस्था कें एक सूत्र मे बान्हि सरकार पर दबाब डालए । छीट-पुट कार्य कएला सँ ओतेक प्रभावित नहि होइत छैक । पूरा मिथिलांचल मे वातावरण जागि गेल छैक । मात्र नेतृत्वक अभाव छैक । एक बेर सब संस्थाक प्रतिनिधि एकत्र भय ठोस कार्यक्रम चलाएल जाय । ई हमर आग्रह । अपनेक कार्यक्रम के हमर संस्था आदर करैत अछि संगहि आन्दोलन चलएबाक लेल पूर्णरूप सँ सहयोगी रहत । नवम्बर में जे विधानसभाक समक्ष प्रदर्शन एवं घेराव कएल जायत तकर तिथि नजदीक समय पर खबरि होबक चाही जाहि सँ प्रदर्शन मे भाग लेबाक लेल पूर्ण तैयारी प्रत्येक संस्था करए ।

अपनेक - प्रबोध झा, 'मंत्री' मैथिल समाज, रहिका

आदरणीय ठाकुरजी,

जय मैथिली !

अपनेक पत्र प्राप्त भेल । मैथिली भाषा एवं मैथिली भाषी लोकनिक प्रति बिहार कें वर्तमान मुख्यमंत्री द्वारा अपनाओल गेल रवैया अप्रत्याशित अछि । जँ बिहार कें भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जातिवाद कें बढ़ावा दए अपना कुर्सीक सुरक्षाक वास्ते जनआन्दोलन कें जन्म देलन्हि तँ वर्तमान मुख्यमंत्री अपना मातृभाषा एवं समस्त मैथिल वर्ग कें शान्ति एवं सदभावना कें उपेक्षा कऽ अपन कुर्सीक रक्षाक हेतु जन आन्दोलन कें जन्म देलन्हि ।

इतिहास साक्षी अछि जे जतए पृथ्वीराज सन योद्धा आ देशभक्त केर जन्म भेल ओहीठाम जयचन्द सन देशद्रोहीक सेहो भेल । हमरा लोकनि कें सपनहुँ मे ई आशा नहि छल जे जगन्नाथ मिश्र एहन अन्यायी एवं दुराचारी भऽ जयताह । अपने लोकनि अपन सत्-प्रसाय मे अवश्य सफल होयब।

एहि दिशा मे हमरा सबहक बुते जे मदद भऽ सकत करए वास्ते तैयार छी । अपने सँ विशेष रूप मे प्रार्थना अछि जे पत्राचार करैत रही । संगहि आन आन संस्थाक पता हमरा पठाएब जाहि सँ हम सभलोक सँ संपर्क कए सकब ।

भवदीय - राजेश कुमार मिश्र, महामंत्री
काशी हिन्दू विश्वविद्याल, वाराणसी

मित्रवर रामलोचन, धनवाद, 5-9-80

अशेष मंगलकामना । तोहर लुत्ती लगौनी चिट्ठी एखनहि भेटल अछि । मोन जुड़ा गेल अछि आ ह्रदय सरिपहुँ विद्युताविष्ट जकाँ भऽ गेल अछि । ई एकटा ऐतिहासिक निर्णय लेलह अछि आ सरिपहुँ यदि एकटा नव लीख बना सकबह (हम अपना कें असम्बद्ध नहि कऽ रहल छी) तँ निश्चये This will be a milestone and, I am sure this will be recalled as the great cultural revolution in the history sheet of Mithila.

किन्तु एकटा जे खास बात हमरा मोन के हौड़ि रहल अछि से तोरा लग छिरिया देबऽ चाहै छी, उठायब आवश्यक बूझह तँ बिछि लियह । हे, अति विनीत निवेदन पूर्वक कहबौह जे एहि मोर्चाक कियो 'सचिव' अध्यक्ष, संपोषक संरक्षक नहि हो तँ नीक कारण वैह पछाति 'सौतिनिक साल' भऽ जाइ छै आकि नहि ? हँ पर्चापर 'सदस्यगण' देखि लागल जेना रातिक पछाति साँचे के भोर आबि गेल होइक ।

एहि सन्दर्भ मे हमरा लोकनिक बीच एकटा छात्र मोर्चा सेहो अछि जे एखन धरि 'इमानदारी' सँ काज करैत आबि रहल अछि (नि0भा0 मैथिली भाषी छात्र संघ, पटना, कमरा नं0 -1, डाक बंगला, पटना-1) । की तकरा सँ सम्पर्क कय चुकल छह ? चौधरीजी एहि संस्थाक पैरूख देखि चुकल छथि । खास कऽ पटनाक आन्दोलन, घेराब, जुलूस आदि मे एहि संस्थाक सहयोगक अपेक्षा राखय पड़तह । इहो संस्था एखन पर्याप्त गतिशील अछि । काल्हि एक पत्र आयल अछि- संयोजक श्री बालेन्दु अरूण आ विभूति आनन्दक जे शिघ्रे आन्दोलनक बाट पर हमरा सभकें चलबाक अछि, ऊर्जा दियऽ । तँ किएक ने आन्दोलनकारी सभ संस्था कें एकत्रित करबाक प्रयास हो ? संगठित शक्ति बेसी प्रभावी होयत ताहि मे तँ कोनो संदेह नहि ! कोनो हर्ज नहि सभ संस्था अपन-अपन 'बैनर' फराके राखय, मुदा आन्दोलनक एकटा न्यूनतम निर्धारित कार्यक्रम हो ताहि मे सभक आस्था हो, से धरि आवश्यक ।

हमर संस्था कहाँधरि संग दऽसकत, कहब कठिन कारण आब 'ओ' हमर संस्था नहि रहि गेल अछि । बजाप्ता पंजीकृत संस्था बनि गेल अछि तँ बड़ घोंघाउजक बादे कोनो आन्दोलनात्मक निर्णय लेब संभव होयत । आशय ई जुनि लगबियह जे हम एहि Issue पर हारिमानि रहल छी । I shall try at my level best आ तत्सम्बन्धी सूचना फेर पठेबह ।

ओना एहि रवि (7-9-80) कें दिनक 1 बजे 'धनसार विद्यामंदिर' मे समितिक का0का0 बैसार छैक । एहि अल्पावधि मे अहाँलोकनिक पहुँचब स्वाभाविक नहि बुझना जाइछ । अगिला दस दिनक अन्दर पुनः बैसार होयत तखन फेर सूचित करब ।

बहुत दिन सँ सुनैत-पढ़ैत आबि रहल छी - सलाइ मे आगि होइ छै । चलू एहि खेप रगड़ि कऽ देखी की ठीके आगि रहै छै ! अपन अजग्र, अनन्त शक्ति स्रोत कें यदि सम्पूर्ण नहि तँ दसो प्रतिशत एहि महायज्ञक समिधा बनाबी । हमर व्यक्तिगत मत आइ ओतय पहुँचि गेल अछि जतय तों आठ वर्ष पूर्व पहुँचल रहह । तहिया तोहर आगि हमरा अनभुआर सन लागल रहय, आइ डर अछि, हमर आगि तोरे ने अनचिन्हार लागह ! फेर पत्र दीहऽ ।

अपेक्षित - सरस (सियाराम झा 'सरस')

विद्यापति समिति, धनबाद

आदरणीय रामलोचन जी,

जय मातृभूमि !

पोस्टकार्ड प्राप्त भेल । जाबतधरि स्वतंत्र मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन नहि करब तखनधरि मैथिली के न्यायिक अधिकार नहि हैतैक । आ एहि आन्दोलन लेल राष्ट्रीय राजनीतिक दलक रूप मे राष्ट्रवादी मिथिला कांग्रेस अपनेक स्वागत करैत अछि । देश मे जखन व्यक्तिक नाम पर दल चलि सकैत छैक तखन विश्वक प्रथम गणराज्य मिथिलाक नाम पर अखिल भारतीय राजनीतिक दलक संगठन किएक नहि भए सकैत छैक । बिना राजनीतिक चेतनाक मिथिलाक कल्याण नहि छैक ।

अहाँक - दिनराज (डा0 दिनराज शाण्डिल्य)

कानपुर, 7-9-80

श्रद्धेय ठाकुरजी,

प्रणाम !

अहाँक चिट्ठी आ आन्दोलनक पर्चा 30-8-80 कऽ भेटल । ओहि दिन मिथिला संघक सचिव के दय देलियन्हि । संघक प्रमुख कलाकार होयबाक कारणे हुनका सँ दू-तीन घंटा विचार विमर्श भेल ।

कानपुरक, खास कय नवीन वर्ग मे बहुत बेसी आक्रोश छैक । एतुका नवीन केर भाषा छैक जे हमरा लोकनिक मायक अपमान कैलक अछि ओकरा गोली मारि देल जेतैक । तैं हमर संघ सँ प्रयत्न भय रहल अछि आन्दोलनक अभिभावक के तन-मन-धन मददि कएल जाए । एतय सँ किछु प्रतिनिधि (कम स कम दस) अवश्य जाएत । अपने हमरे पता सँ पचासटा मैथिल सेना बला पर्चा अवश्य पठा दी ।

दिनांक 10-9-80कँ सचिव (श्री परमानन्द झा) कलकत्ता जेताह आ अहाँ लोकनि सँ साक्षात् कए आन्दोलनक विषय मे सविस्तार गप्प करताह ।

इत्यलम - उ0का0 मिश्र

वाराणसी, 20-9-80

मान्यवर ठाकुरजी,

नमस्कार !

अपनेक 3-9-80 क कृपापत्र एवं मुक्तिमोर्चाक कार्यक्रम भेटल । हम तऽ अपने सभहिक संगे छी-जखनि जे आदेश दी । अपनेक अपील कें एतुक्का समाचार पत्र सभ म प्रकाशनार्थ पठा रहल छी एवं बटुकक अंक मे सेहो जाएत ।

व्यक्तिगत रुपें हमर विचार जे बिनु मैथिली दैनिक पत्र सँ मैथिलीक कल्याण नहि ओना प्रदर्शन ओ जागरणक प्रभाव भए रहल छैक । यदि दैनिक पत्र कलकत्ता सँ प्रकाशित हो तऽ की हर्ज ? आशा अछि एहु दिसि अपने ध्यान देबैक ।

एकटा मैथिलीभाषी संस्था सभहिक विवरणिका प्रकाशित भए रहल अछि ताहि लेल कृपया समस्त ज्ञात मैथिली संस्थाक पता (डाकवला) जँ हमरा शीघ्र पठा देतहुँ तऽ बड़ उपकृत्य रहितहुँ । पत्र देव ।

अहीक - डा0 सुधाकान्त मिश्र

जय मैथिली !

हमर क्रान्तिक अभिनन्दन स्वीकार करी । अपनेक पत्र पाओल जाहि मे हमर भावनाक अनुरूप मधुर सन्देश छल ।

हम अपनेक संग छी ओ अपने जाहि इमानदारी संग मैथिली मुक्तिमोर्चाक संगठन कएल अछि यदि राजनीतिक रूप लऽ मिथिलांचल संग सम्बन्ध जोड़ि जन आन्दोलन कें तीव्र बनाबए तँ सफलता सुनिश्चित अछि ।

मिथिला क्षेत्र कें अपन जन संगठनक आवश्यकता छैक जे अपन राज्य कें मांग करए । एहि सम्बन्ध मे हमर बहुतरास विचार अपने मिहिर मे पढ़ने होएब । आशा अछि अपनेक मुक्तिमोर्चा आन्दोलन कें सही दिशा देबाक हेतु कार्यक्रम सभ तय करए ओ प्रवास सँ मिथिलांचल तक सभ कें एकताबद्ध कऽ प्रभावोन्मुख बना एक व्यापक शुरूआतक शंख फूकए जे भविष्य मे आम चुनाव मे अपन महत्वपूर्ण भूमिका अपना सकए । ......'मैथिली संघर्ष समिति' अपनेक मोर्चा कें व्यापक बनेबाक हेतु पूर्णरूप सँ योगदान देत ।

अपनेक - डा0 मदन मिश्र

आसी , 18-7-80

प्रिय भाई,

अहाँक पत्र काल्हि हस्तगत भेल । समाचार सँ अवगत भेलहुँ आ वर्तमान परिस्थिति मे अहाँक पत्र पाबि अति आह्लादित भेलहुँ । जे से जाहि तरहक छीट-फुट काज माटि पर भऽ रहल छैक सेहो एही वर्षक ई सौभाग्य छैक किन्तु जाहि तरहक हम की अहाँ चाहि रहल छी से नहि भऽ रहल छैक । तें प्रयोजन छैक एकटा क्रमबद्ध कार्यक्रम हथिया कऽ ओहिपर अपना के न्यौछावर करबाक आ वर्तमान सुअवसरक लाभ उठेबाक । मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे कलकत्ताक एकटा विशेष महत्व रहलैक अछि । आशेटा नहि पूर्ण विश्वास अछि जे कलकत्ता वासी लोकनिक गाण्डिवक सूचना लौटती डाक सँ हमरा देब आ हमरा अपना बीच पायब ।

अहींक - विकल डा0 विष्णुदेव

पटना, 21-8-80

परम आत्मीय श्री ठाकुरजी,

जय मैथिली !

'मैथिली मुक्ति मोर्चा'क संगठन मैथिली मिथिला हित एकटा समर्पित प्रभात लायत ई विश्वास थिक । कलकत्ता सभ दिन जागल रहल । फेर भारतक आन भागक अपेक्षा ओहिठाम सँ किछु सार्थक कार्य शुरू भऽ सकैछ । अहाँ लोकनिक विचार सँ श्री पीताम्बर पाठकजी ओ अहाँक पत्रेक माध्यम सँ अवगत भेलहुँ । हृदय गद् - गद् अछि ।

आन्दोलन के विधिवत् क्रियात्मक स्वरूप हेतु जे अपनेक विचार पत्र मे अछि सभटा प्रशंसनीय । एकबेर अपने पटना आबी वा छात्रसंघक कोनो कार्यकर्त्ता के कलकत्ता बजबियनि आ स्थिर सँ

देल जाय, जे दरभंगा, मधुबनी, कलकत्ता, इलाहाबाद ओ पटना दिल्ली सभठाम एकबेर प्रारम्भ होइ । हमरा तऽ लागैत अछि तँ भारतवर्षक सभ मैथिली संगठन 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' सँ सम्बद्ध भऽ जाय तऽ मिथिला मैथिलीक अहोभाग्य । आब सभ सँ नितान्त आवश्यकता एकरे छैक- सामंजस्य आ संयोजित भऽ कार्य शुरू करबाक । अयोध्या गाम दिस छथि । पत्र काल्हि सायंकाल भेटल । उत्तर पठायब आवश्यक तें शीघ्रता मे पोस्टकार्डक सहारा ।

तत्रस्थ : सभ बन्धु के नमस्कार । पत्र सँ सम्पर्क रहे । पटना मे दर्शन दी तँ सर्वोत्तम ।

शेष शुभम्

अहाँक - बालेन्दु अरुण

संयोजक, नि0भा0 मैथिलीभाषी छात्रसंघ,पटना

बानगीक रूप मे प्रस्तुत पत्रसभक नीक जकां अध्ययन मनन कएला सं हमरा लोकनिक मैथिली प्रेम, ओकर अपमान - अवमानना जन्य आक्रोश, अपन अधिकार प्राप्तिक आकुलता-व्याकुलता ओ तदर्थ किछु करबाक इच्छा - आकांक्षा, ओकर स्वरूप आदि विभिन्न विषय बातक संगहि आर बहुत किछु स्पष्ट होइछ । कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली मुक्तिमोर्चाक आन्दोलनक पृष्ठभूमि मे विभिन्न मैथिली प्रेमीक प्रत्यक्ष परामर्शक संगहि एहि पत्र सभक भूमिका महत्वपूर्ण अछि ।

9 दिसम्बर 1980 मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे आदर आ श्रद्धाक संग स्मरण कएल जाएत । शताधिक मैथिली सेवी अपन जीवन जीविकाक परबाहि केने बिनु मैथिली मुक्तिमोर्चाक 'बैच' लगा, मैथिलीक नारा बुलन्द करैत महानगर कलकत्ता सं पटना पहुंचलाह । नि0 भा0मैथिली भाषी छात्र संघक कार्यकर्त्ताक अतिरिक्त दड़िभंगा सं पं0 देवनारायण झा, डा0 गौरी मिश्र, रहिका सं प्रबोध झा, सतंजीव झा अपन संघक सहयोगी लोकनिक संग जुमलाह । आन्दोलनक सिपाहीक रूप मे मिथिलाक विभिन्न गांव सं प्रवासी मैथिली सेवी संस्था दिस सं कतेको चिन्हार अनचिन्हार लोक पहुँचल छलाह आ पटनाक राजपथ एहि सेनानी लोकनिक 'मार्च' सं दलमलित भेल छल । मैथिलीक गगनभेदी नारा सँ वातावरण कंपित भेल छल । बूझि पड़ैत छल कविवर आरसीक स्वप्न - बाजि गेल रणडंक साकार भ-गेल हो । आश्चर्य नहि जे एहि शान्त, सुसंगठित, अनुशासित प्रदर्शनकारी पर बिहार पुलिसक बर्बरतापूर्ण प्रहार सेहो अभूतपूर्व छल जे ललमुंहा शासनक अत्याचार के झूस करैत छल आ तत्कालीन मुख्यमंत्री, मिथिलाक मिर्जाफर डा0 जगन्नाथ मिश्रक मैथिली मिथिला विरोधी चरित्र के उजागर करैत छल । कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे पहि ा बेर पटनाक राजपथ मैथिली सेनानीक शोणित सं भासल छल । ोना तं पचीस सं बेसीये लोक आहत भेल छलाह परंच सर्वाधिक चोट लागल छलनि पटनाक नथुनी झा कें जे मैथिलीक कृपा सं शहीद होएब सं बचि गेलाह आ हमरा लोकनिक श्रद्धेय भ गेलाह । कलकत्ताक सुशील (घराड़ी/गामवाली उपन्यासक लेखक) कें पचीसो लाठी लागल छलनि आ मास तीनेक चिकित्साक पश्चाते स्वस्थ भेलाह । कलकत्तेक पीताम्बर पाठकक बालक विजय किशोर होइतहुं

एहि बबर पुलिसक अत्याचार स नहि बाच सकल । हमरा जनैत मिथिलाक इ पहिल आन्दोलन छल जकर समाचार सम्पूर्ण देशक अखबार मे प्रकाशित भेल छल । कलकत्ताक प्राय: समस्त अखबार हिन्दी, बंगला, अंग्रेजीक, एहि समाचार कँ प्रमुखता देलक आ 'स्टेट्समैन (The Statesman)' सन पत्र एकरा प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित केलक ।

मैथिली आन्दोलनक इतिहास मे 'मैथिली मुक्ति मोर्चा'क आविर्भाव दुपहरियाक सूर्य सन भेल छल । एकर आकाले अस्त भ जायब दुखद भनहि हो आश्चर्यजनक किन्नहु नहि । एकरा एगो बिडम्बनाये कहल जाय जे मैथिली आन्दोलन प्रवास मे केन्द्रित रहल अछि । प्रवास मे लोक अबैछ जीविकोपार्जन हेतु आ एक-एक व्यक्ति पर मिथिलाक एक-एक परिवार आश्रित रहैछ । एहि मे कोनो तरहक व्यवधान उपस्थित भेने सम्पूर्ण मिथिलाक अर्थव्यवस्था डगमगा जेबाक संभावना । ओनहुना माटिपरक आन्दोलन जते प्रभावोत्पादक प्रवासक अपेक्षाकृत झूस पड़बे करत । हेबाक त ई चाहैत छल जे आन्दोलन माटि पर हो आ प्रवास ओहि मे सहयोग करय । ई सहयोग बौद्धिक आ आर्थिक स्तर पर भ सकैछ । परंच से ने आइधरि भेल आ ने हेबाक संभावना बूझि पड़ैछ । आ एकर एकमात्र कारण थिक भाषा चेतनाक अभाव । जे भाषा जातीय (National) चेतनाक संवाहक होइछ, जातीय सहयोग-संहति, ओकर परिचिति, ओकर उन्नति-विकासक आधार होइछ, जं तकरे अस्तित्व विपन्न-संकटापन्न होइ त ताहि सं भयाओन स्थिति आर भइए की सकैछ । स्वाभाविक कारणे अपन सीमा के बुझितहुं प्रवासी मैथिल समुदाय प्रयोजन पड़ने आन्दोलनक मशाल ल आगू बढ़ि जाइ छथि । परंच मैथिली मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक जे स्वरूप छलैक तकरा प्रवास सं बेसी दिनधरि नहि चलाओल जा सकैत छल । संगहि इहो बात सत्य जे मोर्चाक सहयोगी संस्था, नेता लोकनि के अपन-अपन नामक लोभक संवरण नहि भ पावि रहल छलनि जकर प्रमाण प्रदर्शनक पश्चातक कार्यक्रम ओ प्रकाशित समाचार सभ अछि । मैथिली आन्दोलनक संग विडम्बना रहल अछि जे जे केओ मैथिलीक हित चाहितो छथि ओहो लोकनि ओहि संग अपन नाम, अपन नेतृत्व चाहै छथि । दोसराक नेतृत्व मे कोनो उपलब्धि हुनका पचै नहि छनि । मैथिली मुक्ति मोर्चाक सफलता आ सेहो हमरा नेतृत्व मे एहिठामक बहुतो मठाधीश के बर्दास्त नहि भ रहल छलनि । जखन कि वास्तविका इएह थिक जे मोर्चाक जते पर्चा, संवाद-प्रकाशित भेल से हमर लिखल रहितो ओहि मे हमर नाम कत्तौ नहि छल । जानिए के हम आवेदन कर्त्ता मे अपन नामक स्थानपर सदस्यगण, मैथिली मुक्तिमोर्चा लिखैत छलौं । अन्तत: घमर्थनक पश्चात् निर्णय लेल गेल जे मोर्चा के माटि पर स्थापित कैल जाय ।

निश्चित भेल जे 23 - 25 मई 1981 कँ दड़िभंगा मे सम्मेलन कएल जाय । प्रथम दिन मैथिली सेवी संस्था आ व्यक्ति विशेषक सम्मेलन, दोसर दिन राजनैतिक सम्मेलन आ तेसर दिन प्रकाश्य समावेश । एहि कार्यक्रम के सफल बनेबाक लेल पर्चा-पोस्टर, पत्राचार आ व्यक्तिगत सम्पर्क लेल जयत-ततय प्रतिनिधि पठेबाक प्रयोजन छलैक आ ताइ लेल पहिने पाइक प्रयोजन । दुर्भाग्यवश अर्थसंग्रहक नाम पर मतैक्य नहि भेलैक । कोनहुना किछु पर्चा आ पोस्टर छपलैक आ सेल क आयोजन सं 15 दिन पहिने हम कलकत्ता सं विदा भेलहुं । स्वाभाविक छैक जे हमर डेरा पं0 देवनारायण झाक ओतय किवां भाइ सोमदेवक ओतय रहैत छल । ओना एहि खेप कतेको दिन

लहेरिया सरायक टीशन मास्टर श्री माधव मिश्रक ओहिठाम रहल रही । माधव बाबू स हमरा पूर्व परिचय नहि छल । प्राय: प्रदीप मैथिलीपुत्र माध्यम छलाह जे अपनो ओहीठाम छलाह । एहिठाम लिखब आवश्यक जे माधव बाबूक मैथिली प्रेम सं हम अभिभूत भेल रही । टीशनपर गाड़ी रूकै आ हम दुनू गोटे पोस्टर सटनाइ शुरू करी । ई क्रम कतेको दिनधरि चलैत रहल । जानि ने अपन कतेक क्षति कइयो क माधव बाबू अन्तधरि हमर संग देलनि । खजौली, कलुआही, रहिका, झंझारपुर, घोघरडीहाक अतिरिक्त आनठाम गेल पार नहि लागल । अर्थाभाव छलैहे । तैं अन्यत्र सं पत्र सम्पर्केटा । ओना कलकत्ता सं हमर सहयोगी जनार्दन झा, रामअधार मिश्र, महेश झा, किछु पहिने पहुंचि पर्याप्त सहयोग केलनि । एहिठामक 'अग्रणी' नेता लोकनि त अधिवेशन आरंभ भेलाक बादे भाषण बेर पहुचलाह । धन के देवनारायण बाबू जे दड़िभंगाक नगर भवन सम्मेलन लेल उपलब्ध भेल तथा अन्यान्यो महाजन लोकनि सं सम्पर्क । अन्यथा दड़िभंगा मे हमर की परिचित ।

दिनांक 23-5-81 के 4 बजे सं दड़िभंगा नगर भवन मे सम्मेलनक शुभारंभ भेल । उपस्थिति छल -

(1) श्री बाबू साहेब चौधरी, अ0भा0 मिथिला संघ, कलकत्ता ।
(2) श्री कालीकान्त झा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता ।
(3) श्री शरदचन्द्र मिश्र, मिथिला संघर्ष समिति, कलकत्ता ।
(4) श्री हरिशंकर झा, मिथिला क्रांतिदल, राजगंज, हावड़ा ।
(5) श्री देवनारायण झा, मि0 विकास संघ, सुन्दरपुर बीरा, दड़िभंगा ।
(6) श्री पुरुषोत्तम झा, अ0भा0मैथिल महासभा, दड़िभंगा ।
(7) श्री धर्मेन्द्र कुमार, मि0 जनसपंर्क मोर्चा, के0का0 दड़िभंगा ।
(8) श्री आ0मो0 नाजिम रिजबी, मि0 क्रांतिदूत संघ, दड़िभंगा ।
(9) श्री प्रदीप मैथिलीपुत्र, मि0 क्रांतिदूत संघ, दड़िभंगा ।
(10) श्री रामचन्द्र सिंह 'वियोगी', मै0 क्रांतिकारी समिति, खजौली ।
(11) डा0 मदन मिश्र, मै0 संघर्ष समिति, सरिसवपाही ।
(12) श्री विष्णुदेव झा 'विकल', मै0 सेवा संघ, आसी ।
(13) श्री हरेकान्त झा, मंत्री, जिला प्राथमिक शिक्षक संघ, दड़िभंगा ।
(14) श्रीमती गौरी मिश्र, मि0 महिला आन्दोलन समिति, दड़िभंगा ।
(15) श्री सम्पूर्णानन्द झा, मैथिली साहित्य परिषद, गोपालगंज ।
(16) श्री प्रबोध झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(17) श्री सतनजीव झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(18) श्री सिद्धिनाथ झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(19) श्री शीतलाम्बर झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(20) श्री रतनकुमार झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(21) श्री इन्द्रकान्त झा, मैथिल समाज, रहिका ।
(22) श्री उदयनाथ चौधरी, अधिवक्ता, मिथिलांचल विकास परिषद, दड़िभंगा ।

(23) आचार्य सोमदेव, संपादक ,मिथिला भूमि, लहेरियासराय ।
(24) श्री जनार्दन झा, मै0 मुक्तिमोर्चा, कलकत्ता ।
(25) श्री रामअधार मिश्र, मै0 मुक्तिमोर्चा, कलकत्ता ।
(26) श्री महेश झा, मै0 मुक्तिमोर्चा, कलकत्ता ।
(27) श्री शुकदेव ठाकुर, मै0 मुक्तिमोर्चा, कलकत्ता ।
(28) श्री माधव मिश्र, लहेरियासराय ।
(29) श्री कमलानन्द झा, 'तरुण', दड़िभंगा ।
(30) श्री विजय किशोर झा, दड़िभंगा ।
(31) श्री अजय किशोर झा, दड़िभंगा ।
(32) प्रो0 सुरेन्द्र झा 'सुमन' , दड़िभंगा ।
(33) डा0 शम्भुनाथ चौधरी, दड़िभंगा ।
(34) श्री शिवाकान्त पाठक, दड़िभंगा ।
(35) श्री दिनराज शाण्डिल्य, दड़िभंगा ।
(36) श्री वैद्यनाथ चौधरी, दड़िभंगा ।
(37) श्री रामकुमार झा, दड़िभंगा ।
(38) श्री रमानन्द रेणु, दड़िभंगा ।
(39) श्री शशिकान्त झा, दड़िभंगा ।
(40) श्री अमरेश झा, दड़िभंगा ।
(41) श्री प्रदीप कुमार चौधरी, दड़िभंगा ।
(42) श्री प्रवीण कुमार ठाकुर, दड़िभंगा ।
(43) श्री उमाकान्त झा, दड़िभंगा ।
(44) श्री गजेन्द्र झा, दड़िभंगा ।
(45) श्री दयानन्द मिश्र, दड़िभंगा ।
(46) श्री वैद्यनाथ विमल, दड़िभंगा ।
(47) श्री इन्द्रमोहन झा, दड़िभंगा ।
(48) श्री कृष्णमोहन झा, दड़िभंगा ।
(49) श्री अयोध्या दास, दड़िभंगा ।
(50) श्री पवन कुमार झा, दड़िभंगा ।
(51) श्री जीवकान्त, डेओढ़, मधुबनी ।
(52) श्री योगनाथ मिश्र, भट्टपुरा, सरहिसवपाही ।
(53) श्री कामेश्वर चौधरी, पंचोभ ।
(54) श्री उपेन्द्र नारायण चौधरी, नदियामी ।

सम्मेलन मे उपस्थिति निश्चिते उत्साहबर्द्धक नहि । तीन दिन धरि विचार-विमर्श चलल । राजनीतिक दलक संभावित असहयोगक कारणे राजनैतिक सम्मेलन नहि भेल आ लोकक अभाव

मे प्रकाश्य समावेश आ जुलूस सेहो नहि भेल । एहिठाम उल्लेखनीय जे भारतीय साम्यवादी दलक सासद श्री भोगेन्द्र झा एबाक स्वीकृत देने छलाह परंच एक अघटनक कारणे उपस्थित नहि भ सकलाह । एहि सभा मे पं0 देवनारायण झा जे बाजल छलाह से अविकल प्रस्तुत कएल जाइछ: - मैथिली आन्दोलन के कोना आगू बढ़ाओल जाय ई विचारणीय विषय थिक । मैथिली आन्दोलन पचास वर्ष सं चलि रहल अछि, कतेक आगू बढ़ल ? एक बात मे हम सफल भेल छी, ओ थिक मिथिला शब्द । हम मिथिला आ मैथिलीक लेल इमानदार भ सकी से सब सं बेसी आवश्यक । एहि आन्दोलन के ब्राह्मणक हाथ सं ल कें यादवक हाथ मे दिऔ । एहि आन्दोलन के भाषा आन्दोलन सं हटा राज्य- आन्दोलन मे परिणत करी । मैथिलीक विरोध कएनिहारक विरोध कएल जाय तकर प्रयोजन छैक । विध्वंसकारी नीति के हम स्वीकार करब । कलकत्ताक संस्था सभ सिद्धपीठ मे बैसल अछि । कलकत्ताक नेतृत्व के यश भेटबे करतैक । आन्दोलनक रूप के विभिन्न शाखा मे परिणत करय पड़त । बुद्धिजीवी अपन विचार देथि । धनबान धन देथि, बलवान बल देथि । प्रदीपजी नाजिम रिजवी कें प्रभावित क कें मैथिली आन्दोलन मे अनलन्हि किन्तु रिजबी साहेब एकोटा मुसलमान के अपना संग नहि आनि सकला । बिहार सरकार उर्दू के दोसर राजभाषा बनओलक एकर हम स्वागत करैत छी । किन्तु एकर बाद फेर बिहार सरकारक सामने कोनो भाषा नहि छैक ? आवश्यकता एहि बातक जे एक जुट भ कें हम सब मैथिली के मुक्त करी । मैथिली मे एक दैनिक अखबार चलय ताहि लेल कलकत्ताक संस्था सब सेहो सहयोग देथि ।

अन्त मे जीवकान्तक प्रस्ताव रमानन्द रेणुक समर्थन आ सभाक अनुमोदन सं एक तदर्थ समिति गठित भेल जाहि मे निम्न 15 व्यक्ति छलाह:- सर्वश्री देवनारायण झा, प्रो0 गौरीशंकर सोमदेव, आचार्य नाजिम रिजवी, धर्मेन्द्र कुमार, माधव कश्यप, तारानन्द वियोगी, उदय नाथ चौधरी, दिनराज शाण्डिल्य, शिवाकान्त पाठक, विकल वात्स्यायन, रामचन्द्र सिंह वियोगी, प्रबोध झा, डा0 मदन मिश्र, श्रीमती गौरी मिश्र आ अनिल जी । मोर्चा के जे कोनो अभियान आयोजन हेतु पर्चा पोस्टरक व्यवस्था कलकत्ता सं करबाक आश्वासन हम पहिनहि देने छलिथनि । 'लेटर हेड' सेहो सुपुर्द क देने छलियन्हि ।

दड़िभंगाक कार्यक्रम शेष कय थाकल-ठेहियायल देह, भारी मन आ खाली जेब ल आपस भेल रही । कलकत्ताक 'अग्रणी नेता' लोकनि गाड़ी मे जगह सुरक्षित रहबाक कारणे पहिनहि विदा भ गेल छलाह । अंतधरि संग छला भाई साहेब द्वय अर्थात् पं0 देवनारायण झा आ शुकदेव ठाकुर तथा कलकत्ताक दीर्घदिनक आन्दोलनक संगी जनार्दन झा (निष्कलंकक लेखक) रामअधार मिश्र, आ महेश जी । सब मौन आ उदास । कहलियनि-गाम जा दू दिन आराम करब । कलकत्ता अबै छी तखने बेसी गप-शप । एगो नवारंभ करबाक अछि ।

कलकत्ता फिरि एक दिन अपने बासापर फेर पांचो गोटे बैसलौं-उएह पांचो गोटे जे 'मैथिली सेना'क पर्चाक माध्यमे एहि अध्यायक आरंभ केने छलौं । कान त सोन नहि बला स्थिति छल । दड़िभंगा आयोजनक क्रम मे आर्थिक स्थिति आर लचरि गेल छल, यद्यपि मिथिला क्रान्तिदलक हरिशंकर झा, ऑल इन्डिया मैथिल संघक ब्रह्मनारायण झा आ मिथिला संघर्ष समितिक शरदचन्द्र मिश्र थोड़ बहुत अर्थ सहयोग केने छलाह । स्वाभाविक कारणे छोट सं आरंभ करबाक निर्णय ।

ओमहर 'देसकोस'क संपादक जाहि उद्देश्य सं हम सब ई पत्र प्रकाशित केने रही ओ जकर चर्च हम प्रवेशांकक संपादकीय मे केने रही तकर विपरीत आचरण करय लागल छलाह । स्वभावत: हमरा लोकनि 'मुक्तिमोर्चा'क मुखपत्र (मासिक)क रूप मे 'देसिल बयना'क प्रकाशन प्रारंभ कएल । संपादकक समस्त दायित्वक निर्वाह करितो चाकरीक अनुमतिक अभाव मे हम अपन नाम संपादक मे नहि द बन्धु जनार्दन झाक नाम देल । 'देसिल बयना' अपन लघु आकारो मे हमरा लोकनिक भावना के प्रकाशित करैत रहल । 'मिथिला विभूति' 'गाम सँ दूर मिथिलाक मजदूर' लाल बुझक्करक चिट्ठी आदि स्थायी स्तंभ चर्चित प्रशंसित भेल छल । प्रत्येक अंक मे नामक निचा छपल -

संविधान विनु मैथिलीक ओ मानचित्र बिनु मिथिलाधाम ।
डारि जारि सुड्डाह करब हम विद्रोही मिथिलाक जुआन ।।

एकर उद्देश्य के स्पष्ट करैत छल । जे हो, पत्रिका त मैथिलीएक छल । बर्ख तीनक कोनाहुना चलि इतिहासक कोर मे बिलीन भ गेल, जेना दड़िभंगा जा मैथिली मुक्ति मोर्चा, परंच पं0 देवनारायण झाक स्नेह-सहयोगक बात स्मृतिपटल पर ओहिना हरियर अछि । हरियर रहत ।

(1998)

तोहर सरिस एक तोहें माधव.......

भोला ओ छलाह । निर्विकार भावें विषपान करैत रहलाह अपन भू-भाषाक अस्तित्व रक्षार्थ । आजीवन तपस्वी । प्रख्यात उपन्यासकार शरतचन्द्रक कथ्य छनि - 'प्रतिष्ठान जते पुरान, जते पवित्र, जते सनातन किएक ने हो, मनूक्ख सं पैध नंइ थिक ।' भोला बाबू सेहो एहि सत्य कें जनैत छलाह, मानैत छलाह । हिनका लेल मैथिली साध्य नञि, साधन छल, जकरा माध्यमे मैथिल आ मिथिलाक कल्याण साधन कएल जा सकैत छल । हम अपन 'मैथिली आंदोलन' नामक लेख (मिथिला टाइम्स, 30 अगस्त, 1973) मे स्पष्ट कएने छी जे बादक मैथिली आंदोलनक नेता लोकनि केना भुतिया कँ गलत पथ पर अग्रसर भेलाह आ फलत: मैथिली आंदोलन मात्र कागजी आंदोलन तक सीमित रहि गेल । परंच भोला बाबूक, जेकि एहि आंदोलनक जन्मदाता मे सं छलाह, दृष्टि फरिच्छ छल । तें ओ मिथिला मे पसरल विभिन्न कुरीति सभपर निर्ममता पूर्वक प्रहार कएल । आ यैह कारण छलैक जे तत्कालीन तथाकथित विद्वान वर्ग द्वारा हिनक भर्त्सना कएल गेल छल । विषपायी भोला एहि आलोचनाक विष कँ पीबि गेलाह । नीलकंठ बनि गेलाह । 1937 क 'मैथिली महासभाक' अधिवेशनक अवसर पर राज पंडित बलदेव मिश्रक नेतृत्व मे हिनका पर जाइ तरहक आक्रमण भेल छल तकर उदाहरण आनठाम भरिसके भेटत । औखन परम श्रद्धेय किरणजी सन महारथी लोकनि एकर गबाही दऽ सकै छथि । असल मे जं इतिहासक पन्नां उनटा कें देखल जाय त ई बात स्पष्ट भ जायत जे प्रत्येक महान आत्मा अपन जीवन कालमे, सम-सामयिक द्वारा आलोचित अपमानित होइत रहलए । मुदा ठीक एकर समानान्तर एक वर्ग द्वारा पूजित-सम्मानित सेहो । देश-काल-परिवेशक अनुकूलता-प्रतिकूलता ओकर सफलता असफलताक कारण होइत रहलैकए । तें ककरो महत्व एहि लेल कथमपि नइ होइछ जे ओ अपन जीवन मे कते सफल रहल वरन् ओ उचित दिशा मे कते दूर धरि प्रयास केलक । एहि वास्तव सत्य कें नइ बूझि सकबाक कारण यदा-कदा आलोचक लोकनि नीक सं नीक व्यक्तित्व कें आलोचना करै मे पंचमुख होइत देखल जाइ छथि । तें भोला बाबू सन पवित्र हृदयक व्यक्ति पर जौं आरोप लगाओल गेल छल त अचरजे की ? जाहि 'भारती' क संपादन लेल ओ भुवनजीकें अनुरोध केलथिन सैह भुवनजी मात्र हिनक अनुरोध कें अस्वीकारेटा नइ केलथिन बरन भारती कें 'कैथिन' कहि भर्त्सना केलथिन आ सेहो 'विभूति'क प्रवेशांक मे । मैथिली पत्रक हाल वर्तमानो मे केहन अइ से ककरो सं नुकाएल नइं अइ । तखुनका कल्पना सहजहिं कएल जा सकैछ । मुदा विडम्बना देखू जे 'भारती'क पीठे पर 'विभूति' प्रकाशित भेल । पत्र-पत्रिका बेसी हैब नीक गप्प थिक परंच जाइ अवस्था मे 'विभूति' प्रकाशित भेल आ मैथिली पत्रकारिताक जगत मे एगो विषाक्त वातावरणक जन्म देलक से निर्विवाद मैथिली-मिथिलाक लेल घातक छल । भुवनजी ओतैनइ थम्हला । ओ आर एक डेग अगुआ कें मैथिली साहित्य परिषदकें कायथक कहि ढोलहो पिटलनि । हायरे मैथिलीक प्रगतिशील कवि ! असलमे ई दोष भुवनजीक नइं ओइ वर्गक छल जकर कि ओ प्रतिनिधित्व करैत छलाह । जे वर्ग मैथिल महासभाक निर्माण (1910) कए ओहि मे खाली ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के राखि मिथिलाक विशाल सर्वहारा वर्ग कें बारि देने छल । ई भावना कते कलुषित छलैक से सहजहि अनुमेय थिक । स्पष्ट रूपें कहने

इ एगो पैध षड़यंत्र छल मिथिला मैथिल-मैथिलीक विरुद्ध आ एकर फल अखनो तक मैथिल संतान भोगि रहल छथि । शत्रुपक्ष मैथिली के ब्राह्मणक भाषा कहि मैथिली आंदोलन कें दिग-भ्रमित करबाक पूर्ण प्रयास चला रहलए । भोलाबाबू एकरा नीक जकां जनैत बुझैत छलाह-तें ओ अपन पथक सेहो चयन बुद्धिमानी सं करैत रहलाह । मौन साधना करैत मुदा अविराम अपन पथ पर अगुआइत रहलाह । स्वयं अपन पथक सिरजन करैत । आ एहि साधनाक फल छल जे मैथिली साहित्य परिषदक मंत्रीक रूप मे ओ पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली के स्वतंत्र साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वीकृत करा सकलाह । मुदा ई छोट-छिन काज भेल । भोला बाबू कें एतबे सं संतोष कहां । पुन: साधना । ओ मैथिलीक सर्वांगीण विकास चाहैत छलाह । भाषा आ लिपिमे अन्योनाश्रय संबंध । देह आत्माक । लिपिक बिना कोनो भाषाक स्वतंत्र परिचय बेसी दिन तक नइं बंचि सकैछ । एहि चरम सत्य के ओ जनैत छलाह आ तें मिथिलाक्षरक विकास निमित्त पूर्ण प्रयत्नशील छलाह । 'मिथिला'क एगारहम अंकक संपादकीय, जे कि मिथिलाक्षरे मे छल ज्वलंत प्रमाण थिक । लोक मकानक उपरका रंग टीप देखैत छैक । कोनो मकानक मजगूतीक आधार होइ छैक ओकर नीव-नीवक ईंट । एकरा केओ ने देखै छैक । सत्ये भोलाबाबू मैथिली आंदोलन रूपी मकानक नीव छथि-नीवक ईंट छथि । जं मकान भव्य नइं बनि सकल त से दोष अलूड़ि राजमिस्त्रीक भ सकैए । भोला बाबू विशाल वृक्षक जड़ि छथि जे मात्र गाछ कें जमीन पर ढाढ़ होयबे मे नइं सहायता करैत छैक, पिरथीक गर्भ सं रस निचोड़ि ओकरा पियबै छैक आ तैखन ओ गाछ फूल-फल सं सजल शोभायमान होइत अइ । मुदा भोला बाबू सदा सर्वदा शान्ते नइं छलाह । रहियो केना सकैत छलाह ? महान क्रांतिकारी चेगुएबाराक कहब छनि जे वैह व्यक्ति सभसं पैघ क्रांतिकारी भ सकैए जे मनुक्ख कें बड़ बेसी प्रेम करत । प्रेम आ क्रांति । भोला बाबू सरिपंहु बड़ बेसी प्रेम करैत छलाह मनुक्ख सं - तें मैथिल सं । आ मैथिल सं तैं मिथिला सं, मैथिली सं । आ यैह प्रेम हुनका क्रांतिकारी बना देने छल । क्रांति कखनो सुन्नर आ शान्त भ नइं सकैछ । विद्रोह, विध्वंस । सृष्टि । तें महान लेनिन कें कहय पड़ैत छनि - 'आउ तोड़ि फेकी गुलामीक लज्जा / हे मुक्ति, हमरा सब के दैह / पिरथी आर स्वाधीनता ।' एही तरहक भावना काज करैए जखन कि पब्लो नेरुदा कहैत छथि -

> *'In the name of these our dead*
> *I demand punishment*
> *For those who scattered our fatherland with blood,*
> *I demand punisment,'*

जखन कि यासेरे अराफत कहैत छथि -

> *'You are the generation that will*
> *reach the sea and hoist the flag*
> *of Palestine over Tel Aviv'*

आ मैथिलीक महाकवि यात्री कहैत छथि -

> ***'शोणित जँ बोकरौ जुआएल जोंक***
> ***सफल तोहर बरछीक नोक'***

यैह भावना-भक्ति आ प्रेम भोला के ताण्डवनृत्य करै लेल बाध्य कऽ देने छल । अपन युवक शीर्षक कविता में ओ गरजि उठल छलाह -

> *'भूमिकम्प छी प्रवल विश्व विप्लव कारी हम*
> *छी अति प्रखर तरंग रूढ़ि गिरि रजकारी हम ।'*

जं तत्कालिन पत्र-पत्रिका उनटाओल जाय त पता चलत जे कोन तरहे ई साहित्यक सभ विधा मे समान अधिकारक संग सदा सर्जन मे लीन छलाह । एक दिस साहित्य-सर्जन त दोसर दिस आंदोलनक संचालन । अद्भूत साम्य । अनुपम व्यक्तित्व । मैथिलीक प्राचीन कालक तापस-मुनि । आइ हमरा सभक बीच ओ नइं छथि परंच हुनक कृतित्व अइ जे हुनक स्मृति कें अमर बनओने रहत । आकाशक जाज्वल्यमान नक्षत्र जकां हमरा लोकनि कें दिशा निर्देश करैत रहत ! रवीन्द्र नाथ ठाकुरक शब्द मे -

> *'नागिनीरा चारिदिके फेलितेछे विषाक्त नि:श्वास*
> *शान्तिर ललित वाणी सोनाइबे व्यर्थ परिहास,*
> *विदाइ नेवार आगे ताइ,*
> *डाक दिये जाइ*
> *दानवेर साथे संग्रामेर तरे*
> *प्रस्तुत हतेछे जारा प्रति घरे-घरे ।'*

लाल ओ छलाह मिथिलाक । रत्नगर्भा मिथिलाक गर्भ सं एक स एक अनेको लाल प्रसबित भेलए । भोलालाल ताइ मे स एक छलाह । नेना मे नानीक मुहे परीकथा सुनबाक क्रम मे कतेको खेप लालक चर्च सुनने रही जे लाल अनमोल होइ छइ, विरले पाओल जाइ छइ । परंच जिज्ञासा बनले छल । पैघ भेला सन्तां, बोध भेल जे सरिपहुं लाल की होइ छइ । सरिपहुं लाल त अनमोल होइ छइ - ओकर मोल के आंकि सकत ? भोला लाल जें हेतु लाल छलाह, हिनक मूल्यांकन असंभव । लाल त लाले होइ छइ जे अपन आभा सं चतुर्दिक आलोकित करै छइ । मिथिलाक विशाल आङन कें आलोकित केने छल ई लाल । नव चेतनाक प्रकाश पसारने छल । जखन मिथिलाक आकाश मे अज्ञानता, अवचेतना, कुसंस्कारक गहनतम अन्हार पसरल छल, 'भारती'क आरती सजा मां मैथिलीक अर्चना करैत ई ओहि अन्हारक देवार कें ढाहि नव आलोक पसारने छलाह । नव चेतनाक स्वरक झंकार सं दिग्-दिगन्त झंकृत केने छलाह । नव गीतक टाहि लगओने छलाह - आलस्य मे पड़ल मैथिल कें झिकझोरि कें जगओने छलाह । प्रात:कालीन प्राणवायु जकां लोक मे नव स्फूर्तिक संचार केने छलाह । मुदा आइ ओ दीप-शिखा मिझा गेलअइ ! की सरिपहुँ मिझा गेलइ ? ने त अन्हार किए ? कतए गेल ओ प्रकाश-पुंज ? नइं-नइं । प्रकाश छिड़िया गेल अइ, वातावरण मे मिझरा गेलए । प्रयोजन अइ ओकरा एकत्रित करबाक । भोला बाबूक समस्त कृतिक संग्रह कए प्रकाशित करेबाक । निश्चित रूपें - एना भेला सन्ता मैथिली जगत पुन: प्रकाशित भऽ उठत सदा सर्वदाक हेतु । ई कृति ध्रुवतारा जकां चमकैत सदा दिशा निर्देश करैत रहत ।

दास ओ छलाह - मिथिलाक-मैथिलीक । स्वेच्छया समर्पित सेवक । राष्ट्रपति कनेडीक प्रसिद्ध उक्ति अइ - 'जुनि पूछी जे अहांक देश अहांक लेल की क सकैए, पूछू जे अहां अपन

देशक निमित्त की क सकैछी ।' भोला लाल दासक जीवनी एकर ज्वलंत उदाहरण थिक । जे व्यक्ति आरंभ मे विषपान केलनि, बाद मे जखन हिनके लोकनिक कएल प्रयासक फलें मैथिली सं किछु प्राप्ति होमए लगलैक त भागीदारक विशाल पंक्ति । मुदा ई मनीषी ओमहर पपनीयों अलगा कें नइं तकलनि । सुनै छी जे हनुमान जीक हृदय मे राम-जानकीक निवास छल । ई बात सत्त हो वा नइं परंच भोलालाल दासक हृदय मे मैथिलीक निवास छल - ई धरि निर्विवाद सत्य थिक । मैथिलीक सुच्चा सेवक । सेवकक धर्म सेवा, तृप्ति सेवा मे । तें हिनका कहियो ककरो सं उपराग नइं छलनि । एगो सिद्ध पुरुष जकां निन्दा-अस्तुति उभय सम । कारण अपना निमित कोनो आशा आकांक्षा नइं छलनि । दधीचि जे कि अपन अस्थि दान केने छलाह - राक्षसक विनाश निमित्त । मुदा भोला लाल दास अपन अस्थिये टा नइं, रक्त-मांसो दान केने छलाह, जखन जते खगता भेल । ककरो विनाशक निमित्त नइं, मैथिलीक कल्याणक निमित्त । मैथिली कें अपन उचित स्थान पर स्थापित करैक निमित्त । केहन पैध त्याग छल । एगो प्रतिष्ठित अधिवक्ता अपन सभ आशा-आकांक्षा, यश-प्रतिष्ठा कें मैथिलीक निमित्त हंसैत-हंसैत उसरगि देलनि । बलिदान-त्यागक अनुपम आनन्द मे आनन्दोन्मत्त । की ई त्याग, एहन पैध बलिदान व्यर्थ भ सकैए ? बंगलाक प्रसिद्ध कवि विष्णु दे क शब्द मे -

'तोमार ओ दीप्ति मुक्ति पावेई आमार चित्ते,
कोनो तरुण तमाले,
एक दिन, एक राते कोनो एक काले ।'

तें एखन हमरा लोकनि के शपथ लेबाक अइ एहि महान आत्माक नामे हिनक आशा-आकांक्षा, मैथिलीक मुक्ति, हमरा लोकनि अबस्से कराके रहब आ सैह हिनका निमित्त हैत हमरा लोकनीक सभ सं पैध श्रद्धांजलि । आ हिनका निमित्त त कविपति विद्यापतिक शब्द मे - तोहर सरिस एक तोहें माधव .... ।

(1978)

नूतन किरण

किरणजी चल गेलाह । हुनक चल गेनाइ कोनो चर्चाक विषय नहि बनल । कोनो पैध शोक सभाक आयोजन नहि भेल । कोनो पत्रिकाक विशेषांक नहि बहरायल । कोनो स्मृति-ग्रंथक आयोजनक बात नहि सुनबा मे आयल । ओ जहिन आयल छलाह तहिना चल गेलाह । असगर - अननोटिस्ड । ओना आवागमनक एहि यात्रा मे सभ असगरे होइए - मुदा अननोटिस्ड ! आ सेहो किरण जी सन व्यक्तित्व !! किरण जी सभक हेतु असगरे छलाह, मुदा सब-सन नहि । ओ सभ सं फराक छलाह एकटा एहन लोक जे कहियोकाल पृथ्वी पर अवतरित होइछ । आ तें हुनक चल गेनाइ साधारण बात नहि । ओना हुनका लेल इएह स्वाभाविक छल कारण अपन जीवन कालो मे त ओ असगरे छलाह । भीड़ मे असगर ।

किरण जी वैद्य छलाह, शिक्षक छलाह, योद्धा छलाह, विपल्वी छलाह, साहित्यकार छलाह, आ की नहि छलाह ? किन्तु नहि, ओ सभ किछु नहि छलाह । ओ नाम यशक भुखल नहि छलाह । समझौता परस्त नहि छलाह - अन्यायक सामने माथ झुकौनिहार नहि छलाह । असल मे किरण जी की छलाह आ की नहि छलाह तकरा जानैक लेल सभ सं उपयुक्त अछि हुनक कविता - हमर कामना (दोसर) । दिसम्बर 1906 मे ओ जन्म ग्रहण कएने छलाह । दिसम्बर 1987 मे याने विरासी वर्षक आयु मे जखन कि लोक 'हारे को हरिनाम'क रट लगबैत अछि, तखनुक हुनक कविता -

नहि चाहैं छी सौख, सान, सम्पति न प्रभुता
नहि वैभव वल-जात ख्याति कीर्ति सम्मान महत्ता
उचित सत्य कहवाक चेतना, साहस बनल रहय आजीवन
नहि ताकि यश-अपयश
स्वाभिमान रक्षार्थ सन्नद्ध रहय मन सदिखन
पवितहुं कष्ट अपार वौएतहुं रनवन
अत्याचार अन्यायक संग जंग मे वीतय जीवन
रूढ़ि अन्धविश्वास केर कहाबी कट्टर दुश्मन ।

ई हिनकें सन महान व्यक्ति हेतु संभव जे जकर उद्घोषणा हेबाक चाहैत छल तकर ई विनम्रताक संग कामना करैत छथि । असल मे ई समस्त गुण हिनका मे आवश्यकता सं बेसी मात्रा मे छलनि आ रूढ़ि अन्धविश्वासक कट्टर दुश्मन, अत्याचार अन्यायक संग युद्ध करैत ई अपराजेय योद्धा 9 अप्रील 1989 कें वीरगति प्राप्त कयलनि ।

किरण जीक, नहि-नहि, काञ्चीनाथ झाक जन्म एक गरीब परिवार मे भेल छल आ सेहो बाभन मे । माने बोनियो करबाक उपयुक्त नहि । बड़ बेसी तऽ राज मे भनसीयाक काज । कारण टिप्पनि मे विद्या लिखले ने छलनि ! परंच काञ्चीनाथ झा ओहि टिप्पनि के, अपन हाथक रेखा कें मिथ्या प्रमाणित केलनि अपन कर्म, अपन अध्यवसायक द्वारा । ओ शिक्षाक चरम सीमानधरि पहुंच गेलाह । एक दिस आयुर्वेदक डिग्री तऽ दोसर दिस पी0एच0डी0 । भाग्य हारि मानबाक लेल विवस भेल ।

स्वराज आन्दोलन दिस झुकाव होइते जेठ भाइ लोकनि काशी पठा देलथिन - अध्ययन हेतु । परंच जखन युद्ध चलि रहल हो तखन एकटा योद्धा के ओहि सं विमुख कोना आ कतेकाल धरि राखल जा सकैछ ? ओ स्वयं लिखै छथि - ओतऽ दुनू काज चलैत छल । हड़तालो होइक, जुलूसो बहराइक आ अपन भाषा साहित्यक काज सेहो होइक, आ इयैह अपन-अपन भाषा साहित्यक काज काञ्चीनाथ झाक जीवन मे एक नव मोड़ अनलक ! 1930 क जुलाइ मे ई काशी पहुंचल छलाह । अगस्त-सितम्बर मे मराठी-गुजराती-मलयालम आदि भाषा-साहित्य परिषदक वार्षिक समारोह देखि अपन भाषा-मैथिली मोन पड़लनि । मुदा मोन पड़ने की हो ? मैथिलीक स्थान हिन्दू विश्व विद्यालय मे छलहे नहि । काञ्चीनाथ झा सन चेतन व्यक्तिक हेतु एहि सं पैध ग्लानि-एहन अपमान दोसर की भऽ सकैत छल ? मैथिल जातिक अपमान छल । युवा काञ्चीनाथ झा तिलमिला उठलाह । मैथिली भाषी छात्र सभ कैं लक छात्र संघ बनओलनि परन्तु पथ निर्देशक अभाव । ओना काशी मे तहियो मैथिल विद्वानक अभाव नहि । म0 म0 मुकुन्द झा 'बक्सी', पं- त्रिलोचन झा, पं0 बलदेव मिश्र आदि छलाहे । परंच रहनहि हो की ? से मैथिली चेतना जं रहितनि त जे बात कञ्चीनाथ झा के अखरलनि से हिनके लोकनि कैं अखरल रहितनि ? ई बात युवा काञ्चीनाथ झा बुझै छलाह । हुनका बुझल छलनि जे मैथिली चेतनाक जागरण हेतु सर्वप्रथम प्रयास प्रवासी मैथिल द्वारा जयपुर सं भेल छल आ तकर प्रतिक्रिया मे म0म0 मुरलीधर झा हिन्दी मे 'मिथिला मोद', बहार कएने छलाह । (ओना पश्चात् हिनका अपन भूलक पता लगलानि आ 'मिथिला मोद' मैथिली मे बहराय लागल) हुनका बुझल छलनि जे 1916 मे जाहि काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापना भेलैक तकर पांच संस्थापक मे सं एक, अपना के मिथिलेश कहनिहार महाराज रमेश्वर सिंह छलाह आ एकर संविधान निर्मात्री समिति मे म0म0 डाक्टर सर गंगानाथ झा सन विद्वान मैथिल छलाह आ तैयो एहि विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्थान नहि । तें जखन ओ गर्मीक छुट्टी मे गाम एलाह त श्रद्धेय भोला बाबू सं भेंट केलनि । कोनो परिचय पात नहि । नामटा सुनल छलनि । आ भोला बाबू त साक्षत भोला - ए । आशीर्वादक हेतु हाथ सतत उठल । बेसी सामर्थ्य नहि । परंच आशीर्वाद देनिहार आ प्राप्त केनिहार जे उचित व्यक्ति हो तऽ सुफल अवश्यम्भावी । काशी लौटि काञ्चीनाथ झा किछु छात्र कें संग कऽ महामना मालवीय जी सं भेंट केलनि - अपन अर्जी रखलनि । फल भेल जे 1933 मे हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश भेल । आ युवा काञ्चीनाथ झाक प्रवेश भेल मैथिली मे, मैथिलीक आन्दोलनक क्षेत्र मे ।

सफलता सं संतुष्ट भऽ बैसिजाय बला लोक काञ्चीनाथ झा नहि छलाह । एहि सं हुनक उत्साह बढ़लनि अबस्से मुदा तैखन एगो दोसर अभाव हुनका सामने उपस्थित भेल । ई अभाव छल पत्र-पत्रिकाक । कोनो आन्दोलन कैं दिशा देबा मे, कोनो भाषा साहित्यक विकास मे पत्र-पत्रिकाक अहम् भूमिका रहलैक -ए परंच एहि लेल अर्थक प्रयोजन आ तकरो अभावे । किन्तु ओ हारि कोना मानितथि ? असल मे हारब वा थाकब हुनक शब्दकोश मे छलेहे नहि । आरंभ कएलनि मैथिली सुधाकर । हाथ सं लिखल पाक्षिक पत्रिका । एक अभिनव प्रयास । पत्रिका बहार तऽ भेल मुदा एहि संग आर एकटा समस्या आबि तुलायल रचनाक । रचनाक अभाव मैथिली पत्रिकाक

स्वभावे सन छैक जे शुरू सं आइ धरि बनले छैक । किरण जीक शब्द मे -

'संपादक स्तम्भ तं बाँटि देलथिन, मुदा लेख नहि भेटैक । जाहि स्तम्भक लेख नहि भेटैक से हमरा गरा मे उतरी छल, हम पूरा करी ।' आ एहि तरहें हिनक प्रवेश होइछ लेखनक क्षेत्र मे । आगा चलि के 'मोद'क हेतु सेहो ओ 'रिक्त स्थानक पूर्तिक' निमित्त रचना करय लगलाह । ओना ई बात ओ बड़ सहजता आ विनम्रताक संग कहने छथि परंच ई काज कतेक कठिन आ महत्वपूर्ण थिक से सहजहि अनुमेय । आ एहि लेल काञ्चीनाथ सं अधिक उपयुक्त लोक दोसर भइए के सकैत छल ?

एहि तरहें स्पष्ट अछि जे किरण जीक प्रवेश मैथिली आन्दोलन वा साहित्य मे कोनो लाभ-लोभक कारणें नहि अपितु जातीय ग्लानि सं मुक्तिक लेल भेल छल आ तैं हुनक जीवन वा साहित्य मे अनर्गल वा बेकार वस्तु तकनहुं सं नहि भेटत । ओ बड़ थोड़ लिखलनि अबस्से परंच से बड़ बेसी उपयोगी वस्तु लिखलनि जकर खगता छलैक आ दोसर व्यक्ति सं से संभव नहि छलैक । थोड़ लिखबाक दोसर कारण छल समयाभाव । हिनका मे जे कतेक उर्जा छल तकर अनुमान एहि सं लगाओल जा सकैछ जे ओ एके संग अध्ययन, अध्यापन, आन्दोलन आ लेखन करैत छलाह । एहि सम्बन्ध मे ओ स्वयं कहै छथि - 'आइ बूझि पड़ैए जेना कंओ कोशिकन्हा मे कतराक झाड़ आ झौआ-कास-पटेढ़क जंगल कटबा मे लागल छल, सुगर-हरिन कैं बैलेबा मे लागल छल आ तकरा सं सांझखन पूछल गेलैक जे तों कतेक खेत रोपलें, कतेक बिआ उपाड़लें तकर हिसाब दे, तं हमर सैह स्थिति भ जायत ।' झौआ-कास-पटेढ़क जंगल काटि परती जमीन कैं चासक उपयुक्त बनेबाक काज जे कतेक प्रयोजनीय छलैक तकर फल की भेलैक से कोनो सचेतन मैथिल सं नुकायल नहि । ओनहुना ओ बड़ थोड़ लिखलनि से बात त हुनक उपलब्ध रचनाक आधार पर कहल जाइछ जखन कि सत्य त ई थिक ते हुनक समस्त रचना आइधरि उपलब्धे नहि भ' सकल । हुनक उपलब्ध रचना मे - चन्द्रग्रहन (उपन्यास), विजेता विद्या पति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण कवितावली (कविता), कतेक दिनक बाद (कविता आ गीत), तथा परासर (महाकाव्य) अछि जैं हुनक विभिन्न विधा मे रचनाक बानगी मात्र कहल जा सकैछ । एहि सम्बन्ध मे ओ स्वयं लिखै छथि - 'हमरा ते विभिन्न छद्मनाम सँ कविता लिखऽ पड़ल । ओ सभ छिड़िआयल अछि । ओकरा एकत्र करब आइ एकटा समस्या भऽ गेल अछि । कविते नहि, कथा, निबन्ध आदि विभिन्न प्रकारक रचना रमाशंकर, उमाकान्त, वैद्यसर्जन, राजहंस, साइक्लोन, विक्षिप्त, भीमनाथ झा आदिक छद्मनाम सँ प्रकाशित अछि । (हाल चाल, दिसम्बर 1987) ।

किरणजी काशी सं गाम घुरलाह वैद्य बनि क, आन्दोलन कर्त्ता बनि क, मैथिल चेतनाक नव कर्णधार बनि क, साहित्यकार बनि क.....। ओना ताहि समय धरि ओ केवल काञ्चीनाथ झा छलाह- किरण नहि- भनहि हुनक आलोकें मैथिली आन्दोलन आ साहित्य आलोकित होम्य लागल छल । किरण उपनाम तऽ हुनक नामक संग पश्चात् आबि क जुड़ल । आ सत्यत: इएह उपनाम अपन सम्पूर्ण सार्थकताक संगे किरण जीक जीवनक प्रथम, प्रधान आ एकमात्र विडम्बना थिक । जाहि व्यक्तिक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे कतौ कोनो पार्थक्य नहि, देखाउसे नामक कोनो वस्तु नहि, तकर नामक संग ई उपनाम देखाउस मे जुड़ि गेल । ओ स्वयं कहै छथि - 'मधुप जी आ सुमन जी कवि सम्मेलन मे कविता पढ़थि । मधुप, सुमन, किरण हमहूं देखाउस मे उपनाम राखि लेलहुं ।'

किरणजी संरिसव स्कूल मे अध्यापन करथि । पेट आ परिवारक भरण पोषण हेतु दोसर साधन नहि । गरीब परिवाक लोक स्कूल मे छात्र लोकनि कें मैथिली पढ़बाक लेल प्रोत्साहित करथि । कते कचोटक बात जे एहू काज मे हुनका विरोधक सामना करय पड़लनि । किरणजी सन संघर्षशील लोक हुनका त विरोध सं शक्तिये भेंटैत छलनि । साइकिल मे पटिआ बान्हि गामे-गाम घुमि, कतौ कोनो गाछतर, कतौ कोनो स्कूलक अङनइ मे, कतौ ककरो दलाने पर मनावै लगलाह विद्यापति-पर्व । एकटा अभूतपूर्व प्रयास । निमित्त विद्यापति-पर्व, उद्देश्य जनजागरण । मैथिल चेतना कें जगओनाइ । एकरे परिणाम भेल जे पश्चात् चलि कऽ पैघ-पैघ पैमाना पर एहि पर्वक आयोजन होमय लागल । ओना एकरा एक दुखद घटनाए कलह जायत जे जाहि उद्देश्य ल किरण जी गामे-गाम बौएलाह पश्चात् से उद्देश्य हेरा गेल । आयोजन नाच-गान मोसहेवीक अखाड़ा बनि गेल ।

जतए धरि साहित्यक प्रश्न अछि, सम्पूर्ण किरण-साहित्य संघर्षक साहित्य थिक । अशिक्षाक विरुद्ध संघर्ष, कुसंस्कारक विरुद्ध संघर्ष, भेद-भावक विरुद्ध संघर्ष, शोषणक विरुद्ध संघर्ष......। शोषणक निमित्त शोषक श्रेणी द्वारा आइ धरि जतेक अस्त्र आविष्कृत भेलए, ईश्वर ताहि मे सभ सं प्रधान आ शक्तिशाली थिक । किरण जी अपन 'माटिक महादेव' कविता मे एहि ईश्वरक अस्तित्व कें एकदम सं धूलिसात् कऽ दैत छथि आ मनुक्खक शक्तिक-जाइ बलवान मनुक्खक हाथें ओ सराइ पर बैसाओल छथि तकर उद्घोषणा करैत छथि । स्पष्ट अछि जे सराइ पर बैसबऽ वला हाथ ओकरा झटकियो सकैछ । खगता छैक ओइ शक्ति कें चिन्हबाक, ओकरा जगेबाक । आ किरणजीक सम्पूर्ण जीवन एही कार्य मे लागल रहल । 1946 मे 'हमर कामना' (प्रथम) नामक कविता मे ओ कहै छथि -

'हम लिखव कथा नहि रामगिरिक,
चटकार ताल अलकाक परिक ।
अलका छल धनपतिक नगर,
हो जकर प्रतिष्ठे शोषण पर ।।
छल भेल हयत कत मनुज राख,
बढबैक हेतु अलकाक धाख ।'

स्वाभावत: किरण जीक ई भावना, ई उद्घोषणा समाजक नियन्ता शोषक समुदाय बाबू बबनुआन कें कोना अरघितैक ?

एहिठाम हम किरण जीक एगो छोट-छीन कथाक चर्च करय चाहैत छी जकर चर्च प्राय: नहि भेल अछि । कथा थिक-कोन महल नाम रखबै एकर ? चैतक दुपहरिया । पछवा धुरझार, विशाल पांतर-कौशिकन्हाक । लेखक साइकिल सं कतौ जा रहल छथि । पैर काज नहि करैत छनि । पियासे कंठ सुखा जाइ छनि । तैखन किछु दूर पर एगो गाछ नजरि पड़ै छनि । कोनहुना पहुंचैत छथि । आमक नवगछुली गाछ । जरि मे माटिक चबूतरा । एक व्यक्ति ओहिठाम बैसल । आगन्तुक कें देखितहि गद-गद भऽ जाइछ । चबूतरा पर पटिया ओछा दैत छथि । लेखक परि रहै छथि । ओ व्यक्ति पैर धो तौनी सं पोछि पंखा सं हवा करए लगैछ आ उठला पर भरि लोटा शीतल जल दैत छनि । लेखकक जेना देह आ मन दुनूक थकान दूर भ जाइत छनि आ तैखन मन मे

कौतुहल । जिज्ञासावाद सं पता चलैछ जे ओ युवक ओही अंचलक थिक । दस-बारह बर्ख पहिने ओकर दुरागमन भेल छलै । कोशीक संहार लीला मे तीन दिनक भितर माय-बाप चलि गेलैक आ तीन बर्खक बाद स्त्री सिनुरी जे ओतबे दिन आ ओही वयस मे टोलक सभक बेर-विपत्ति मे सेवा टहल क मायक स्थान पओने छलि । बाढ़िक कारणे आ जारनिक अभावे ओही मोहार पर ओकरा मुखबत्ती लगा गाड़ि देने छलैक । धीया पुता छलैक नहि । नाम कोना रहतैक ? तें ओकरे सारा पर सिनुरिया आमक गाछ रोपि देलकै, अपने किछु बदाम भीजओने, पानि रखने ओइ दकऽ आबै जाइवला लोकक सेवा लए सदत प्रतीक्षारत । एइह थिक कथा - परंच किरण जीक भावना देखू । ओ कहैत छथि -

'कतेक काव्य अछि ताजमहल पर ? कतेक तथा-कथित सहृदय कवि कलाकार ताजमहल कें देखय जाइत छथि आ शाहजहाँक प्रेमक प्रशंसाक गीत गबैत छथि ? '

परन्तु ताजमहल थीक की ? शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक की हुनक वैभव प्रभुत्वक प्रतीक ? कोन कृतित्व अछि ताजमहल में शाहजहाँक ? नकसा वास्तुकलाविदक ! लूरि निर्माण कर्त्ताक ! परिश्रम मजूरक ! आ' धन, जनताक !

जाहि प्रेम कें हम सब पवित्र कहै छिऐ, से मानवेटाक हृदय वस्तु थिकै । लाखों लोकक खून, शोषण, अपमान, गञ्जन पर जकर महत्ता छै ताहि शाहजहाँ मुमताजक हृदय मानवक हृदय रहलै कहिया ? भेलै कहिया ? शाहजहां मुमताजक प्रेम कें पवित्र हेबाक अवसर कहाँ भेटलैक । पाषाण हृदय द्वारा पाषाण हृदयाक स्मारक पाषाणेक तऽ भेलै कि ने ?

मुमताजक बाह्य सौन्दर्य छल शाहजहाँक प्रेमक आलम्बन, आ प्रेमो छल बाह्य सुन्दरे । तैं ताजमहलक विलक्षणतो तँ अछि बाह्य सुन्दरते ।

आ' आइ जे स्मारक देखलहुँ से तऽ देखितहिं बुझि जेबै जे स्मारक बनौनिहारक हृदय मानवक थिकै । सिनुरीक शरीरक सुन्दरता नहि, ओकर हृदयक असीम मातृत्व, अपार मानव-कल्याण भावना छलैक प्रेमक आधार ! पवित्र प्रेमक पयोधि अछि स्मारक निर्माताक हृदय मे ।

तैं एहन सुन्दर, सजीव लोक कल्याणकर स्मारक भेलै कि ने ?

एकर निर्माण वैभव-प्रभुत्व सँ नहि, वेदनाक बल सँ भेल छै । तैं रामायण काव्यहुं सँ सुन्दर अछि, कि ने ?'

किरण जी सन बहुआयामी विशाल व्यक्तित्व जेना कि पहिंनहुं कहि आयल छी पिरथीपर कहियो काल जन्म लैत अछि । दुखक बात जे हमरा लोकनि एहि महान व्यक्ति कें नहि चीन्हल । हमरा लोकनि हिनक कोरा धोती, कोकटी कुर्त्ता, झरपटही साइकिल आ कटही छत्ता सं, भरिसक हिनक महानता कें नपबाक चेष्टा करैत रहलहुं । असल मे हमरा लोकनि विद्यापतियो के हुनक जीवन काल मे नहिये चीन्हल । ई मैथिलक जातीय दोष वा रोग थिक । मैथिलक पछुआएल रहबाक एक प्रधान कारण । कहां दन किरण जीक साहित्य मे कल्पनाक उत्कर्ष वा पाण्डित्यक प्रकर्षक अभाव छैक आ तैं बारल रहल । एहिठाम मोन रखबाक थिक जे मैथिलीक आलोचक एकटा विशेष वर्गक होइत रहलाह-ए आ आलोचनाक आधार आन जे किछु रहल हो - साहित्य त नहिजे । ने त मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ आलोचक पंडित रमानाथ झा कविवर सीताराम झाक काव्य कें

फकड़ा नहि कहितथि । ओना जं मानिओ ली जे किरण जीक साहित्य मे पाण्डित्यक प्रकर्ष नहि - तऽ उचिते, कारण हुनका ने त अपन पाण्डित्यक प्रदर्शन काम्य छलनि आ ने पंडितक लेल ओ लिखलनि । जतय धरि कल्पनाक उत्कर्षक प्रश्न अछि से किरण जी सन सत्यानुसन्धानी, वास्तववादी लोक सं कपोल कल्पनाक आशाये मूर्खता थिक । मैथिलीक आलोचक लोकनि एहने मूर्खताक प्रमाण देलनि किरण साहित्यक अवहेलना ककें । आँखि मूनि सूर्यक अस्तित्व कें कतेदिन अस्वीकारल जा सकैछ ? तें देरियो सं सही हुनक देहावसान सं पहिने गोर चारिए पोथी प्रकाश मे आयल । ओ जाहि वर्ग निमित्त रचना कएलनि ताहि वर्ग मे जखन शिक्षाक प्रसार होएतैक तखन निश्चिते हुनक उचित मूल्यांकन होएत, सम्मान भेटतनि । तत्काल हुनक प्रकाशित पोथी सभ सहज उपलब्ध होइक तकर दायित्व निश्चिते प्रकाशक लोकनिक संग समस्त चेतन मैथिलक । हिनक समस्त रचनाक संग्रह, प्रकाशन आ प्रचारक वर्तमान मे आर बेसी प्रयोजन - मैथिल चेतनाक जागरण लेल, शोषण मुक्त समाजक स्थापनाक लेल - जाहि लेल किरण जीक जीवन उत्सर्गित छल । आ इएह काज हिनका प्रति सही श्रद्धांजलि होयत ।

(1989)

कविवर आरसी प्रसाद सिंह

आरसीक की आरसी माटिक 'माटिक दीप'
गुण-ग्राहक संग्रह करए मोती खातिर सीप
मोती खातिर सीप सीप मे मोती रहइछ
पोथी माटिक दीप हृदय आलोकित करइछ
कह लोचन कविराय तुलना 'सूर्यमुखी'क की
मैथिलीक उन्मेषक गायक अमर आरसी

बन्धु बान्धवक स्नेहिल संबोधन आर0सी0 रामचन्द्र कें आरसी बना देलक । भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क स्नेहानुरोध हिन्दीक प्रिय प्रतिष्ठित कवि आरसी प्रसाद सिंह कें मैथिलीक कवि बना देलक । एहि सम्बन्ध मे आरसी बाबू स्वयं लिखै छथि - 'अक्टूबर 1936क ' किछु एम्हर-ओम्हर मैथिल महासभाक कोनो अधिवेशन होमऽवला छलय आ ताही संगे साहित्य-परिषद एवं कवि-सम्मेलनोक जुटान प्रस्तावित रहय । प्रसंग-वंश ओहि कवि - सम्मेलन केर अवसर पर पाठ कर' लेल एकटा मैथिली कविता रचय ले भुवनजीक विशेष अनुरोध भेल जे हम तत्काल मानि लेल । हमर 'शेफालिका' शीर्षक कविताक रचना ओही स्नेहानुरोधक सुगन्धित प्रतिफलन अछि, जकर श्रेय अनायासे 'भुवन' जीक पक्ष मे जाय चाहैत अछि ।' (सूर्यमुखीक भूमिका) ।

एहि तरहें 2 अक्टूबर 1936 के आरसी बाबू अपन पहिल मैथिली कविता 'शेफालिका'क रचना कयलनि । कुशल कलाकारक रंग-तुली सं चित्रित नैसर्गिक सौन्दर्यक अपरुप छवि स्वाभाविक कारणे लोक कें नीक लगलैक, अपना दिस आकर्षित केलकैक । हिमालय सं गंगाधरि कोशी सं गंडकधरिक वसात मे एगो नव किन्तु अनचिन्हार नहि, अपन माटिपानिक होइतहुं अलौकिक सन सुगन्धि पसरि गेलैक । लोक आनन्द विभोर भ' गेल । मैथिलीक कवि श्रृंखला मे एगो नव दीपित नाम जुड़ि गेल - आरसी प्रसाद सिंह । मैथिली साहित्यिक इतिहास मे 'शेफालिका' आ आरसी प्रसाद सिंहक संगहि 2 अक्टूबर 1936 सेहो अमर भ गेल ।

आरसी बाबू अपन हिन्दी सं मैथिली मे आगमनक मादे 'सूर्यमुखी'क भूमिका (प्रवेशिका) मे लिखैत छथि - 'हम हिन्दीसँ मैथिलीमे आयल छी ! एखनो मैथिलीक संगे-संग हिन्दीओक विपुल रचना-विरचना चलैत रहै अछि । हमरा छात्रावस्थामे पढ़ाओल गेल छल जे विद्यापति हिन्दीक कवि छलाह । तखन हम विद्यापतिक पदलालित्यक सौष्ठव हिन्दीए मे पाबैत छलहुँ । श्री रामवृक्ष बेनीपुरी संपादित 'विद्यापति-पदावली' पर मुग्ध भेल छलहुँ । श्री भोला लाल दास एवं श्री कुशेश्वर कुमर द्वारा संपादित 'मिथिला'क पाठक छलहुँ मुदा भावना यैह छल जे मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि-हिन्दीएक एकटा बोली-मात्र थिक !' एकरा एगो विडम्बना नहि त आर की कहल जाय ! एक सुप्रतिष्ठित यशश्वी साहित्यकार कें अपन मातृभाषा ओकर स्वतंत्रसत्ताक बोध नहि । ओना जं सत्य कही त एहन भावना-धारणा तत्कालीन एवं परवर्तियो अधिकांश साहित्यकारक छलनि आ छनि । से नहि भेने, जे हिन्दी मैथिलीक चिन्नमारोधरि दखल करबाक लेल आफन तोड़ने अछि तकर स्वागत मे हमर साहित्यकार लोकनि आरती लेने स्तुतिगान नहि करैत रहितथि आ तखन मैथिलीक

दोसरे दिन रहतैक । मैथिली दधिचि बाबू भोला लाल दास यथार्थहिं कहलनि जे हमरे पूंजी सं बंगला आइ एते समृद्ध भेल अछि आ हमरा लोकनि अपन पूंजीओ बिलटा देल । ई त आरसी बाबूक महानता थिक जे ओ अपन भ्रम कें मुक्तकंठे स्वीकार केलनिहें ।

आरसी बाबूक पहिल कविता-संकलन 'माटिक दीप' 1958 मे प्रकाशित भेल जाइ मे कुल 28 गोट कविता अछि । स्पष्ट अछि जे आरसी बाबू मैथिलीक संग हिन्दीओ मे नहि बरन हिन्दीए मे लिखैत रहलाह; कहियोकाल किनको आग्रह पर, कोनो मंच सं पाठक निमित्त एक-आध रचना मैथिलीओ मे क लेल करथि । अन्यथा एहि दीर्घ अवधि मे (1936-1958) आरसी बाबू सन कवि मात्र 28 गोट कविता नहि लिखने रहितथि । कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिलीक लेखन ताहूदिन अर्थोपार्जनक साधन नहि छलैक आ आरसी बाबू सन स्वाभिमानी लोक जे बेर-बेर नोकरी छोड़ैत रहलाह, अपन भरण पोषण लेल हिन्दी मे लिखब आवश्यक रहल होनि । ओनहुना आरंभहि सं हिन्दी मे रहबाक कारणें कोनो असौकर्यक बोध नहि भेल होनि वा अपन हिन्दी क्षेत्रक बन्धु बान्धवक आग्रह - अनुरोधकें अस्वीकार करब सहज-संभव नहि भेल होनि ।

1960 क पश्चात् आरसी बाबूक मैथिली लेखन गति पकड़लक आ 1970 क पश्चात् ओ प्रायः मैथिलीए मे लिखलनि । ओना पूर्वक जे हुनक गति छलनि आ जाहि गतिए ओ हिन्दी मे शताधिक ग्रंथक रचना केलनि ताहि मे शैथिल्य अबस्से आबि गेल छलनि कारण जे कोनो किएक ने रहल हो । 1967 मे प्रकाशित भेल हुनक दोसर कविता संकलन 'पूजाक फूल' आ 1981 मे तेसर कविता-संकलन 'सूर्यमुखी' जे साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत अछि (ओना एहि पोथीक भूमिका मे जे तिथि ओ देने छथि से भेल-मकर-संक्रांति, 14 जनवरी 1982) ।

मैथिली मन्दिर मे माटिक दीप लेसनिहार आरसी बाबू पाछू अबितहुं पछुआयल धरि नहि रहलाह । परिमाण मे कम रहितहुं (यद्यपि मैथिलीक सन्दर्भ मे कम कहले केना जाय ?) परिणाम मे ओ बहुत बहुत आगू छथि । हुनक भू-भाषा प्रेम, जे हुनक बहुतरास कविता मे स्पष्ट रूपें रूपायित भेल अछि - एगो बानगी प्रस्तुत करैत अछि । एहि सन्दर्भ मे 'माटिक दीप' मे प्रकाशित हुनक तीन गोट कविताक हम चर्च करय चाहब, जाहि मे मिथिला-मैथिली प्रेमक पराकाष्ठा, ओकर उद्धार-अधिकार लेल आकुलता-व्याकुलता देखल जा सकैछ । पहिल थिक 'स्वदेश' जकर रचनाकाल थिक 16 जुलाई 1948 । एकर किछु पांती देखल जाय -

धन्य, धन्य ई मिथिला देश ।
जतऽ अन्नपूर्णाक ताल पर
नाचथि भैरव-रूप महेश ।
0 0 0
शुक-पिक सुरवाणी उच्चारय ।
दास-दासिओ वेद विचारय ।
कण-कण जतऽ ज्ञान चर्चा मे
शंकर ब्रम्हो कें ललकारय ।
कमला आंगन-भवन बुहारथि,

लक्ष्मीपतिक दिगम्बर-भेस ।
धन्य, धन्य ई मिथिला देश ।

दोसर कविता थिक 'बाजि गेल रनडंक' जकर रचना 2 फरवरी 1945 कें भेल अछि । एकर किछु पांति देखल जाय ।

बाजि गेल रनडंक डंक ललकारि रहल अछि ।
0 0 0
के रोकत ई बाढ़ि ककर सामर्थ्य अड़ै अछि ।
0 0 0
ई अदराक मेघ ने मानत, रहत बरसि कऽ ।
0 0 0
आवहु की रहतीह मैथिली बनल वन्दिनी ?
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनक-नन्दिनी ?
डंक बाजि गेल, आगि लंकमे लागि रहल अछि ।
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि ।

तेसर कविताक शीर्षक थिक 'अधिकार' जे 4 फरवरी 1954 कें रचल गेल छल । एकर किछु पांती -

माँगि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ-जन-वाणी ।
माँगि रहल छी हम विदेह-भू
भाषा चिर-कल्याणी ।
0 0 0
जहाँ बहै कोशी ओ कमला
गंडकीक जल धारा ।
ओ धरती ने आब रहत हे
किन्नहु मानव-कारा ।
0 0 0
बैस कण्ठ पर क्यो बरजोरी
स्वर नहि दाबि सकै अछि ।
मूँग दररि सदिखन छाती पर
मुंह नहि जाबि सकै अछि ।
लेब अपन अधिकार आब हम
अपन महालक पानी ।
माँगि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ-जन वाणी ।

एकर पद लालित्य, ठेठ शब्दावलीक सौन्दर्यक बात कात राखि, एहि सन्दर्भ मे हम आर किछु कविताक चर्च करय चाहब जे 'सूर्यमुखी' मे प्रकाशित भेल अछि । 12 अप्रील 1968 कें रचित 'मैथिली-मंदिर मे' क किछु पांती देखल जाय -

जे अवै छथि देबता साहित्य देवालय जगावय,
पालकी मे हुनक हमरो एक कन्हा आइ लागय ।
0 0 0
मातृभाषा-भारती-सुत कऽ रहल संघर्ष छथि जे,
अग्रणी, नायक, पुरोधा हुनक स्वप्नादर्श छथि जे,
मैथिली वर देथि, जे छथि मैथिली-मंदिर पुजारी,
माटि ने मिथिलाक छोड़थि, बनि रहथि कल्याण कारी ।
प्रार्थना अछि, शत शरद पर्यन्त ओ सानन्द जीवथि ।
लाभ कऽ सुख-शांति सहजैं जीवनक नित अमृत पीवथि ।

29 फरवरी 1981 कें रचित हुनक 'क्रान्ति-पूत'क किछु पांती देखल जाय -

स्वस्थ राजनीति,
लोकतन्त्र नीक हो !
संविधान मे विधान
मैथिलीक हो !
आइ ई विदेह भूमि माँगि रहल छै ।
मैथिलीक क्रांति-पूत जागि रहल छै !

मैथिलीक क्रांति-पूत कहिया जागत, के कहि सकैछ ! इतिहास त इएह कहैए जे अन्ततः लवहरि-कुसहरि सेहो अपन पिता अयोध्यापति रामहिक बांहि ध' सहटि गेल छलाह आ बनवासिनी मैथिली कें अपन जननी धरीत्रीक कोरमे जा नोर नुकाबय पड़ल छलनि । ओना एक समय छलैक जहिया किछु मैथिलीपूत लोकनि सुगबुगायल छलाह आ मैथिली भाषा ओ मिथिला राज्यक आवाज मुखरित भेल छलै आ ताहि समय आरसी बाबूक 'माटिक दीप' क उपरोक्त गीत सभ बेस लोकप्रियता अर्जित केने छल, प्रेरणा जोगओने छल । एहि मे कोनो संदेह नहि जे 'शेफालिका' मैथिली काव्य कुंजक एक अनमोल रत्न थिक परंच हुनक व्यापक परिचिति, हुनक लोक प्रियताक आधार जं एहि गीत सभ कें कही त भरिसक अनर्गल नहि होयत । एहिठाम उल्लेखनीय जे दिसम्बर 1958 सं मार्च 1970 धरि एहि पोथीक तेसर मुद्रण कराबै पड़लैक जे मैथिली मे एगो विरल घटना थिक ।

आरसी बाबू कं केओ आस्थावादी त केओ स्वच्छन्दतावादी कवि कहै छथि । केओ राष्ट्रीयधाराक कवि त केओ प्रकृति-सौन्दर्यक कवि कहै छथि । आलोचक लोकनि कें 'वाद' बाहर या त किछु देखाइए ने पड़ैत छनि वा देखै नहि चाहै छथि-जानि नहि । ओना ई एगो विडम्बनाए थिक जे मानव सभ्यता विकासक संगहि विभाजनक प्रवृत्ति प्रबलतर भेल अछि । एहि विराट सुन्दर पृथ्वीक पश्चात् विशाल मानव जाति कें खंड-खंड मे बांटि आब हमरा लोकनि स्वयं के बंटबा मे

व्यस्त छी । हमरा जनैत आरसी बाबू विराट प्रतिभा सम्पन्न एक सम्पूर्ण कवि छलाह । हुनक इएह विराट प्रतिभा-व्यक्तित्व हुनका कविवर आ महाकविक आसन पर प्रतिष्ठापित कएलक । कोनो वादक संग जोड़व ओहि विराट कें लघु क' देखब मात्र थिक । स्मरण रखबाक थिक जे सनातन संस्कार सं राताराती मुक्ति पायब सहज-सम्भव नहि आ तहिना समाज मे रहि सतत कल्पनाक यान पर विचरण सेहो असंभव । तें बाढ़िक विभीषिका देखि 'शेफालिका' क कवि लिखै छथि -

भूख मे डूबल पियासल जन-जनक हकरोस ।
पानि मे हेलैत-भासल जाइ छै संतोष ।
रक्तचाही विप्लवी जे उनटि कऽ युगचक्र
रखि दिऔ, से भऽ सकै अछि चन्द्र कोनो वक्र ।
(बाढ़िक हकरोस)

आरसी बाबू परम्परा प्रेमी छलाह-निर्विवाद छलाह । एकर ई अर्थ कथमपि नहि जे ओ प्रगतिक विरोधी छलाह । ओनहुना परम्परा प्रगति मे बाधक नहि, जे बाधक होइछ से थिक रूढ़ि वा रूढ़ परम्परा आ तें त्याज्य । ओना मा के मा कहबाक परम्पराक परित्याग वा विरोध मे कोन बुधियारी ? स्मरण रखबाक थिक जे कोनो परम्परा क निर्माण हो वा ध्वंस, राताराती संभव नहि । तहिना आइ अहां एक स्थापित मूल्य वा परम्पराक विरोध करैत छी, कालि अहांक इएह विरोध परम्पराक रूप ल लैत अछि । स्पष्ट छैक जे मुख्य बात थिक मनुक्ख, ओकर कल्याण, ओकर उन्नति-विकास । जं कोनो परम्परा एहि मे बाधक हो त कोनो सहृदय साहित्यकार तकरा कोना सहनक' सकैछ ? एहिठाम हम आरसी बाबूक 'आनन्दक खुजल दुआरि' शीर्षक कविताक किछु पांती अद्धृत क' रहल छी जे स्वतः प्रमाण अछि -

राजमार्ग कैं त्यागि धरय अछि
पयर कुपथ पर अन्य
से युग पुरुष केसरी अथवा
विद्रोही क्यो धन्य ।

अपन 'प्रगति' शीर्षक गीत मे आरसी बाबू लिखैत छथि -

पौतइ सुख-सुविधा सव समता समाने ।
मिलतइ जँ अवसर विकासक समाने ।
भोजन, घर, कपड़ा लै दुख ने क्यो सहतइ ।
रहतइ कि आबो गरीवी हो भइया ?
रहतइ कि आवौ गरीवी ?

सभक हेतु विकासक समान सुख-सुविधाक कामना केनिहार कवि कें जं परम्परावादी कहल जाय त' प्रगतिवादी वा जनवादी ककरा कहल जेतै ?

जतयधरि शिल्पक प्रश्न अछि आरसी बाबू छन्दलय-वन्द्ध कविता लिखैत छलाह । हुनक प्रायः समस्त कविता गेय अछि । किन्तु एकर अर्थ कथमपि नहि जे ओ नव कविताक विरोधी छलाह । ओना पहिने हमरो एहन भ्रम छल । सूर्यमुखीक भूमिका सेहो एहन भ्रम उत्पन्न करैछ ।

जखन कि सत्य इएह थिक जे ओ समस्त नव कविक रचना पूर्ण मनोयोगक संग पढ़ैत छलाह, ओकर गुण दोषक विवेचन करैत छलाह हुनका लोकनि के प्रोत्साहित करैत छलाह । विवेचनक आधार निश्चित उनक अपन बुद्धि-दृष्टि लानि । एहि सन्दर्भ मे उल्लेखनीय जे 1977 मे हमर प्रथम काव्य-सकलन 'इतिहासहंता' प्रकाशित भेल छल । बहुतो मान्य-प्रतिष्ठित कवि लोकनिक संग हुनको हम अपन पोथी पठओने छलियनि । कतेकोक त पहुंचनामा पत्रोधरि नहि भेटल परंच आश्चर्यक बात जे आरसी बाबूक पत्र घुरती डाक सं प्राप्त भेल - 'पोथी पढ़ि कऽ बड़ खुशी भेल । परम्परा के ओढ़नहु अहां 'परम्परा' सं ततेक फराक बुझि पड़ैत छी जे लगैत अछि कोनो पुरान पीपर-पाकड़िमे नव-नव लाल-लाल पल्लव लगल होए । की कहऽ चाहैत छिऐ से ततेक महत्वक नहि बूझल, जतेक कहबाक नव ढंग आ स्थापना । आशा अछि, एहिना अहाँक स्वर सँ मैथिलीक मंदिर आंदोलित होइत रहत ।' हमरा सन अपरिचित, अज्ञात कुल-शील कविक प्रति हुनक ई स्नेह शुभकामना निश्चिते हमरेटा नहि, हमर पीढीक प्रति, वर्तमानक संगहि भविष्यक प्रति छल जे कविवरक महानताक परिचायक थिक, हुनक मातृभाषा मैथिलीक प्रति अगाध प्रेमक परिचायक थिक । एहि सन्दर्भ मे हम एक बेर फेर हुनक 'मैथिली-मंदिर मे' शीर्षक कविताक, ओकर किछु पांतीक स्मरण कराबय चाहब -

जे अबै छथि देवता साहित्य-देवालय जगावय,
पालकी मे हुनक हमरो एक कन्हा आइ लागय ।

एहिठाम लिखब भरिसक अनर्गल नहि जे मैथिली मे प्रायः एकर विपरीते होइत आयल अछि आ आलोचना, चर्चा-परिचर्चाक आधार रचना नहि, रचनाकार, ओकर वंश-पदमर्यादा रहैत आयल अछि जे मैथिली साहित्यक उन्नति विकासक मार्ग मे सभ सं पैघ बाधक थिक ।

आरसी बाबूक विराट व्यक्तित्व, हुनक प्रतिभा, इर्ष्याक कारण भ' सकैत छल, शत्रुताक नहि । वास्तव मे ओ अजातशत्रु छलाह जनिक अधर पर सदा-सर्वदा एक निश्छल 'मुस्कान' देखल जा सकैत छल । हुनका अपन समकालीन सं ल कें परवर्ती साहित्यकार लोकनि धरिक समाने स्नेह-सम्मान भेटल छलनि ।

17 नवम्बर 1996 क 'जनसत्ता' मे हठात् आरसी बाबूक मृत्यु संवाद देखि मर्माहत होयब स्वाभाविके छल । हुनक अभाव - उपेक्षाक स्थिति मे मृत्युवला बात सं आर बेसी कचोट भेल । ओना सत्य त इएह थिक जे थोड़-बहुत 'दिनकर' कें छोड़ि बिहारक कोनो साहित्यकार के समुचित सम्मान मर्यादा नहि भेटलैक - बिहारे सरकार द्वारा नहि त केन्द्रक बात की ? सभ उपेक्षिते रहलाह । राजकमल अपन चिकित्सा लेल अपन पोथी 'मुक्ति-प्रसंग' क बदला बिहार सरकार सं अर्थ सहयोगक अपील केने छलाह परंच सरकार कानो नहि पटपटओलक । जहांधरि मैथिलीक प्रश्न छैक सं आरसीए बाबूक कविताक आधार पर - तरुक छांहतर उदास जीवन व्यतीत करैत बन्दिनी मैथिलीकें ममताक अतिरिक्त देबा जोग छैकै की ? आ ओकर एहि स्थितिक लेल दायी केओ आन नहि, ओकर अपन सन्तान छैक । जं आइ मैथिली बन्दिनी नहि रहितथि, जं आइ मिथिला राज्य रहैत त कोनो कारण नहि जे हमरा लोकनिक प्रिय कविवर आरसी एना अभाव-उपेक्षाक स्थिति मे मृत्यु के वरण करितथि । जं आइ मिथिला राज्य रहैत त कोनो संदेह नहि जे हमरो

कविवर के ओहने राजकीय सम्मानक संग अंतिम संस्कार-सत्कार कैल जाइत जेना बंगालक कवि शक्ति चट्टोपाध्यायक एहिठाम कैल गेल छल ।

जे हो, आइ आरसी बाबू शरीर सं हमरा लोकनिक बीच नहि छथि, परंच हुनक कीर्ति हमरा लोकनिक बीच अछि । हुनक कीर्ति जाहि सं सुरक्षित रहय, अम्लान रहय, से देखब, एहि सं आगामी पीढ़ी के परिचित करायब हमरा लोकनिक पुनीत कर्तव्य । मैथिली मंदिर मे जे माटिक दीप ओ लेसने छलाह से जाहि सं मिझा नहि पाबय आ ओकर ज्योति सं मंदिरक भीतरे नहि बाहरोक प्रांगण चिर ज्योतित रहय, हुनक पूजाक फूल पूर्ण पवित्रताक संग मातृ-वेदी पर चढ़ैत रहय, हुनक सूर्यमुखी जाहि सं सुखा-मौला नहि पाबय जं ततबा हमरा लोकनि क' पाबी त' इएह कविररक प्रति समुचित श्रद्धांजलि होयत । तत्काल-

मैथिली - मन्दिर मे लेसैत
दीप, फुलडाली मे सजबैत
फूल पूजाक मैथिली केर
प्रतीक्षा वालरविक विहुंसैत
बहाना छल सूर्यमुखी केर

बिसरि की सकत मैथिली पूत
रत्न मिथिलाक अनमोल अनूप
महाकवि आरसीक छवि, कृति
सौम्य-सुन्दर आकर्षक रूप
करत सभ बेर - बेर आवृति

रहत जा धरा-धाम मिथिलाक
पानि गंगा-कोशी-कमलाक
रहत ता नाम अमर कवि तोर
कीर्ति चमकैत चान पुनिमाक
मात्र आशीष तोर, प्रण मोर ।

(1997)

चौधरी जी : एक आवेग प्रवण अभिनेता

हमरा लोकनिक संस्कार थिक जे दिवंगत व्यक्तिक आलोचना नहि करी । ओनहुना जखन किनको स्मृति मे किछु लिखैत छी त निश्चिते ओहि व्यक्तिक कोनो उपकार नहि करैत छी, अपितु हुनक अवदानक स्मरण क अपन कर्तव्यक पालन करैत छी आ अगिला पीढ़ीक लेल एगो अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करय चाहैत छी । परंच एतौ हमरा लोकनि प्राय: भूल क बैसैत छी । प्राय: देखल जाइछ जे जकर प्रशंसा करय लगैत छी तकरा देव आ जकर निन्दा करय लगैत छी तकरा दानवक रूप मे प्रतिष्ठापित क दैत छी, आ दुनू स्थिति मे मनुक्ख पछड़ि जाइत अछि । मोन रखबाक थिक जे अपन समस्त गुण दोषक संगहि मनुक्ख वास्तविक मनुक्ख होइत अछि । ने त ककरो मे सभ गुणे होइत छैक आ ने ककरो मे सभ अवगुणे । रामकथाक कवि-लोकनि राम के मनुक्ख स देवता त बना-देलनि मुदा फल की भेल ? रामक पूजक त भेटि जायत, परंच हुनक तथाकथित मर्यादा, हुनक आदर्शक अनुकरण केनिहार कतेक लोक भेटत सेहो विचारणीय ! अस्तु ।

अपन पितियौत आ अखिल भारतीय मिथिला संघक भूतपूर्व अध्यक्ष श्री शुकदेव ठाकुरक संग चाकरीक खोज मे कलकत्ता आयल रही । चाकरी त बाद मे भेटल परंच मिथिला संघ आ ओकर सदस्यता पहिने । 1964 सं 1974 धरि साधारण सदस्य स संयुक्त सचिव आ कार्यकारी सचिवक दायित्व निर्वाहक क्रम मे चौधरी जी संग घनिष्ठता स्वाभाविके । एहि मे संदेह नहि जे हमरा लोकनि मे मतैक्यक संगहि यदा-कदा मत पार्थक्यो रहैत छल आ अन्तत: इएह मतपार्थक्य संबंध विच्छेदक कारणो भेल । ओना संबंध विच्छेद होइतहुं सम्पर्क प्राय: बनले रहल । डेरा पर हुनक आवाजाही छलनिहें, कारण हम हुनू भाइ बहुत दिन धरि एके डेरा मे रहैत रही । कएक बेर भाइ साहेबक माध्यमे बजएबो केलनि आ मिथिला दर्शन क मादे, ओकरा नीक जकां चलेबाक आ ओकर दायित्व लेबाक मादे सेहो गप-शप भेल परंच से कार्यरूप मे परिणत नहि भ सकल । फेर 1980 मे 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' क बैनर तर हमरा लोकनि एकत्र भेल रही । कलकत्ताक प्राय: समस्त संस्थाक एकत्र होएबाक ई एक विरल आ सुखद इतिहास थिक जकर संयोजक सेहो हमहीं रही । कहबाक तात्पर्य जे चौधरी जींके जनबा - बुझाबाक लेल ई संग-समय थोड़ नहि कहल जा सकैत अछि । आ हमर समस्यो इएह थिक । वस्तुत: ओहि व्यक्तिक सम्बन्ध मे लिखनाइ सहज संभव नहि जकर जनमानस मे कोनो विशेष छवि बनि गेल होइ आ अहां तकर बड़ लग रहल होइ, ओहि कार्य-कलापक संग युक्त रहल होइ, जे कार्य-कलाप जनमानस मे एहन छवि बनबाक आधार रहल हो । परंच बन्धुवर दास जी के त बचन देने छियनि । कोना ने दितियनि । जाहि चौधरी जीक नामे कहियो कलकत्ता परिचित छल तिनकर एतेदिन दिवंगत भेलाक पश्चातो कोनो तेहन स्मरणीय कार्य कहां भेल । ओं त धन कहो दासजी (संपादक कर्णामृत) कें जे विलम्बो सही, संकल्प त लेलनि । तें सोचल जे हुनक नाटक पर किएक ने लिखल जाय । परंच किछु दिन पहिने ज्ञात भेल जे ओहिपर रचना प्राप्त भ गेल छनि । तखन ? तखन एकेटा विषय बांकी अछि जाइ मादे

हमरा सं बेसी भरिसक हमर भाइए साहेब के बूझल होइन, परंच ओ त लिखेत छथि नहि ।

4-9-1966 कें 'मैथिली रंगमंच' क प्रथम मंचन सीराताम चौधरी लिखित आ प्रवीर मुखर्जी निर्देशित 'सुखायल डारि नव पल्लव' नेताजी सुभाष इनस्टीच्यूट, सियालदह में भेल छलैक । हीरोपट्टीक रईस दर्पनारायण रायक भूमिका मे चौधरी जी आ हुनक बालक अरुणक भूमिका मे हम । पहिल बेर एक संग मंच पर उतरल रही । तकर बाद 13-5-69 कें 'कुहेस' क मंचन मे । कन्याक पिता जनकक भूमिका मे चौधरी जी आ डाक्टरक भूमिका मे हम । ओना इहो एगो विडम्बनाए छलैक जे हमरा लोकनि द्वारा मंचित समस्त नाटक मे सर्वाधिक मंचन 'कुहेस' क भेलैक-कलकत्ता सं गोड्डा, धनबाद धरि आ चौधरी जी त अपन ओरिजिनल भूमिका मे रहथि, परंच हमरा अपन ओरिजिनल भूमिका जे विशेष क हमरे लेल लिखल गेल छल, छोड़ि राम कुमारक भूमिका मे आबि जाय पड़ल छल । एहि समस्त नाट्यभिनयक क्रम मे हमरा जे अनुभव भेल से ई जे चौधरी जी एगो नीक अभिनेता छलाह आ हुनक मंच वा अभिनय प्रतिभा विलक्षण छल । एहिठाम लिखनाइ भरिसक अनर्गल नहि जे संघक नाट्य-मंचन प्राय: वार्षिक अधिवेशनक अवसर पर होइत छलैक जाइमे भाषण, कवि सम्मेलनक पश्चाते नाट्य-मंचन होइत छलैक । आयोजनक सफलता लेल विभिन्न अंचल मे सभा आ ताइ मे हुनक उपस्थिति आवश्यक । स्वभावत: पूर्वाभ्यास मे ओ समय नहि द पबैत छलाह । आयोजन दिन सेहो अतिथि सं मंचधरि व्यस्त आ तत्पश्चात नाटक । कते बेर त ओ नीक जकां मेकअपो नहि क पबैत छलाह, आ धोती-कुर्ता पहिरते छलाह, ओहिना मंच पर उतरि जाइत छलाह ।

1966 सं 1976 धरिक समय कलकत्ता नाट्य-मंचक इतिहास मे अविस्मरणीय रहत । नाट्यलेखन, अनुवाद, मंचन, प्रकाशन समस्त क्षेत्र उत्कर्षक अतुलनीय उदाहरण । तथापि, जेना कि हम पहिनो कइएक ठाम लिखि चुकल छी मैथिली मंचक सभसं पैध शक्ति छलैक कलाकार । आ जाहि सभ कलाकारक नाम पहिल पांति मे लिखल जायत ताहि मे निश्चिते एक नाम बाबू साहेब चौधरीक सेहो रहत।

चौधरी जी कें लोक जनैत अछि आन्दोलनकारीक रूप मे आ से कोनो अनुचित नहि । हमरा जनैत ओ स्वयं अपना के एही रूप मे परिचित प्रतिष्ठित करय चाहैत छलाह । तथापि हम कहय चाहब जे ई हुनक सम्पूर्ण परिचय नहि थिक । ओ एगो नीक नाट्यकार छलाह, अनुवादक छलाह, संपादक छलाह, कुशल कलाकार छलाह आ कोनो क्षेत्र मे दोएम नहि छलाह । ओ मात्र एक गोट नाटक लिखने छथि - कुहेस । दहेज प्रथा पर आइधरि जते नाटक लिखल गेलए-कुहेस ओइ मे सभ स सफल नाटक थिक । जेना कि ओ स्वयं कहने छलाह, रमानाथ बाबू सन आलोचक ई नाटक पढ़लाक पश्चात् लिखने छलथिन-जे विगत दस वर्ष मे एहन विलक्षण नाटक नहि लिखल गेल अछि । अनुवाद सेहो ओ एके गो नाटकक केने छथि, डी0 एल0 रायक चन्द्रगुप्तक जे 'चाणक्य' नामे प्रकाशित अछि । बंगलाक विलक्षण ज्ञान छलनि आ ओ चाहितथि त आरो पोथीक अनुवाद क सकैत छलाह । परंच सत्य त इएह थिक जे ओ जे नाटक लिखलनि किंवा अनुवाद

केलनि से अपना के लेखक वा अनुवादक रूप मे प्रतिष्ठिापित करबाक उद्देश्य सं नहि अपितु ओही आन्दोलनक क्रम मे । परंच जाहि निपुणताक संग चौधरी जी चन्द्रगुप्तक अनुवाद केने छथि से बहुतो प्रोफेशनल अनुवादकोक लेल असंभव । साहित्य अकादमीक पुरस्काकर निर्णायक लोकनिक बात अबस्से फराक थिक ।

हं, त हम कहैत छलौं चौधरी जीक अभिनय कौशलक मादे । पहिने कहि आयल छी जे ओ पूर्वाभ्यास मे पर्याप्त समय नहि द पबैत छलाह, परंच अभिनय सं ततेक सिनेह छलनि जे फराको नहि रहि सकैत छलाह । एहना स्थिति मे सूत्रधार पर निर्भर रहानइ स्वाभाविक । परंच ओ पूर्णत: सेहो नहि रहैत छलाह । अपन अभिनय क्षमता सं आ विषय बोधक कारणे स्वरचित संवाद सं अपन कमजोरीक आभासो धरि नहि होमय दीतथि । हुनक बाचिक क्षमताक सम्बन्ध मे फराक सं किछु लिखनाइ भरिसक आवश्यक नहि । जे लोकनि हुनक अभिनय नहिओ देखने होथि, मुदा भाषण सुनने होथि ओ सहजहि एकर अनुमान क सकैत छथि । वस्तुत: चौधरी जी छलाह आवेग प्रवण अभिनेता । एहन अभिनेता दर्शक सं त थपरी पिटबा लैछ, परंच सहअभिनेताक लेल सदा-सर्वदा समस्याक सृष्टि करैत अछि । पोथीक बाहरक संवाद मे सूत्रधारो हेरा जाइछ । परंच चौधरी जीक संग जे केओ एक बेर अभिनय क लेलक आ जं सक्षम हो त से अपना के ताहीरूप मे तैयार रखैत छल । कहबाक प्रयोजन नहि जे एगो नीक अभिनेता मे एहि तरहक क्षमता रहबेक चाहिऐक । 'सालामरि गिया त लूटि लो' बजनिहार के नीक अभिनेता कहल केना-जा सकैछ ।

चौधरी जीक अभिनय क्षमताक दू तीन गोट उदाहरण एहिठाम हम देमय चाहैत छी आ जेलोकनि ई अभिनय देखने होथि तिनका लोकनि सं आग्रह जे अपन स्मरण शक्ति के जगावथि । 'चन्द्रगुप्त' नाटक हुनका बड़ प्रिय छलनि । ओ स्वयं चाणक्यक भूमिका करैत छलाह आ हम चन्द्रगुप्तक । बंगला मे चाणक्यक भूमिका नाट्याचार्य शिशर भादुरी करैत छलाह । चौधरी जी एकाधिक बेर ई नाटक देखने छलाह आ भादुरी महाशयक अनुरकणक प्रयास करैत छलाह । एकठाम अपन छातीपर सं चन्द्रगुप्तक हाथ झटकि ओ जखन बजैत छथि-मूर्ख, एतय रक्त कतए ? लगैत अछि जे दोसर कोनो अभिनेता भरिसक एहन अभिनय नहि क पाओत । अपशोच जे भादुरी महाशयक अभिनय देखबाक सौभाग्य हमरा नहि भेल । अपन एकमात्र बेटीक जीवित होएबाक सूचना जखन चाणक्य के भेटैत छैक, तखनुक अभिनय आ 'सुखायल डारि नव पल्लव' मे बेटा पुतोहुक मृत्युक पश्चात् जखन कोरा मे पौत्र के पबैत छथि (दर्पनारायण) तखनुक अभिनयक जीवंतता वस्तुत: शब्द मे समाहित करब संभव नहि । तहिना 'कुहेस' मे बेटीक दुर्दशा देखलाक आ समधिनक गंजन-सुनलाक पश्चात् दहेजक दबिला सं गदिआओल आत्माभिमानी किन्तु असक्क पिताक स्थितिक चित्रण जाहि विलक्षणताक संग ओ उपस्थित कएने छलाह से देखिते बनैत छल । आ इएह ओ दृश्य सभ थिक जाहि मे हुनक अंतरक आवेग उद्वेलित उद्भासित होइत छल आ जाहि आधार पर हुनका हम एक आवेश प्रवण अभिनेताक विशेषण सं विभूषित करय चाहैत छी ।

(2002)

अस्ताचलगामी सूर्य कें नमस्कार

कलकत्ता मैथिली आन्दोलनक अगुआ रहल अछि । ई गप बहुतो जनैत छथि, मानैत छथि, कहैत छथि । परंच कलकत्ता कें ई गौरव-गरिमा प्रदान करैक पाछा ककर कते योगदान अवदान छैक से बड़ थोड़ लोक जनैत छथि । किछु लोक वेश टोप-ट्रहंकारक संग मंच पर बैसैत छथि । माला पहिरै छथि । माइक रहितो नाभिकुंड सं जोड़ लगा वक्तृत्ता बघारै छथि । थपड़ी पबैत छथि । फोटो खिचबैत छथि आ तकरा पत्रिका किंवा स्मारिका मे छपबैत छथि । लोक एहने लोक कें चिन्हैत अछि । परंच जनिक श्रम-साधना एहि आयोजनक समिधा क जोगार करैत अछि, हुनका केओ ने चिन्हैत अछि । एहन लोक सभदिन पाछुए रहि जाइत छथि । एहने एकटा लोक छलाह शुकदेव ठाकुर । हँ कलकत्ताक सन्दर्भ मे 'छथि' कहनाइ हमरा उचित नहि बुझि पड़ैछ कारण आइ कलकत्ता मे हुनका मन रखनिहार केओ नहि।

दिन-काल त मन नहि, परंच एते मन अछि जे एक बेर ओ गाम गेल छला आ दू वा तीन दिनकर पश्चात् गामक किछु लोक के संग ल मधुबनी पहुंचल छलाह । एहि लोक मे एक हमहूं छलौं । ओइ समय स्कूले मे पढ़ैत छलौं । ओ कलकत्ता सं एगो पैध फेस्टून ल गेल छला जकर दुनू कात लाठी लगा एक कात हम ओ दोसर कात आन केओ धेने छल । ओइ मे पैघ पैघ आखर मे लिखल छलै - 'मिथिला राज्यक निर्माण हो', 'मैथिली राजभाषा हो' । मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रम मे प्राय: आर0के0 कालेजक प्रांगण मे सभा भेल छलैक । आ एही सभा मे हमरा मिथिला मैथिली सं विधिवत परिचय भेल छल ।

1963 मे मैट्रिक पास केलौं आ सालक शेष मे कलकत्ता आयल रही । अपन पितियौत शुकदेव टाकुरक संग । चाकरीक खोज मे । ओ ट्राम मे काज करैत छला । कंडक्टर छला । स्वभावत: हुनके संग एके डेरा मे रहैत छलौं । 89, सदर्न एभेन्यूक एगो छोट-छीन घर । सात आदमीक रैन बसेरा । बासोपट्टीक पं0 जयभद्र झा आ घनौजाक हुनक साढू एवं भाइ साहेबक ससुरक सम्पर्कक बेल्हबारेक पं0 उमाकान्त झा पंडिताइ करैत छला । कैथाहीक जटाधर बाबू ट्राम कंडक्टर छला । बेल्हबारक कमल नेशनल होमियो लेबोरेटरी मे काज करैत छल आ डेरा मे भानस-भातक व्यवस्था । एबज मे खोराकी आ घर भाड़ा सं ओ मुक्त छल । कहय नहि पड़त जे एहि संख्या मे योग-वियोग होइत रहैत छलै । गरमीक समय लोक बाहरक रेडियो दोकानक बरंडा पर सुतैत छल । ताल लगैत छल जरकाला मे । कमल भीतरक गैरेज मे जा कोनो गाड़ी मे सुति रहै छल । निम्न मध्यवित्त मैथिलक प्रवास जीवन । एहन छवि ताइ दिन कलकत्ताक कोनो अंचल मे सहजहि देखल पाओल जाइत छल ।

भाइ साहेब निन्तहु भोर चारि बजे उठितथि । पर पैखानाक बाद युनिफार्म पहिरि डेरा स बहरा जतइथि । डिपो सं जे पहिल गाड़ी बहार होइत ताहि मे ड्यूटी । एगारह बजे धरि आपस डेरा । स्नान, भोजन आ फेर कनेकाल आराम । चारि बजैत बजैत धोती कुर्त्ता पहिरि हाथ मे एगो छोटसन खाकी झोड़ा आ ताइ मे किछु 'मिथिला दर्शन' आ मिथिला संघक चंदाक रसीद बही । राति नक

बादे घर धुरितथि । जतबा दिन हम बेकार रही हुनका संग घूमल करी । ट्राम बस मे भाड़ा नञि लागनि । हमरो नञि लागय हुनका संग रहने मुदा बस मे कहियो काल लागि जाय । ओ एक एकटा मैथिलक अड्डा पर जाथि, मिथिला-मैथिलीक मादे बतियाथि, दर्शन बेचथि, संघक सदस्यता शुल्क लेथि । हमरा अचरज लागै जे हुनका कते लोक सं परिचय छनि आ लोक कते मानै छनि । दक्षिण कलकत्ताक भरिसक कोनो मैथिलडेरा एहन नहि जे हुनका सं छुटल हो, अपरिचित हो । हमरा संदेह अछि जे ऐहन परिचिति दोसर कोनो कर्मी वा नेताक छलनि वा छनि ।

शुकदेव ठाकुरक जन्म 1919 ई0 मे मधुबनी जिलाक बाबूपाली गामक एक साधारण परिवारक मे भेल छलनि । पिता हल्ली ठाकुर पंचैती-पतरा आ बैदाइ मे व्यस्त । सम्पतिक नामपर गोटे बिघा जथा पुरनाइयो पर पराभव । शिक्षाक नामपर किछु दिन करमौली पाठशाला मे शिशुबोध पढ़लनि । पांच भाइ, दूटा बहिन । पन्द्रह वर्षक अवस्था मे विवाह । जेठ सन्तान । परिवारक भरण-पोषणक चिन्ता कलकत्ता ल' अनलकनि । विभिन्न छोट पैध काज करैत ट्राम मे बहाली भेलनि त कने सुभ्यस्त भेलाह । 1952 क कोनो सभा मे बाबू साहेब चौधरीक भाषण सं प्रभावित भय संघक सदस्यता लेलनि ।

1953 मे प्रकाशित भेल 'मिथिला दर्शन' । चौधरी जी हिनका किछु 'दर्शन' बेचै लेल आ संघक सदस्य बनाबै लेल रसीद बही देलथिन । तीन चारि दिनक पश्चात् ई पचासटा दर्शन क सलियाना ग्राहक आ पचीसटा संघक सदस्य बना चौधरी जी के द एलथिन । चौधरी जी हिनक कार्यक्षमता देखि आश्चर्यित भेलाह आ देवरानायण बाबू लग एकर चर्च केलनि । पराते देवनारायण बाबू एहि असाध्य साधन केनिहार'क दर्शनार्थ डेरा दौड़ल एला । ई छला काज मे तें भेंट नहि भेलनि त पुर्जी लिखि भेंट करैक आग्रह केलथिन । बाद मे दूनू कें भेंटघाट परिचय - पात भेलनि जे आगां चलि स्वाभाविक आत्मीयता मे बदलि गेल ।

संघक विभाजन भेने स्वाभाविक छैक जे शक्ति बंटि गेलै । एकभाग जे आल इंडिया मैथिल संघक नाम सं जानल जाइत छल ताइ मे उदित बाबू, मदन बाबू, महावीर बाबू, पीताम्बर पाठक, राजनन्दन लाल दास, ब्रह्मनारायण झा आदि छलाह । अखिल भारतीय मिथिला संघ नामे पंजीकृत भाग मे प्रबोध बाबू, देवनारायण बाबू, नरेन्द्र झा, बाबू साहेब चौधरी, शुकदेव ठाकुर, बैद्यनाथ झा, जयनारायण मिश्र आदि छलाह । पश्चात् देवनारायण बाबू कलकत्ता छोड़ि देलनि । आ प्रबोध बाबू क्रमशः कतिआइत गेला । बैद्यनाथ बाबू के सेहो गाम घरय पड़लनि आ जयनारायण मिश्र संघ छोड़ि देलनि । बचि गेला संघक एक क्षत्र नेता बाबू साहेब चौधरी आ एकनिष्ट कार्यकर्त्ता शुकदेव ठाकुर । ई आजीवन कार्यकर्त्ता छला । नेता बनैक मिसियोभरि इच्छा आकांक्षा नहि ।

न सतायश की तमन्ना न सिले की परवा ।
गर नहीं है मेरे असआर मे मानी न सही ।

तें हिनक दिनचर्या मे कोनो अन्तर नहि । चाकरीक अतिरिक्त समय सदा-सर्वदा संघक सेवा मे समर्पित । कार्यकर्त्ता ई ओहन छलाह जे जे दक्षिण कलकत्ता शाखा पश्चात् अखिल

भारतीय मिथिला संघ नामे ख्यात भेल, हिनक कलकत्ता छोड़लाक बाद ताही दक्षिण कलकत्ता मे तकर नामो निसान नहि रहल । ई चौधरी जीक अनन्य वा कही अन्धभक्त छलाह । एहि सम्दर्भ मे दूटा घटना मन पड़ैछ । पहिल घटना 1972 क थिक । वार्षिक अधिवेशन आसन्न छलै तें अगिला सत्रक हेतु कार्यकारिणीक गठन लेल बैसार । प्रायःसभक इच्छा छलै जे मंत्री महोदय समय नहि द पबैत छथि आ हुनक सभ काज रामलोचन ठाकुर करैत छथि तें हुनके मंत्री बनाओल जाय । चौधरीजीक कथन छलनि जे रामलोचन जी जहिना काज करैत छथि तहिना करैत रहता । हुनका नामक कोनो लोभ नहि छनि । आ ओनहुना मंत्री आ संयुक्त मंत्री मे कोनो अन्तर नहि होइत छइ तें मंत्री महोदय के हटेबाक प्रयोजन नहि । चौधरीजीक एक मात्र समर्थक छलथिन शुकदेव ठाकुर । ओना भेलै उएह जे चौधरी जी चाहैत छलाह ।

दोसर घटना थिक 1973 क । मैथिली रंगमंचक पुनर्गठन ल कें हमरा आ चौधरी जी मे मतान्तर भ गेल आ-हम संघ छोड़ि देलौं । चौधरी जी सं मतान्तर भेलाक अर्थ भेल जे भाइ साहेब सं सेहो मतान्तर । ओना रहैत रही हम दुनू भाइ एकेठाम 33/5, डा0 देवदार रहमान रोड मे । 1969 मे कालेज मे नाम लिखाओल आ संदर्न एभेन्यूक डेरा पठन पाठनक उपयुक्त नहि छलै । से जेहो, बंगलाक विख्यात नाटक किरण मैत्रक 'बारह घंटा'क हम अनुवाद केने रही 'चारि पहर' नामे । संघक वार्षिक अधिवेशन छलै आ ताइ अवसर पर आन-आन कार्यक्रमक संग नाटक सेहो करबाक छलै । लोक जुटेबाक ई सर्वाधिक सहज आ प्रभावी साधन छल । परंच नाटकक अभाव रहिते छलै । अन्त मे इएह नाटक मंचस्थ भेलै किन्तु अनुवादक मे ककरो आनेक नाम द देल गेलै । ओइ मे हम एगो गीतक सेहो समावेश केने छी जाइ मे 'लोचन' भनिता छइ । रिहर्सल मे जखन एहि मादे चर्च भेलै त 'लोचन' के 'रागतरंगिनी'क रचनाकार बना देल गेलै । उल्लखेनीय जे हम, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आदि फराक रही तें ई मंचन 'मिथियात्रिक'क सहयोग सं भेल छलै । ई कहबाक भरिसक प्रयोजन नहि जे ई पोथी संघ के केना उपलब्ध भेलै । हं भाइ साहेब के एहि बेर संघक अध्यक्ष अबस्से बना देल गेलनि । ई भिन्न बात जे ओ एहि पदक आकांक्षी नहि छलाह । ओ त सुद्ध कार्यकर्त्ता छलाह आ सैह बनल रहय चाहैत छलाह । परंच कते दुखक बात थिक जे चौधरी जीक निर्देशन मे आ पश्चात् पीताम्बर पाठकक निदेर्शन मे जे संघक इतिहास लिखल गेल ताइ मे शुकदेव ठाकुरक चर्चो नदारद । राजमकल चौधरी 'स्वरगंधा'क परिशिष्ट - 3 मे मिथिला संघक विशिष्ट कार्यकर्त्ताक रूप मे हिनक उल्लेख केने छथि । 'आन्दोलन'क विष्णुदेव ठाकुर इएह छथि ।

शुकदेव ठाकुर मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ता छला ताइ मे संदेह नहि । परंच जं एतबही जे ओ एतबे छलाह त भूल होएत । वस्तुतः ओ नीक संगठक, विलक्षण अभिनेता आ कलकत्ता नाट्य मंचक प्रतिष्ठाता मे छलाह । कलकत्ता नाट्य मंचक यात्रा हुनके संग आरंभ होइछ 'पंडितजी'क अभिनय सं 1953 मे । ई निर्विवाद शुकदेव ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आ लक्ष्मी नारायण मिश्रक चेतना भावनाक परिणाम छल जे 30 दिसम्बर 1959 के 'मिथिला कला केन्द्र'क

गठन भेल । कहबाक प्रयोजन नहि जे उपरोक्त चारूव्यक्तिक अवदान कलकत्ताक नाट्यान्दोलन मे अविस्मरणीय अछि । कलाकेन्द्र मे मतान्तरक कारणे संघ सम्पर्कित सदस्य लोकनि 1966 जनवरी मे 'मैथिली रंगमंच' नामे फराक संस्था बनओलनि जाइ मे बाबू साहेब चौधरी, शुकदेव ठाकुर, मोहन चौधरी, श्रीकान्त मंडल आदि छलाह आ एकर पहिल नाटक 'सुखायल डारि: नव' पल्लव 4 सितम्बर 1966 कें मंचित भेल । कलकत्ताक परिप्रेक्ष्य मे हमर नाट्ययात्रा एही मंच सं आरंभ होइछ ।

1970 मे अ0 भा0 मिथिला संघक प्रयासे 'कैरव' जीक नेतृत्व मे गोड्डा मे दू दिनक आयोजन छलै, जाइ मे दूनू राति नाट्य मंचन सेहो हेबाक छलै । प्रोग्राम चौधरी जी रंगमंचक अध्यक्ष सीताराम चौधरी सं बिनु विचारने प्राय: ठीक केने छला । सीताराम चौधरी, श्रीकान्त मंडल, मोहन चौधरी आदि मंचक कोष वा खर्च लेल किछु पाइक माङ केलथिन आ चौधरी जी द्वारा अस्वीकार केलाक कारणे फेर सदस्य लोकनि मे विभाजन । अन्तत: संघ अपन सदस्य लोकनिक सहयोगे गोड्डा मे एक दिन कुहेस ओ दोसर दिन 'चोर' नाटक मंचित केलक । स्वाभाविके भाइ साहेबक संगहि हम रही तें गोड्डा गेल रही । परिणामत: मैथिली रंगमंचक गतिविधि बन्न भ गेलै कारण बांकी सदस्य लोकनि मे जनसपर्कक अभाव । पश्चात् सीताराम बाबू रंगमंचे नहि मैथिल जगत सं कात चल गेलाह आ श्रीकान्त मिथियात्रिक क सम्पर्क मे । 1973 मे एही मैथिली रंगमंचक पुनगर्ठन ल कें जाइ मे श्रीकान्तक संगहि नरेन्द्र झा, एफ0सी0ए0 आ हुनक सहधर्मिणी पन्नाझाक भूमिका महत्वपूर्ण छलानि, हमरा चौधरी जी सं मतान्तर । एहि मतान्तरक फल भेल जे हमरा लोकनिक डेरा फराक भ गेल आ प्राय: गपो शप बन्न आ फेर जखवन दूनू भाइक सम्पर्क भेल त तकरो कारण चौधरी जी आ मिथिला संघे । एकदिन हठात् भाइ साहेब पहुंचला आ कहलनि जे चौधरी जी भेंट करयू चाहै छथि । हुनक इच्छा छनि जे 'मिथिला दर्शन' क संपादनक भार हम उठाबी । स्वभावत: पश्चात् मिथिला संघक नाट्य मंचन मे सेहो हमर उपस्थिति देखल जा सकैछ ।

शुकदेव ठाकुर मैथिली रंगमंचक एक विरल - विलक्षण कलाकार छलाह जनिका बाद द क कलकत्ता मैथिली रंगमंचक इतिहास नहि लिखल जा सकैछ । ई पंडितजी, छीक, उगना, प्रेमक रोग, जमीन, सलोमा, चिन्नीक लड्डू, चन्द्रगुप्त (चाणक्य), निष्कलंक, अभिनेत्री, अरुणोदय, नायकक नाम जीवन, हाथीक दाँत, चारि पहर, चोर, पियासल धरती : उताहुल नोर, कांचन रंग, सुखायल डारि : नव पल्लव, कुहेस, आगन्तुक, बेमातर आदि नाटक मे अभिनय केने छथि आ कतौ असफल नहि । ओना चिन्नीक लड्डुक 'बटुआ दास', चोरक 'चोर', बेमातरक 'नारद', कुहेसक 'सुवंश' आ सुखालय डारि : नव पल्लवक 'आदित्य नाथ' क अभिनय विशेष उल्लेखनीय अछि ।

हम जे मैथिली संस्था आ विशेष कें 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' आ 'मैथिली रंगमंचक' सम्पर्क मे एलौंतकर सम्पूर्ण श्रेय हिनके छनि । ओनहुना कलकत्ता त हम हिनके संग आयल छलौं आ एहि दृष्टिजे विचार कएनें एवं कलकत्ता वा समग्र मैथिली आन्दोलन मे हमर थोड़बो योगदान अवदान अछि त तकरो श्रेय हिनके छनि । मन पड़ैछ 'मिथिला भूमि'क 1973 क कोनो अंक मे

'तोता मैना संवाद – अथ कथा इजोतक खाम्ह प्रसंग' आ तकर बादक कोनो अंक मे 'कलकतिया देखलक गाम' शीर्षक सं हास्य व्यंग्य लिखने रही जे भाइ साहेब आ चौधरीजी सं मतांतरक फसिल थिक । कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि सं पहिने हम हास्य-व्यंग्य नहि लिखने छलौं । स्वभावत: एकरो श्रेय अप्रत्यक्षरूपे भाइ साहैब के छनि ।

लगभग बीस बर्ख भेल होएत भाइ साहेब चाकरी सं अवकाश ल गाम चल गेला । अपन गाम । जाइ गाम सं मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रम मे हमरा लोकनि के प्रेरित प्रोत्साहित कए ओ मधुबनी ल गेल छला । जाइ गाम मे ओ 'जनता पुस्तकालय'क स्थापना केने छला आ कलकत्ता सं पोथी पत्रिका ल जा सजओने छला । जाइ गाम मे हिनक प्रयासे 1974 मे विद्यापति स्मृति दिवस हमरा लोकनि आयोजित केने छलौं । जाइ गाम मे विधानसभाक उम्मीदवार नर्मदेश्वर सिंह 'आजाद' जे ओहि क्षेत्रक नवघरिया छलाह, के ई मैथिली प्रेमक पाठ पढ़ओन छला आ परिणास्वरूप आजाद जी विधानसभा मे मैथिली मे शपथ लेबा ले ठाढ़ भेल छला । जाइ गाम मे चुनावी प्रचार हिन्दी मे करैक लेल ई सूरज नारायण सिंहक जीप घेरने छला आ हुनका मैथिली मे बजबाक किंवा चुपचाप चल जेबाक आदेश देने छला आ सूरज बाबू सननेता जीप सं उतरि भूलक हेतु क्षमा याचना केने छलनि ।

गामक नाम छलै बाबूपाली । छलै नहि, आइयो छइ । कहांदन एही गाम मे आविर्भूत भेल छलाह कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर । मुदा आइ ई गाम ओ गाम कहां अछि ! आइ सं पचीस तीस बर्ख पूर्वोक गाम आइ नहि अछि । एकर सामाजिक संरचना-सरोकर मे नकारात्मक परिवर्तन एकरा अनचिन्हार-अनभोआर बना देने अछि । कलकत्ता वा कही मैथिली जगत त हुनका पहिनहि बिसरा देने छल । आइकालि विभिन्न संस्था मंगनू ढोंढ़ाइ के सम्मानित करैत अछि । ओना इहो सम्मान जे सौजनियां भोजे सन थिक ताइ मे संदेह नहि । अपन कार्यकर्ता के नहि चिन्हब आ ओकारा उचित आदर स्थान नहि देबे हमरा जनैत मैथिली-आन्दोलनक अधोगितक कारण थिक । महेन्द्र नारायण झा सन एकनिष्ट मैथिली सेवी कालीघाट मंदिर प्रांगण मे प्राण त्यागि देलनि, ककरो पता ने चललै । परंच शुकदेव बाबू के कोनो उपराग नहि, कोनो राग-विराग नहि । मन पड़ैत छथि इकबाल -

तेरी बन्दापरवरी से मेरे दिन गुजर रहे हैं
न गिला है दोस्तों का न शिकायते जमाना

किन्तु मिथिला-मैथिली जगतक सूचना समाचारक आग्रह मे मिसियो भरि कमी नहि । गाम जाएब त नव पोथी-पत्रक खोज करबे करता जे हम अरबधि कें हुनका लेल लइए जाइ छी । कोकिल मंचक मंत्री नवोनारायण मिश्र स्मारिका पठा देने छलथिन तकर कृतज्ञताक स्पष्ट छाप चेहरा पर । प्रबोध बाबू, देवनारायण बाबू, बाबू साहेब चौधरी, राजकमल चौधरीक संग बिताओल समयक विशाल संस्मरण, डा0 लक्ष्मण झा, हारिमोहम बाबू, यात्री जी, मणिपद्मक व्यक्तित्व कृतित्वक चर्च बुझि पड़ैछ जेना कलकत्ता मैथिली-आन्दोलन आ रंगमंचक जीवित इतिहास ।

7 - 8 जून के खुरौनाक साहित्य गोष्ठी मे सम्मिलित होइ लेल गेल रही तें 9 कें ओतै सं गाम

चल गेलौं । भाइ साहेब आमक गाछी मे छला । सांझ खन भेंट भेलाह । वयसक बोझ आ स्वजनक वियोग जेना देह मन कें तोड़ि देने होइन । पत्नी चाकरी कालहि मे छोड़ि चल गेल छलथिन । तीन-तीनटा बेटाक अरथी उठबैत - उठबैत कमजोर भ जाएब स्वाभाविके । तें आब लाठीक सहारा लैत छथि । नाति-परनातिक स्नेह आवेश मे, बिगतक स्मृति आ आगतक आश-विश्वास मे जीवि रहल छथि ।

गाम सं विदा होइत काल भाइ साहेब भेटला । गोड़ लगिलयानि आ रिक्सापर बैसि गेलौं । बीच भरि बाट प्राय: इएह सोचैत रहलौं जे आब फेर कहिया गाम आएब आ फेर भाइ साहेब भेटता.... । बाबाक शब्द मे कहबाक मन होइछ -

जो नही हो सके पूर्णकाम
मै उनको करता हूं प्रणाम ।

(2003)